Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi
Ranchi ● Wednesday, 13 December 2023 ● Year : 01 ● Issue : 322 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

संयम का अर्थ घुट-घुटकर जीना नहीं है, स्वस्थ पवन की तरह बहना है।

रांगेय राघव

रणबीर के बाद कार्तिक की हीरोइन बनेंगी...

SHARE

सेंसेक्स	:	69,551.03
निफ्टी	:	20,906.40

SARAFA

सोना	:	5,835
चांदी	:	77.07

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

डेली मार्केट फल मंडी में लगी भीषण आग

RANCHI : महात्मा गांधी मार्ग यानी मेन रोड स्थित डेली मार्केट फल में मंगलवार की रात भीषण आग लग गई। इस घटना में कई दुकान आग की चपेट में आ गए। आग लगने के बाद मार्केट में अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने नल, बाल्टी और बर्तन से पानी भरकर आग बुझाने का प्रयास किया, हालांकि आग पर काबू नहीं पाया जा सका। फिर इसकी सूचना अग्निशमन विभाग को दी गई, जिसके बाद अग्निशमन विभाग का वाहन मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाई। बताया जा रहा है कि केरोसिन के संपर्क में आने के बाद आग और तेजी से आग फैल गई। अगलगी का कारण कुछ लोग शॉर्ट सर्किट बता रहे हैं। हालांकि, अब तक स्पष्ट कारणों का पता नहीं चल पाया है।

भारत के विकास में लाभकारी है 5 डी : राष्ट्रपति

LUKHNOW : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि भारत के पास 5 डी (डिमांड, डेमोग्राफी, डेमोक्रेसी, डिजायर व ड्रीम) है, जो विकास की यात्रा में लाभकारी है। हमारी अर्थव्यवस्था एक दशक पहले 11वें पायदान पर थी। आज पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और 2030 तक यह तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर अग्रसर है। भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है। यहां 55 फीसदी से अधिक आबादी 25 वर्ष से कम उमर की है। भारत प्रगतिशील व लोकतांत्रिक राष्ट्र है। हमारा सपना है कि 2047 तक भारत विकसित राष्ट्र बने। आप भी न केवल इस विजन के भागीदार बनें, बल्कि इसे पूरा करने के लिए सर्वस्व लगा दें। हमें प्रतिज्ञा करनी होगी जब भारत आजादी के 100 वर्ष पूरा कर रहा हो, तब आने वाली पीढ़ियां ऐसे भारत में जन्म लें, जो संपन्न-समृद्ध हो और जहां विकास समावेशित हो।

पीएम के बारे में आपत्तिजनक लेख लिखने पर संजय राऊत पर देशद्रोह का मामला दर्ज

MUMBAI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में आपत्तिजनक लेख लिखने पर शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राऊत के विरुद्ध देशद्रोह का मामला दर्ज किया गया है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के यवतमाल जिला संयोजक नितीन भुतडा ने उमरखेड़ पुलिस स्टेशन में सोमवार को देर रात यह मामला दर्ज करवाया है। नितीन भूतड़ा ने मंगलवार को मीडिया को बताया कि संजय राऊत ने शिवसेना के मुखपत्र में प्रधानमंत्री मोदी को बदनाम करने संबंधी लेख लिखा है। इस लेख से समाज की भावनाएं आहत हो रही हैं।

CBSE 10TH-12TH EXAM WILL BE HELD FROM 15TH FEBRUARY

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने जारी की डेटशीट, आधिकारिक वेबसाइट पर देख सकते पूरा शेड्यूल

AGENCY NEW DELHI : सीबीएसई (केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड) ने हाईस्कूल और इंटरमीडिएट वार्षिक परीक्षा कार्यक्रम जारी कर दिया है। परीक्षा 15 फरवरी से होगी। बता दें, कक्षा 10वीं की परीक्षाएं 15 फरवरी से 13 मार्च तक और कक्षा 12वीं की परीक्षाएं 15 फरवरी से 2 अप्रैल तक आयोजित की जाएगी। छात्र काफी लंबे समय से परीक्षा की डेटशीट का इंतजार कर रहे थे। जो छात्र परीक्षा में शामिल होने जा रहे हैं, वह परीक्षा का पूरा शेड्यूल आधिकारिक वेबसाइट पर देख सकते हैं। बोर्ड ने बताया कि डेटशीट को बनाते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि दो विषयों के बीच में पर्याप्त अंतर रखा गया है। 12वीं की डेटशीट बनाते समय दूसरी प्रतियोगी परीक्षाओं की तारीख को भी ध्यान में रखा गया है। इसके अलावा डेटशीट को इतना पहले जारी करने का मकसद छात्रों को तैयारी का पर्याप्त समय देना है।

सैंपल पेपर ऐसे करें डाउनलोड

छात्र सैंपल पेपर की जांच और अभ्यास करने के लिए सीबीएसई की शैक्षणिक वेबसाइट cbseacademic.ac.in पर जा कर डाउनलोड कर सकते हैं।

10वीं की डेटशीट

जारी टाइम टेबल के अनुसार सीबीएसई 10वीं की परीक्षाएं15 फरवरी 2024 से 16, 17, 19, 20, 21, 23, 24, 26, 28 फरवरी 2024 और 2, 4, 5, 7, 11 और 13 मार्च 2024 तक होंगी।

12वीं की डेटशीट

12वीं की बोर्ड परीक्षाएं 15, 16, 17, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 28, 29 फरवरी 2024 और 1, 4, 5, 6, 7, 9 मार्च 2024 और 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18, 19, 20, 22, 23, 26, 27, 28, 30, 1 और 2 अप्रैल 2024 तक चलेंगी।

दो पालियों में होंगी परीक्षाएं

सीबीएसई द्वारा जारी डेटशीट के मुताबिक परीक्षाएं दो पालियों में होंगी। पहली परीक्षा सुबह 10.30 बजे से शुरू होगी जो दोपहर 1.30 बजे तक चलेगी। दूसरी परीक्षा सुबह 10.30 से 12.30 बजे तक चलेगी। परीक्षाएं 56 दिन तक चलेंगी।

तीनों क्रिमिनल बिल लोस से वापस, शाह ने नए विधेयक पेश किए

NEW DELHI : संसद के शीतकालीन सत्र का मंगलवार को सातवां दिन था। गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को तीनों क्रिमिनल बिल को वापस ले लिया। इनकी जगह तीन नए क्रिमिनल बिल लोकसभा में पेश किए। शाह ने कहा कि संसदीय पैनल ने विधेयकों में सुधार की सिफारिश की थी। सरकार ने आधिकारिक संशोधन लाने के बजाय बदलावों को शामिल करते हुए नए विधेयक लाने का फैसला किया। शाह ने बताया कि विधेयकों पर गुरुवार 14 दिसंबर को होगी और शुक्रवार 15 दिसंब को वोटिंग होगी। शाह ने बताया कि मुख्य रूप से 5 खंडों में बदलाव किया गया है। ज्यादातर सुधार व्याकरण और भाषा से जुड़े हैं। स्पीकर ओम बिड़ला ने कहा कि तीनों विधेयकों पर चर्चा के लिए कुल 12 घंटे दिए गए हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्तों से नियुक्ति से जुड़ा बिल राज्यसभा में पेश कर दिया गया।

केंद्र बकाया देती तो गैस सिलेंडर 500 में व पेंशन 2500 रुपये देता : हेमंत

सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में दुमका पहुंचे सीएम सोरेन

1035.10 करोड़ रुपये की 5358 योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास

53.23 करोड़ रुपये की परिसंपत्तियों का सीएम ने किया वितरण

PHOTON NEWS DUMKA : दुमका की गादी कोरैया पंचायत के बड़ा ढाका मैदान में आयोजित आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि केंद्र सरकार 1 लाख 36 हजार करोड़ का बकाया दे देती, तो गैस सिलेंडर 1200 का नहीं 500 में उपलब्ध कराता। पेंशन 1000 नहीं, 2500 होती। कोई ऐसा घर नहीं, जहां सरकार की योजना नहीं पहुंची है। पहले एक परिवार के सिर्फ 2 बच्चियों को ही सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ दिया जाता था। अब सभी बच्चियों को सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ मिलेगा। गुरुजी क्रेडिट कार्ड राज्य सरकार द्वारा दी जा रही है, जिससे बच्चों को पढ़ने के लिए राशि दी जाएगी। आप सभी सरकार की योजना का लाभ लें। दुमका जिले में 650 करोड़ की लागत से 800 किमी ग्रामीण सड़क की स्वीकृति दी गयी है, जिससे गांव की सड़कें बेहतर होंगी। पथ निर्माण विभाग द्वारा लगभग 1000 करोड़ की लागत से 650 किमी सड़क का निर्माण की स्वीकृति दी गयी है। 20 लाख हरा राशन कार्ड देने का कार्य राज्य सरकार ने किया है। आने वाले दिनों में उस राशन कार्ड में 1 किलो दाल भी मुफ्त दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 1035.10 करोड़ रुपये की 5358 योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया। इसमें 835.71 करोड रुपये की 5308 योजनाओं की नींव रखी गई, जबकि 199.38 करोड रुपये की 50 योजनाओं का उद्घाटन संपन्न हुआ। विभिन्न योजनाओं के 34077 लाभुकों के बीच 53 करोड़, 23 लाख 10 हजार रुपये की परिसंपत्तियों बांटी गईं।

लोगों की आर्थिक तंगी को नहीं बनने देंगे बाधा

सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि कोविड-19 के दौरान हमारे राज्य के फंसे लोगों को सड़क मार्ग, रेल तथा हवाई मार्ग से अपने राज्य, घर तक पहुचाने का कार्य किया। हर आदमी की जरूरत रोटी, कपड़ा और मकान देने का कार्य राज्य सरकार कर रही है। हर गरीब को आवास राज्य सरकार उपलब्ध कराएगी, ये मेरा वादा है। हेमंत सोरेन ने कहा कि राज्य के गरीब बच्चों की पढ़ाई में आर्थिक तंगी अब कोई बाधा नहीं बनेगी। बच्चियां अब बोझ नहीं बनेगी। बच्चियां बेहतर तरीके से पढ़ें, इसके लिए उन्हें सावित्रीबाई किशोरी फुले सावित्री योजना का लाभ दिया जा रहा है। इस योजना के तहत अब घर में जितनी भी बच्चियां होंगी, उनको इसका लाभ मिलेगा। अब वे डॉक्टर-इंजीनियर और अफसर बनेंगी। इसमें पैसे की तंगी बाधा नहीं बनेगी, क्योंकि उनकी पढ़ाई का पूरा खर्च सरकार उठाएगी। यहां के बच्चों को निजी विद्यालय से भी बेहतर शिक्षा देने के लिए स्कूल ऑफ एक्सीलेंस खोले गए हैं।

ईडी ऑफिस से गुजर गया मुख्यमंत्री का काफिला, चिट्ठी लेकर आया डाकिया

हेमंत ने पूछा- आरोपी की तरह बुला रहे हैं या जांच में सहयोग के लिए

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन छठे समन पर भी ईडी ऑफिस नहीं गए। मुख्यमंत्री का काफिला दोपहर में सीएम आवास से निकलकर ईडी ऑफिस की ओर जरूर बढ़ा था, लेकिन सीएम की गाड़ी ईडी ऑफिस के सामने नहीं रुकी। जैसे ही सीएम हेमंत सोरेन अपने आवास से निकले, ईडी ऑफिस के बाहर पुलिस अलर्ट मोड पर आ गई, लेकिन सीएम का काफिली ईडी अधिकारियों के सामने से गुजर गया। ईडी ने उन्हें समन भेज कर पूछताछ के लिए 12 दिसंबर को दिन के 11:00 बजे रांची स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में हाजिर होने का निर्देश दिया था, लेकिन इस बार भी सीएम ईडी ऑफिस नहीं पहुंचे। मुख्यमंत्री के ईडी ऑफिस के सामने से गुजरने के बाद एक डाकिया सीएम आवास से चिट्ठी लेकर पहुंचा है। जानकारी के मुताबिक, सीएम की तरफ से ईडी को जो पत्र भेजा गया है, उसमें कहा गया है कि ईडी का समन स्पष्ट नहीं है। समन में यह स्पष्ट नहीं है कि उन्हें आरोपी की तरह बुलाया जा रहा है या फिर जांच में सहयोग के लिए। इसके साथ ही सीएम ने अपने पत्र में एजेंसी (ईडी) से यह आग्रह है कि ईडी उनके खिलाफ फिलहाल कोई कार्रवाई न की जाए।

ईडी ऑफिस के सामने से गुजरता सीएम का काफिला।

सीएम को अब तक कितने समन, और कब-कब

पहला समन	: 8 अगस्त को भेजा गया, 14 अगस्त को हाजिर होने का था निर्देश
दूसरा समन	: 19 अगस्त को भेजा गया, 24 अगस्त को हाजिर होने का था निर्देश
तीसरा समन	: 1 सितंबर को भेजा गया, 9 सितंबर को हाजिर होने का था निर्देश
चौथा समन	: 17 सितंबर को भेजा गया, 23 सितंबर को हाजिर होने का था निर्देश
पांचवा समन	: 26 सितंबर को भेजा गया, 4 अक्टूबर को हाजिर होने का था निर्देश
छठा समन	: 11 दिसंबर को भेजा गया, 12 दिसंबर को हाजिर होने का था निर्देश

आचार संहिता उल्लंघन करने का मामला

हेमंत सोरेन को अगली सुनवाई तक हाईकोर्ट से राहत बरकरार

RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की ओर से सरायकेला खरसांवा के आदित्यपुर थाना में दर्ज प्राथमिकी (418/2014) को चुनौती देने वाले क्रिमिनल रिट की सुनवाई मंगलवार को हुई। अब 19 दिसंबर को मामले की सुनवाई होगी। मामले में कोर्ट का अंतरिम आदेश जारी रहेगी। यह मामला न्यायाधीश अनिल कुमार चौधरी की कोर्ट में सूचीबद्ध था। मामले में पूर्व में कोर्ट ने हेमंत सोरेन के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक लगायी है। हेमंत सोरेन की याचिका में कहा गया है कि वर्ष 2014 में चुनाव के दौरान वे पार्टी के प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार करने गये थे। उन्होंने आचार संहिता का उल्लंघन नहीं किया था। उस दौरान उन पर आचार संहिता उल्लंघन का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज की गई थी। इस मामले की सुनवाई पश्चिम सिंहभूम की निचली अदालत में चल रही है। मुख्यमंत्री ने अदालत में चल रही कार्रवाई पर रोक लगाने व उनके खिलाफ दर्ज प्राथमिकी को निरस्त करने की मांग की है।

गैंगरेप के तीन दोषियों को 20-20 साल की कैद

CRIME REPORTER RANCHI : रांची सिविल कोर्ट ने मंगलवार को 15 वर्षीय नाबालिग छात्रा को अगवा कर सामूहिक दुष्कर्म करने के तीनों दोषियों को 20-20 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। रांची पॉक्सो की विशेष अदालत ने सोहन कुमार, इरशाद अंसारी और कुदुस अंसारी को सात दिसंबर को दोषी करार दिया था। अदालत ने दोषियों को 20-20 हजार का जुमार्ना भी लगाया है। जुमार्ने की राशि पीड़िता को दी जाएगी। दोषी सोहन कुमार नाबालिग छात्रा से एकतरफा प्यार करता था। जनवरी 2022 में पीड़िता जब अपनी दो सहालियों संग मॉर्निंग वॉक पर निकली थी, तभी एक कार में सवार तीनों दोषियों ने पीड़िता को जोर-जबरदस्ती से कार में बैठकर अपहरण कर लिया और सुनसान जगह पर ले जाकर सभी ने बारी-बारी से दुष्कर्म किया। एक आरोपी का मोबाइल गिर जाने पर गाड़ी रोकी गई। तभी पीड़िता आरोपितों के चुंगल से बचकर भाग निकली और घटना की जानकारी अपने परिजनों को दी, जिसके बाद चान्हो थाना में प्राथमिक की दर्ज कराई गई।

पुरुष अधिकारियों का दुष्कर्म पीड़िता से पूछताछ अस्वीकार्य

KOLKATA : कलकत्ता हाइकोर्ट की एकल न्यायाधीश पीठ ने मंगलवार को कहा कि दुष्कर्म पीड़िता और वह भी नाबालिग से पुरुष पुलिस अधिकारियों द्वारा पूछताछ करना बिल्कुल अस्वीकार्य है। न्यायमूर्ति जय सेनगुप्ता की पीठ ने पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले के बागनान में एक नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म से संबंधित मामले की सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की। मंगलवार को मामले की सुनवाई के दौरान न्यायमूर्ति जय सेनगुप्ता ने कहा कि किसी पुरुष जांच अधिकारी या प्रभारी अधिकारी के सामने दुष्कर्म पीड़िता का बयान लेना न केवल अस्वीकार्य है बल्कि नियमों के विरुद्ध भी है।

सांसद के ठिकानों पर आईटी की छापेमारी समाप्त

बरामद रुपयों का आंकड़ा 500 करोड़ के पार, कैश के अलावा 17 किलोग्राम आभूषण भी मिले

CRIME REPORTER RANCHI : कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य धीरज साहू से संबंधित ठिकानों पर आयकर (आईटी) विभाग की छापेमारी मंगलवार को समाप्त हो गई। इसके बाद आयकर के अधिकारी और सीआईएसएफ कर्मी चले गए। धीरज साहू से संबंधित ठिकानों पर छह दिसंबर से लेकर 11 दिसंबर तक छह दिनों तक आईटी की छापेमारी चली। इससे पहले सोमवार तक आयकर विभाग की टीम ओडिशा के बलांगीर स्थित सूदपाड़ा में बलदेव साहू इंफ्रा प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के परिसर में छापेमारी कर रही थी। यहां जब्त किए गए पैसे को आयकर विभाग के बलांगीर एसबीआई शाखा में जमा कराया गया है। आईटी की टीम ने छह दिसंबर को धीरज साहू से संबंधित कई ठिकानों पर छापेमारी कर 30 आलमारियों में भरे नकदी बरामद किये थे। इस दिन नोटों की गिनती जारी थी। बताया गया है कि अब तक की गिनती में आंकड़ा 500 करोड़ रुपये को पार कर गया है। नोटों के अलावा 17 किलोग्राम आभूषण भी मिले हैं। हालांकि, इसकी अभी आधिकारिक पुष्टि आयकर विभाग की ओर से नहीं की गयी है।

70 साल से कांग्रेस कर रही चोरी : पीएम

राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों पर छह दिनों तक आयकर विभाग की छापेमारी चली। पीएम नरेंद्र मोदी ने इसे लेकर वेब सीरीज 'मनी हाइस्ट' का जिक्र करते हुए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट किया है। पीएम मोदी ने लिखा- भारत में 'मनी हाइस्ट' फिक्शन की जरूरत किसे है। कांग्रेस की 70 साल से चल रही चोरी लेजेंडरी रही है और गिनती अब भी जारी है। पीएम मोदी ने पर इस पोस्ट के साथ भाजपा द्वारा जारी किया गया एक वीडियो भी शेयर किया है, जो 'मनी हाइस्ट' वेब सीरीज से लेकर एडिट किया हुआ है। वीडियो में धीरज साहू के साथ राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की तस्वीरें हैं।

दीया सिंह और प्रेम चंद बैरवा डिप्टी सीएम, देवनानी होंगे स्पीकर, पहली बार के विधायक हैं शर्मा

भजनलाल शर्मा होंगे राजस्थान के नए मुख्यमंत्री

AGENCY JAIPUR : राजस्थान के नए मुख्यमंत्री का ऐलान हो गया है। सांगानेर से विधायक भजनलाल शर्मा को विधायक दल का नेता चुना गया है। प्रदेश कार्यालय में हुई विधायक दल की बैठक में भाजपा हाईकमान द्वारा तय किए गए नाम का ऐलान किया गया और उस नाम पर सभी की सहमति बन गई। सूत्रों के मुताबिक नए मुख्यमंत्री के नाम का प्रस्ताव वसुंधरा राजे ने ही रखा। भजनलाल शर्मा संघ पृष्ठभूमि से आते हैं। वे मूलतः भरतपुर के रहने वाले हैं। वे प्रदेश महामंत्री के पद पर भी थे। विधायकों की ग्रुप फोटो में भजनलाल शर्मा चौथी लाइन में बैठे थे। 15 दिसंबर को नई सरकार का शपथ ग्रहण हो सकता है। इसके साथ ही दीया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा उप मुख्यमंत्री होंगे। वहीं, अजमेर उत्तर से विधायक वासुदेव देवनानी विधानसभा स्पीकर होंगे। भजनलाल शर्मा जयपुर की सांगानेर सीट से विधायक हैं। बैठक से पहले राजनाथ सिंह ने भाजपा के सभी वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात की। जानकारी के मुताबिक राजनाथ सिंह ने वसुंधरा राजे को बैठक से पहले ही नए मुख्यमंत्री का नाम प्रस्तावित करने के लिए मना लिया था। भजनलाल शर्मा के नाम का ऐलान करने के बाद भाजपा नेता सरकार बनाने का दावा पेश करने के लिए राजभवन पहुंचे।

शर्मा बोले- सबके सहयोग से विकास करेंगे

विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद भजनलाल शर्मा ने कहा कि भाजपा के सभी नेताओं के साथ मिलकर राजस्थान का सर्वांगीण विकास करेंगे। भजनलाल शर्मा को सांगानेर से विधायक अशोक लाहोटी का टिकट काटकर उतारा गया था। भजन लाल शर्मा पहली बार चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे हैं। सांगानेर से उन्होंने मौजूदा चुनाव में कांग्रेस के पुष्पेंद्र भारद्वाज को 48081 वोटों के अंतर से हराया। उन्हें कुल 145162 मिले। राजस्थान में मुख्यमंत्री की रेस में वसुंधरा राजे, सीपी जोशी, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, बाबा बालकनाथ, दीया कुमारी, डॉ किरोड़ी मीणा और ओम माथुर सहित कई नेताओं के नाम सबसे आगे चल रहे थे, लेकिन इन सभी को पीछे छोड़ भजन लाल को बीजेपी ने मुख्यमंत्री के लिए नामित कर एक बार फिर से चौंकाया है।

सिटीजनशिप एक्ट की धारा 6ए की वैधता पर फैसला सुरक्षित

NEW DELHI : सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को असम में अवैध प्रवासियों से जुड़ी सिटीजनशिप एक्ट की धारा 6ए की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली 17 याचिकाओं पर फैसला सुरक्षित रख लिया। इससे पहले केंद्र सरकार ने कोर्ट में हलफनामा दाखिल कर बताया कि विदेशी नागरिक भारत में चोरी-छिपे घुसते हैं। इसलिए देश में अवैध प्रवासियों का सटीक डेटा कलेक्ट कर पाना संभव नहीं है। सुप्रीम कोर्ट में पांच जजों की बेंच ने फैसला सुरक्षित रखने से पहले चार दिनों तक अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी, सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता, सीनियर एडवोकेट श्याम दीवान और कपिल सिब्बल की दलीलें सुनीं। इस बेंच में चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ के अलावा जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस एमएम सुंदरेश, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा शामिल थे।

केरल गवर्नर का दावा- मुझे मारने लोग भेज रहे सीएम

मुझे शारीरिक रूप से पहुंचाना चाहते है नुकसान

THIRUVANANTHAPURAM : केरल गवर्नर आरिफ मोहम्मद खान ने मंगलवार को दावा किया कि राज्य के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन उन्हें शारीरिक तौर पर नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए वे साजिश रच रहे हैं और लोगों को भेज रहे हैं। आरिफ मोहम्मद ने पुलिस पर भी राज्य सरकार की असंवैधानिक गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया। दरअसल, सोमवार को आरिफ मोहम्मद खान दिल्ली जाने के लिए तिरुवनंतपुरम एयरपोर्ट के लिए निकले थे। एयरपोर्ट के रास्ते में ही उनके काफिले पर हमला हुआ। इसी हमले को लेकर गवर्नर ने कहा कि आज राजधानी की सड़कों पर गुंडों का राज हो गया है। आरिफ मोहम्मद ने सोमवार शाम को बताया, 'जब मैं एयरपोर्ट के लिए जा रहा था, तो वे लोग मेरी कार के सामने आए। उन्होंने दोनों तरफ से मेरी कार को टक्कर मारी। मैं नीचे उतर गया। क्या पुलिस ऐसे किसी को मुख्यमंत्री की कार के पास आने देती?'

BRIEF NEWS

पेड़ से टकरायी कार, एक की मौत, पांच घायल

KHUNTI : तोरपा-कर्रा रोड पर रायसेमला गांव के पास मंगलवार को सवारियों से भरी इको स्पोर्ट्स कार पेड़ से टकरा गई। इससे कार में सवार सुरेंद्र ठाकुर (50) की मौत घटनास्थल पर ही हो गई, जबकि अन्य पांच अन्य लोग मामूली रूप से चोटिल हो गये। जानकारी के अनुसार ओडिशा के राउरकेला निवासी सुरेंद्र ठाकुर अपने परिवार और रिश्तेदारों के साथ हजारीबाग जिले के विष्णुगढ़ से तिलक समारोह में भाग लेकर वापस राउरकेला लौट रहे थे। रायसेमला गांव के पास सड़क पर आये एक वृद्ध को बचाने के चक्कर में कार एक पेड़ से टकरा गई। इससे सुरेंद्र ठाकुर की मौत हो गई, जबकि सुरेद्र की पत्नी रायवती देवी, चालक अरूण कच्छप, राहुल ठाकुर, अज्ञशाठाकुर और रूपा ठाकुर को हल्की चोट लगी। सीाी घायलों का तोरपा के रेफरल अस्पताल में इलाज कराया गया। तोरपा थाना की पुलिस दुर्घटनाग्रस्त वाहन को थाना ले आयी और शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल खूंटी भेज दिया।

कांग्रेस के सभी प्रकोष्ठ की जिला और प्रखंड कमेटी के सत्यापन को लेकर बैठक

KHUNTI : कांग्रेस के खूंटी जिला अध्यक्ष रवि मिश्रा की अध्यक्षता में और पूर्व विधायक कालीचरण मुंडा विधानसभा प्रभारी अमरेन्द्र सिंह की उपस्थिति में मंगलवार को कांग्रेस के सभी प्रकोष्ठ की जिला और प्रखंड कमेटी के सत्यापन को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया गया कि सभी प्रकोष्ठ का बूथ स्तर तक कमेटी बनाकर प्रकोष्ठों को मजबूती प्रदान करें। मौके पर आदिवासी कांग्रेस, सेवा दल कांग्रेस, अल्पसंख्यक कांग्रेस, यूथ कांग्रेस,के जिला और प्रखंड कमेटी की बैठक भी पूर्व विधायक कालीचरण मुंडा के आवासीय कार्यालय में आयोजित की गई। बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश सचिव पीटर मुंडू, नईमुद्दीन खान, पूर्व अध्यक्ष राम कृष्णा चौधरी, पौलुस पूर्ति, सुषमा भेंगरा आदि उपस्थित थे।

यूट्यूबर्स को सदस्यता नहीं देगा खूंटी प्रेस क्लब, बैठक में लिया गया निर्णय

KHUNTI : खूंटी क्लब के प्रांगण में मंगलवार को जिले के पत्रकारों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के दो पत्रकारों पर प्रशासन द्वारा दर्ज प्राथमिकी की चर्चा की गई और निर्णय लिया गया कि मामले को लेकर फिर से उपायुक्त से मिलकर निष्पक्ष जांच की मांग की जाएगी। मौके पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि किसी भी यूट्यूबर को क्लब की सदस्यता नहीं दी जाएगी। सरकार से मान्यता प्राप्त संस्थानों के पत्रकारों को ही क्लब का सदस्य बनाया जाएगा। कहा गया कि बिना मान्यता प्राप्त यूट्यूबर्स की करतूतों के कारण पत्रकारों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। साथ ही खूंटी प्रेस क्लब का बायलोज बनाने और निबंधन कराने का निर्णय लिया गया। निबंधन होने के बाद ही प्रेस क्लब द्वारा सदस्यता प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा।

कुरियर ऑफिस में लूटकांड का खुलासा, दो गिरफ्तार

दो बाइक, दो मोबाईल, एक सीपीयू व 61 हजार नकद बरामद

PHOTON NEWS KODERMA : जिले के तिलैया थाना क्षेत्र अन्तर्गत देवी मडंप रोड स्थित एकम एक्सप्रेस कुरियर कार्यालय में लूट की घटना का उद्भेदन कर लिया गया है। लूट की नकदी 61 हजार समेत दो अपराधियों को गिरफ्तार किया गया।

एसपी अनुदीप सिंह ने मंगलवार शाम पत्रकार वार्ता में बताया कि 6 दिसंबर को 8 अपराधियों ने हथियार का भय दिखाकर 96 हजार लूट की घटना को अंजाम दिया था। मामले की गम्भीरता को देखते हुए प्रशिक्षु पुलिस उपाधीक्षक दिवाकर कुमार के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। टीम ने कांड का उद्भेदन कर दो आरोपितों बासुदेव कुमार साव, कन्द्रपड़ीह, जयनगर एवं गिरिडीह जिले के कमलेश कुमार सिंह को गिरफ्तार किया गया।

मीडिया को जानकारी देते एसपी अनुदीप सिंह। ● फोटोन न्यूज

गिरफ्तार अपराधियों की निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त दो बाइक, दो मोबाईल, कुरियर के कार्यालय से लूटे गये एक सीपीयू एवं 61 हजार रुपये नकदी बरामद हुई है। एसपी ने बताया कि गिरफ्तार अपराधियों के विरुद्ध अन्य जिलों में भी मामले दर्ज हैं। उन्होंने बताया कि लूट की घटना को अंजाम कुरियर कर्मी के मिली भगत से किया गया।

नौ सूत्री मांगों को लेकर ग्रामीण डाक सेवक संघ की हड़ताल शुरू, डाकघरों में लटके ताले

PHOTON NEWS PALAMU : अखिल भारतीय ग्रामीण डाक सेवक संघ की अनिश्चितकालीन हड़ताल मंगलवार से शुरू हो गई। केंद्रीय नेतृत्व के आह्वान पर 9 सूत्री मांगों को लेकर पलामू के 1200 ग्रामीण डाक सेवक काम बंद कर हड़ताल पर चले गए हैं, जिसके चलते जिले के सभी ग्रामीण डाकघर में ताले लटक रहे हैं। ग्रामीणों को परेशानी हो रही है। रुपए के लेनदेन, चिट्ठी, आधार कार्ड, वोटर पहचान पत्र, इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक आदि डाक कार्य बाधित है।

प्रधान डाकघर में मुख्य रूप से अध्यक्ष विनोद पांडे, सचिव अजय कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष सोहन गुप्ता, उपाध्यक्ष प्रमोद कुमार सिंह, अखिलेश तिवारी, वरीय सदस्य गज्जू दुब, सह सचिव अजय पांडे, नंद बिहारी सिंह, अनिल कुमार सिंह, रामराज प्रसाद सहित अन्य कर्मी अपनी मांगों के समर्थन में धरना देते नजर आए।

हड़ताल पर बैठे डाक सेवक संघ के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

उधर, छतरपुर में भी ग्रामीण डाक सेवकों ने अपनी मांगों के समर्थन में धरना दिया और जल्द पूरी करने का आग्रह किया। अध्यक्षता ग्रामीण डाक छत्तरपुर प्रखंड इकाई के रंजीत कुमार ठाकुर एवं संचालन सुमित कौशल सिंह ने किया।

धरना के माध्यम से ग्रामीण डाक सेवकों ने नौ सूत्री मांगों ग्रामीण डाक सेवकों को आठ घंटे का काम और पेंशन सहित सभी लाभ प्रदान करने, नियमित कर्मचारियों के समान 12-24 एवं 36 वर्ष का लाभ अविलम्ब लागू करने, ग्रुप बीमा कवरेज को पांच लाख रुपये तक बढ़ाने, प्रिंटर और नेटवर्क एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराने आदि शामिल है।

माइंस के हाइवा परिचालन के खिलाफ ग्रामीण हुए गोलबंद

PHOTON NEWS PALAMU : जिले के छतरपुर अनुमंडल अंतर्गत नौडीहा बाजार थाना क्षेत्र के तरीडीह पंचायत के झरहा गांव में मंगलवार को भी माइंस के हाइवा का परिचालन नहीं हो पाया। परिचालन नहीं होने देने के संकल्प के साथ स्थानीय लोगों ने झरहा मंदिर परिसर में बैठक की, जिसमें जान देंगे, हाइवा को सड़क से नहीं जाने देंगे का निर्णय लिया।

सोमवार को हाइवा परिचालन को लेकर ग्रामीणों और पुलिस में झड़प हुई थी। ग्रामीणों ने सड़क से पार हो रहे हाइवा को बैरियर के पास

रोक दिया था और जमकर विरोध दर्ज किया था। पत्थरबाजी की गयी थी, जिसमें हाइवा का शीशा टूट गया था। साथ ही कई पुलिसकर्मी घायल हुए थे। ग्रामीण सड़क टूटने से नाराज हैं और सड़क बनाने की मांग कर रहे हैं। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि यह ग्रामीण सड़क है। इस सड़क की क्षमता मात्र 10 टन है, लेकिन इस पर 30 से 40 टन के हाइवा चलते हैं, जिससे सड़क पूरी तरह खराब हो गई।

कुछ महीने पहले ग्रामीणों और खाद्यान संचालकों के बीच झड़प हुई थी, इस क्रम में खाद्यान संचालकों ने फायरिंग की थी। इस संबंध में दोनों ओर से प्राथमिकी भी दर्ज करायी गयी थी। तीन दिन पहले ग्रामीणों ने सड़क को लोहे से बैरिकेड कर दिया था। रविवार को प्रशासनिक टीम ने बैरिकेडिंग उखाड़ दी थी, जिससे तनाव बढ़ गया है।

पेट्रोल पंप के पास 407 वैन में लगी आग बड़ा हादसा टला, दो घंटे आवागमन बाधित

PHOTON NEWS PALAMU : पलामू जिला मुख्यालय डालटनगंज शहर में मंगलवार शाम बड़ा हादसा टल गया। स्टेशन रोड स्थित एसओ पेट्रोल पंप स्वाहा होने से बाल बाल बच गया। करीब आधे घंटे के बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंची और 407 वैन में लगी आग को बुझाई। इस क्रम में करीब दो घंटे तक रेड़मा ओवरब्रिज, स्टेशन रोड, को-ऑपरेटिव चौक के इलाके में जाम की स्थिति बनी रही और पास के चर्च, होटल और घरों के लोग भय के माहौल में रहे।

धू-धू कर जलता वैन। ● फोटोन न्यूज

बताया जाता है कि शाम करीब छह बजे बिहार नंबर की एक 407 वैन स्टेशन रोड स्थित एसओ पेट्रोल पंप पर तेल भरने के लिए पहुंची थी। कर्मियों ने तेल भरने के दौरान देखा कि गाड़ी में आग लगी हुई है। इसकी जानकारी चालक और खलासी को दी तो दोनों गाड़ी छोड़कर मौके से भाग गए। ऐसे में पेट्रोल पंप के कर्मियों एवं आसपास के लोगों ने बड़े हादसे को टालने के लिए तत्परता दिखाई। 407 वैन को धक्का मारकर पेट्रोल पंप से आगे को-ऑपरेटिव चौक तक ले गए और संभावित खतरे को काफी हद तक टाल दिया। बर्निंग 407 वैन को पेट्रोल पंप से हटाए जाने के बाद आसपास के लोगों ने राहत की सांस ली।

इस क्रम में हादसे के कारण को-ऑपरेटिव चौक की ओर की ट्रैफिक रोक दी गई। रेडमा ओवर ब्रिज पर घंटों जाम लगा रहा। करीब आधे घंटे के बाद फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और रेडमा ओवर ब्रिज के ऊपर से ही पानी डालकर 407 वैन में लगी आग को बुझाया। हालांकि इस क्रम में गाड़ी में ब्लास्ट भी हुआ। गाड़ी के फटने के बाद उसमें से पिसा हुआ सफेद पाउडर चारों तरफ फैल गया। यह गाड़ी किसकी थी और इसमें लड़ा सफेद पाउडर कहां लेकर जाना था, इस संबंध में जानकारी स्पष्ट नहीं हो पाई है। पुलिस पूरे मामले की छानबीन कर रही है।

राज्यस्तरीय शूटिंग चैंपियनशिप में खूंटी को पहला स्थान

PHOTON NEWS KHUNTI : डीएवी पब्लिक स्कूल हेहल रांची में 11 और 12 दिसंबर को आयोजित डीएवी स्कूलों की राज्यस्तरीय शूटिंग चौंपियनशिप में खूंटी के शूटरों ने उम्दा प्रदर्शन करते हुए चार गोल्ड और एक सिल्वर मेडल जीतकर अंडर 14 ओपन एयर राइफल टीम इवेंट में पहला स्थान प्राप्त किया।

खूंटी राइफल शूटिंग क्लब में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे खूंटी डीएवी स्कूल के सात शूटरों ने चौंपियनशिप में हिस्सा लिया। इनमें अंडर 14 ओपन एयर राइफल में रचित रंजन प्रसाद ने गोल्ड, जबकि प्रवीण हेरंज ने सिल्वर पदक जीता। इसी प्रकार अंडर 14 पीप साइड राइफल में अर्चना कुमारी और आर्यन टूटी ने अलग-अलग गोल्ड मेडल जीतकर विद्यालय का मान बढ़ाया।

अंडर 17 पिस्टल में कृष्णा गुप्ता और ज्योति रानी ने गोल्ड मेडल जीता। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में पदक जीतने वाले खूंटी के सभी शूटर्स जनवरी में दिल्ली में होनेवाली डीएवी स्कूल नेशनल चौंपियनशिप में भाग लेंगे। चैंपियनशिप में बेहतर प्रदर्शन करने वाले सभी शूटर्स को डीएवी पब्लिक स्कूल खूंटी के प्राचार्य टीपी झा, खेल शिक्षक मृत्युंजय सिंह, शिक्षिका नीति प्रसाद, स्मिता के अलावा खूंटी राइफल शूटिंग क्लब के सचिव अनुज कुमार ने शुभकामनाएं दी।

नेशनल खो-खो प्रतियोगिता के लिए पलामू के अंशु का चयन

PHOTON NEWS PALAMU : भारतीय खो-खो संघ एवं कर्नाटक खो-खो संघ के संयुक्त तत्वावधान में 13 से 17 दिसंबर तक कर्नाटक के तुमकुर जिला में आयोजित 33वीं सब-जूनियर नेशनल खो खो प्रतियोगिता के लिए पलामू से एक मात्र बालिका खिलाड़ी अंशु कुमारी का चयन झारखंड टीम में किया गया है। रॉयल स्पोर्ट्स की अंशु ने झारखंड खो-खो एसोसिएशन द्वारा बोकारो में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। इसके आधार पर उसका चयन किया गया।

नेशनल प्रतियोगिता के लिए चयनित खिलाड़ी एवं उसके कोच रेशमा पाण्डेय और सोनी कुमारी को पलामू जिला खेल पदाधिकारी उमेश लोहरा, खो-खो एसोसिएशन के अध्यक्ष अजातशत्रु प्रसाद सिन्हा, सचिव संजय कुमार त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष कमलानंद दुबे, ओलंपिक संघ के अध्यक्ष किशोर कुमार पाण्डेय, जीजीपीएस स्कूल के शारीरिक शिक्षक अनिल कुमार पांडे, शारीरिक शिक्षक प्रदीप कुमार मेहता, साइकलिंग संघ के सचिव सिद्धार्थ कुमार, शूटिंग संघ के अध्यक्ष अमरेंद्र पाठक, सचिव अशोक कुमार सिंह, वूशु संघ के अध्यक्ष रमेश चंद्र प्रसाद, प्रीति कुमारी एवं खेल प्रेमियों ने शुभकामनाएं दी है।

जन आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य कर रही हेमंत सोरेन सरकार : रामेश्वर उरांव

PHOTON NEWS LOHARDAGA : राज्य सरकार के मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव जिले के कैरो प्रखंड अंतर्गत ग्राम हनहट में आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में शामिल हुए। उरांव ने कहा कि राज्य सरकार जन आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का तीसरा चरण पूरे राज्य के विभिन्न पंचायत और वार्ड में शिविर लगाकर आयोजित किया जा रहा है।

उरांव ने कहा कि राज्य सरकार जनता के द्वार तक पहुंच कर विकास कार्यों से अंतिम व्यक्ति को जोड़ने का काम कर रही है और उनके सारे समस्याओं का समाधान

कार्यक्रम में उपस्थित मंत्री रामेश्वर उरांव व अन्य। ● फोटोन न्यूज

एवं विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ इस शिविर के माध्यम से दिया जा रहा है। पंचायत और वार्ड स्तर पर आयोजित शिविरों में नई योजना तथा अबुआ आवास योजना, बिरसा सिंचाई कूप योजना, सामुदायिक और व्यक्तिगत वनपट्टा से संबंधित मामले, गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना का लाभ दिया जाएगा।

इसके अतिरिक्त जाति, आय, जन्म, मृत्यु, दिव्यांगता प्रमाण पत्र में जरूरी संशोधन, भूमि से जुड़े मामले, आयुष्मान कार्ड, सर्वजन पेंशन योजना, सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना, किसान क्रेडिट कार्ड योजना, बिजली बिल से संबंधित शिकायत का निवारण समेत अन्य कार्य का निष्पादन किया जाएगा। इस मौके पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

मुख्यमंत्री मेधा छात्रवृत्ति योजना में पलामू के 153 छात्र व 169 छात्रा सहित 322 विद्यार्थी हुए सफल

PHOTON NEWS PALAMU : मुख्यमंत्री मेधा छात्रवृत्ति योजना-2023 में पलामू जिले के 322 विद्यार्थियों ने सफलता अर्जित की है। इसमें 169 छात्राएं एवं 153 छात्र शामिल हैं। झारखंड सरकार की ओर से आयोजित मुख्यमंत्री मेधा छात्रवृत्ति योजना को लेकर झारखंड अधिविध परिषद, रांची द्वारा 13 अगस्त को परीक्षा आयोजित की गई थी। इसमें जिले के 20 प्रखंड के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। झारखंड राज्य के सभी जिलों से 2855 विद्यार्थी सफल हुए हैं। इसमें 1386 छात्राएं एवं 1469 छात्र शामिल हैं। इसी के अंतर्गत जिले में 322 विद्यार्थियों ने सफलता अर्जित कर जिला का मान-सम्मान बढ़ाया है।

प्रतियोगिता में सफल मध्य विद्यालय तुकबेरा के विद्यार्थी व शिक्षक। ● फोटोन न्यूज

मध्य विद्यालय तुकबेरा के चार विद्यार्थियों ने लहराया परचम : सीएमएमएसएस के तहत आयोजित परीक्षा में नावाबाजार प्रखंड के राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय, तुकबेरा टोला के 4 विद्यार्थियों ने सफलता का परचम लहराया है। सफल विद्यार्थियों में दीपिका कुमारी, विकास कुमार, सनी कुमार एवं अनुष्का सोनम शामिल हैं। स्कूल के प्रधानाध्यापक बृन्दा प्रसाद गुप्ता ने बताया कि 2022-23 सत्र के लिए आयोजित परीक्षा में शामिल विद्यालय के सभी 4 विद्यार्थी सफल घोषित किए गए हैं। प्रधानाध्यापक ने सफल अभ्यर्थियों को कॉपी एवं कलम देकर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने बताया कि विद्यालय के विद्यार्थी पूर्व में भी प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता हासिल कर स्कूल का मान-सम्मान बढ़ाया है।

विद्यालय के शिक्षक रविंद्र नाथ ठाकुर ने सफल विद्यार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी मन लगाकर अपने रुचि के अनुरूप पढ़ाई करें, तो सफलता अवश्य मिलेगी। उन्होंने समय प्रबंधन कर पढ़ाई करने की भी सलाह विद्यार्थियों को दी है।

कर्रा प्रखंड की घुनसुली पंचायत में आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन

शिविर लगाकर ग्रामीणों को दिया गया योजनाओं का लाभ

PHOTON NEWS KHUNTI : आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत मंगलवार को कर्रा प्रखंड की घुनसुली पंचायत परिसर में लगे शिविर में छात्राओं को निःशुल्क साइकिल वितरण योजना का लाभ दिया गया। साइकिल वितरण योजना के तहत छात्राओं को 4500-4500 रुपये का चेक पाकर छात्राओं में काफी उत्साह था।

विद्यालय में अध्ययन कर रही इन छात्राओं ने बताया कि निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के लाभ से अब उन्हें स्कूल जाने में काफी सहूलियत होगी। छात्रा खुशबू कुमारी ने झारखंड सरकार एवं स्थानीय प्रशासन को धन्यवाद करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री के प्रयास से उन्हें इस योजना का लाभ उनके घर तक मिल रहा है। जिले की प्रखंडों में पंचायत स्तर और नगर पंचायत क्षेत्र में शिविर लगाए गए। आमजनों को योजनाओं की समुचित जानकारी दी जा रही है।

साथ ही स्टॉल के माध्यम से

साइकिल के लिए चेक के साथ छात्राएं व अन्य। ● फोटोन न्यूज

योजनाओं का लाभ भी मिल रहा है। कर्रा प्रखंड के घुनसुली पंचायत स्तरीय शिविर में जिला परिषद् उपाध्यक्ष, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी, प्रखंड प्रमुख, मुखिया सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में 12 लाभुकों को बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन मिशन के तहत स्वीकृत प्रमाण पत्र वितरण, 120 लाभुकों को सोना सोबरन धोती साड़ी योजना का लाभ, 19 लाभुकों को कम्बल वितरण, नौ छात्र-छात्राओ को साइकिल खरीदने के लिए राशि दी गई।

छह किशोरियों को सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना का स्वीकृत प्रमाण पत्र वितरण, एक आंगनबाडी बच्चे का अन्नाप्रशन, एक महिला की गोदभराई, जेएसएलपीएस की आठ दीदियों को आईडी कार्ड वितरण, श्रम विभाग द्वारा जॉब कार्ड वितरण, कृषि विभाग द्वारा 14 लाभुकों को गेहूं वितरण,दो लाभुकों को आयुष्मान कार्ड वितरण तथा वन विभाग द्वारा 300 पौधों का वितरण किया गया।

खूंटी जिला से 20 आदिवासी युवक युवतियों की टीम बेंगलुरु रवाना

युवक-युवतियों को बेंगलुरु रवाना करते रिजर्व पुलिस बल के जवान। ● फोटोन न्यूज

KHUNTI : केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 94 बटालियन और नेहरू युवा केंद्र संगठन के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को 20 आदिवासी युवक-युवतियों की टीम को बेंगलुरु कर्नाटक के लिए रवाना किया गया। द्वितीय कमान अधिकारी 94 बटालियन प्रकाश रंजन मिश्रा ने हरी झंडी दिखाकर युवाओं की टीम को रवाना किया। उल्लेखनीय है कि सीआरपीएफ और नेहरू युवा केंद्र संगठन द्वारा झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा के आदिवासी युवक-युवतियों को देश के विभिन्न राज्यों और शहरों में मानसिक और कौशल विकास के लिए भेजा जाता है। इस वर्ष 12 स्थानों देहरादून, जम्मू, नासिक, मुंबई, कोलकाता, पुणे, मैसूर, बेंगलुरु, हैदराबाद, नागपुर और लखनऊ के लिए 260 आदिवासी युवक-युवतियों को खूंटी जिले से भेजने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कमांडेंट 94 बटालियन राधेश्याम सिंह ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान युवा-युवतियों को बेंगलुरु कर्नाटक में 15 दिसंबर से 21 दिसंबर तक रखा जाएगा, जहां वे वहां की संस्कृति, कला और परिवेश से अवगत होंगे। इस मौके पर द्वितीय कमान अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्रा, अंजन कुमार मंडल उप कमांडेंट, संतोष कुमार के उप कमांडेंट, सुबेदार मेजर संजीव कुमार, निरीक्षक जीडी राजेश कुमार सिंह आदि उपस्थित थे।

22 जनवरी को सभी सनातनियों के घरों और मंदिरों में होगा दीपोत्सव

KHUNTI : अयोध्या में आगामी 22 जनवरी को होनेवाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मौके पर तोरपा प्रखंड के सभी मंदिरों और पूजा स्थलों की साफ-सफाई और दीपोत्सव को लेकर तोरपा के एनएचपीसी परिसर स्थित शिव मंदिर परिसर में सनातन धर्मावलंबियों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता पुरोहित बैकुंठ षाड़ंगी ने की। बैठक में विश्व हिंदू परिषद के तोरपा प्रखंड अध्यक्ष एमपी सिंह ने बताया कि आग्रामी दो जनवरी से 15 जनवरी तक घर-घर जाकर अयोध्या से आये कलश अक्षत का वितरण किया जाएगा और उन्हें प्राण प्रतिष्ठा सामरोह का हिस्सा बनने के लिए निमंत्रण दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा के दिन तोरपा प्रखंड के सभी मंदिरों को आकर्षक ढंग से सजाया जाएगा और मंदिरों के साथ ही सभी घरों में दीपोत्सव मनाया जाएगा। साथ ही सभी मंदिरों में संध्या आरती, प्राद वितरण और भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

खूंटी जिले में चलंत लोक अदालत का हुआ आयोजन

निःशुल्क न्याय वार्षिक तीन लाख से कम आय वालों के लिए : डालसा सचिव

चलंत लोक अदालत डालसा सचिव मनोरंजन कुमार व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS KHUNTI : नालसा दिल्ली और झालसा रांची के निर्देश पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह डालसा अध्यक्ष सत्य प्रकाश के मार्गदर्शन में चलंत लोक अदालत सह न्याय आपके द्वारा वैन के तहत मंगलवार को कुंजला साप्ताहिक हाट में विधिक सहायता और कानूनी जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

हाट में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए डालसा सचिव मनोरंजन कुमार ने कहा कि निःशुल्क न्याय वैसे लोगों के लिए है, जिनकी आमदनी तीन लाख रुपये वार्षिक से कम है। बच्चे हो, महिलाएं हों, कैदी हों और वैसे बच्चे जिनके माता-पिता नहीं हैं या दोनों में से कोई एक न हो, वैसे बच्चों को भी निःशुल्क न्याय उपलब्ध कराना है।

उन्होंने बच्चों से संबंधित योजनाएं, फोस्टर केयर, स्पॉन्सरशिप योजना, सावित्री बाई फुले योजना, बाल श्रम निषेध कानून, अनैतिक व्यापार निवारण कानून आदि पर भी डालसा सचिव ने विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जिसका कोई नहीं है, उसका मददगार हमेशा डालसा है।

बाबा बैद्यनाथ मंदिर के Q कांप्लेक्स निर्माण मामले में निशिकांत दुबे की याचिका स्वीकृत

हाईकोर्ट ने कहा- कांप्लेक्स के द्वितीय फेज के निर्माण के लिए 120 करोड़ को स्वीकार करे राज्य सरकार

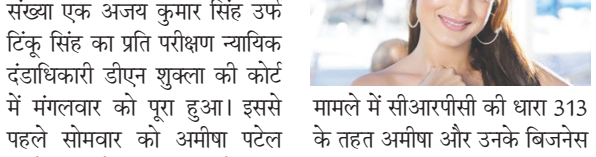

SPECIAL REPORTER RANCHI : देवघर में बाबा बैजनाथ मंदिर के निकट क्यू कंपलेक्स के फेज दो का निर्माण जल्द कराने को लेकर सांसद निशिकांत दुबे की जनहित याचिका पर झारखंड हाई कोर्ट ने मंगलवार को फैसला सुनाया। चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने सांसद निशिकांत दुबे की याचिका को स्वीकृत कर लिया। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि नवयुग कंपनी लिमिटेड के द्वारा सीएसआर के तहत क्यू कंपलेक्स के द्वितीय फेज के निर्माण के लिए 120 करोड़ देने का जो आग्रह किया था, उसे राज्य सरकार स्वीकार करे। इस राशि से निर्माण कार्य शुरू किया जाए।

सरकार करे निर्माण कार्य की मॉनिटरिंग

हाईकोर्ट ने सरकार को क्यू कंपलेक्स के द्वितीय फेज के निर्माण कार्य की मॉनिटरिंग करने का भी निर्देश दिया है। बता दें कि पिछली सुनवाई में कोर्ट ने सभी पक्षों को सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। प्रार्थी की ओर से शिवानी जालूका ने पैरवी की। दरअसल, नवयुग कंपनी लिमिटेड के द्वारा सीएसआर के तहत क्यू कंपलेक्स के द्वितीय फेज के निर्माण के लिए 120 करोड़ देने का आग्रह राज्य सरकार से किया गया था लेकिन यह मामला अभी तक राज्य सरकार के पास लंबित था।

1984 सिख दंगा : मुआवजा भुगतान में देरी होने पर HC ने जताई नाराजगी

19 दिसंबर को गृह सचिव व डीजीपी को वर्चुअल हाजिर होने का निर्देश

RANCHI : वर्ष 1984 के सिख दंगा में झारखंड में प्रभावित लोगों को मुआवजा दिलाने एवं सिख दंगा से संबंधित केस क्रिमिनल केस की मॉनिटरिंग करने को लेकर दायर सतनाम सिंह गंभीर जनहित याचिका की सुनवाई मंगलवार को झारखंड हाईकोर्ट में हुई। मामले में मुआवजा भुगतान की पूरी प्रक्रिया अब तक नहीं होने को लेकर कोर्ट ने कड़ी नाराजगी जताई। कोर्ट ने अगली सुनवाई 19 दिसंबर को गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव एवं डीजीपी को कोर्ट में वर्चुअल मोड में उपस्थित रहने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने इस संबंध में पूछा है कि अब तक मुआवजा का भुगतान क्यों नहीं हुआ, मामले में करीब 350 केस दर्ज हैं, उसकी क्या स्टेटस है इसकी भी जानकारी सरकार ने नहीं दी है। कोर्ट को अपर महाधिवक्ता आशुतोष आनंद ने बताया कि बोकारो जिला में मुआवजा भुगतान के लिए एक करोड़ 20 लाख की अतिरिक्त राशि स्वीकृत कर ली गई है। कैबिनेट ने भी इस पर अप्रूवल दे दिया है। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले की अगली सुनवाई 19 दिसंबर निर्धारित की है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता दिवाकर उपाध्याय एवं हस्तक्षेपकर्ता की ओर से फैसल अल्लाम ने पैरवी की। दरअसल कोर्ट ने 15 सितंबर 2023 को अपने आदेश में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल कर सरकार को बताने को कहा था कि सिख दंगा के पीड़ितों को मुआवजा देने के कमीशन की रिपोर्ट पर क्या कार्रवाई हुई है।

31 जनवरी 2024 तक पूरा करे रिम्स का कंस्ट्रक्शन कार्य : HC

RANCHI : हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र और जस्टिस आनंद सेन की बेंच ने विजेता कंस्ट्रक्शन की याचिका को स्वीकार करते हुए बिल्डिंग कॉर्पोरेशन का आदेश खारिज कर दिया है। दरअसल रिम्स परिसर में पांच सौ कमरे का बॉयज हॉस्टल और पांच सौ कमरों का गर्ल हॉस्टल बनाने का टेंडर मिला था। जिसके निर्माण में देर हुई। काम पूरा नहीं होने के कारण टेंडर खत्म करते हुए जमा राशि जब्त कर ली गई थी। जिसके खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर कहा गया कि काम लगभग पूरा कर लिया गया है इसलिए टेंडर खत्म करने का कोई औचित्य नहीं है। झारखंड बिल्डिंग कॉर्पोरेशन को पूरा किए गए काम का आकलन करने का निर्देश दिया था। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि जब लगभग काम पूरा हो चुका है तो बचे हुए काम के लिए दुबारा टेंडर करने से राज्य सरकार को राजस्व का नुकसान होगा। इसके साथ ही अदालत ने विजेता कंस्ट्रक्शन को यह निर्देश दिया है कि बचा हुआ काम किसी भी परिस्थिति में 31 जनवरी 2024 तक पूरा करे। इस मामले में विजेता कंस्ट्रक्शन की ओर से वरीय अधिवक्ता अजीत कुमार ने बहस की।

अमीषा पटेल के खिलाफ चेक बाउंस मामले में पहले गवाह का क्रॉस-एक्जामीनेशन पूरा

अभिनेत्री की ओर से जमा कराई गई 1000 रुपये जुर्माना की राशि

SPECIAL REPORTER RANCHI : चेक बाउंस से जुड़े मामले में अभिनेत्री अमीषा पटेल के गवाह संख्या एक अजय कुमार सिंह उर्फ टिंकू सिंह का प्रति परीक्षण न्यायिक दंडाधिकारी डीएन शुक्ला की कोर्ट में मंगलवार को पूरा हुआ। इससे पहले सोमवार को अमीषा पटेल पहले गवाह के प्रति परीक्षण के लिए कोर्ट से समय मांगी गई थी, जिस पर कोर्ट ने मामले की सुनवाई मंगलवार को निर्धारित करते हुए अमीषा पटेल पर 1000 रुपये का जुमार्ना लगाया था। अमीषा पटेल ने मंगलवार को जुमार्ना की राशि जमा कराई। अब

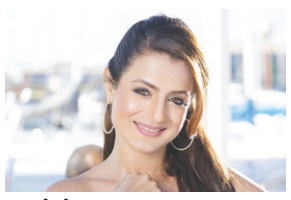

मामले में सीआरपीसी की धारा 313 के तहत अमीषा और उनके बिजनेस पार्टनर कुणाल ग्रूमर का जल्द ही बयान दर्ज हो सकता है। शिकायतकर्ता अजय कुमार सिंह की ओर से अधिवक्ता विजयलक्ष्मी ने पैरवी की। इससे पूर्व भी कोर्ट ने अमीषा पटेल और उनके बिजनेस पार्टनर कुणाल ग्रूमर का बयान दर्ज कराने के लिए तिथि निर्धारित की थी लेकिन गवाह संख्या एक अजय कुमार सिंह उर्फ टिंकू सिंह की प्रति परीक्षण नहीं होने के कारण अमीषा पटेल की ओर से उसकी फिर से गवाही कराने का आग्रह किया था। कोर्ट की मंजूरी के बाद टिंकू सिंह का प्रति परीक्षण अमीषा पटेल के अधिवक्ता द्वारा किया गया। फिल्म मेकर अजय कुमार सिंह ने अभिनेत्री अमीषा पटेल पर धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज कराया था। देसी मैजिक फिल्म बनाने के नाम पर अजय कुमार सिंह से अमीषा पटेल ने ढाई करोड़ रुपये लिया था।

चारा घोटाला के दोषी का पेंशन मामला : हाईकोर्ट ने ईडी को जवाब दाखिल करने का दिया निर्देश

SPECIAL REPORTER RANCHI : चाईबासा में मनरेगा घोटाले मामले में दाखिल जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान ईडी ने जवाब दाखिल करने के लिए समय की मांग की। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले में ईडी को स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश देते हुए अगली सुनवाई जनवरी 2024 में दूसरे सप्ताह में निर्धारित की है। दरअसल पिछली सुनवाई में कोर्ट को ईडी के अधिवक्ता की ओर से बताया गया था कि मामले में ईडी ने एक ईसीआईआर केस दर्ज किया गया है, जिसका अनुसंधान जारी है। जिसपर कोर्ट ने ईडी को स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया था। कोर्ट के आदेश के आलोक में मंगलवार को स्टेटस रिपोर्ट दाखिल नहीं होने पर ईडी की ओर से समय की मांग की गई। पूर्व की सुनवाई में महाधिवक्ता राजीव रंजन ने कोर्ट को बताया था कि मामले में एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) में दर्ज 14 केस में से 13 केस में आरोप पत्र दाखिल हो चुका है। ईडी की ओर से जो दस्तावेज मांगे गए थे उसे राज्य सरकार ने उपलब्ध करा दिया है। जनहित याचिका में प्रार्थी का जो आग्रह था, वह पूरा हो चुका है इसलिए याचिका निष्पादित की जाए।

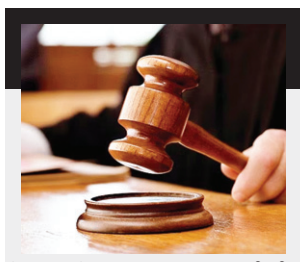

क्या है पूरा मामला

बता दें कि चाईबासा में हुए मनरेगा घोटाला की जांच की मांग को लेकर प्रार्थी ने वर्ष 2013 में जनहित याचिका दाखिल की थी, बाद में कोर्ट ने इस मामले को निष्पादित कर दिया था। इसके बाद में प्रार्थी की ओर से वर्ष 2021 में फिर से जनहित याचिका दाखिल कर मामले की सीबीआई जांच की मांग की गई है। प्रार्थी की ओर से की ओर से कोर्ट को बताया गया था वित्तीय वर्ष 2008-9, 2009-10, 2010-11 में चाईबासा में करीब 28 करोड़ रुपए का मनरेगा घोटाला हुआ है। इसे लेकर चाईबासा में पुलिस ने 14 एफआईआर दर्ज की थी। बाद में एसीबी ने मामले में प्राथमिकी दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया था, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई है। चाईबासा में उक्त 3 वित्तीय वर्षों में मनरेगा कार्यों में अग्रिम राशि का भुगतान तो कर दिया गया था लेकिन कोई काम धरातल पर नहीं हुआ था। उस समय चाईबासा के डीसी के। श्रीनिवासन थे।

परिजनों ने करायी थी संजय पाहन की हत्या

शूटरों को दिया था 50 हजार एडवांस

CRIME REPORTER RANCHI : सदर थाना क्षेत्र के बूटी बस्ती में हुए संजय पाहन हत्याकांड के खुलासे के करीब रांची पुलिस पहुंच गई है। सूत्रों के मुताबिक, संजय पाहन के परिजनों ने ही उसकी हत्या कराई है। पुलिस जांच में यह स्पष्ट हो गया है कि पारिवारिक विवाद में ही संजय पाहन की गोली मारकर हत्या की गई है। पुलिस को इस बात की भी जानकारी मिली है कि संजय पाहन की हत्या के लिए प्रोफेशनल शूटर को सुपारी दी गई थी, जो रांची का ही रहने वाला है। शूटरों को किसी प्रकार की परेशानी ना हो, इसके लिए पाहन के घर आने-जाने के समय के अलावा पूरी दिनचर्या पहले ही उन्हें बता दी गयी थी। हत्या के लिए चहारदीवारी के अंदर का ही स्थान तय किया गया था, जिससे किसा को इस बारे में कुछ पता ना चल सके। हत्याकांड को अंजाम देने के लिए एडवांस के तौर पर शूटरों को 50 हजार दिया गया था। बकाया पैसा घटना को अंजाम देने के बाद दिए जाने की बात पर सहमति बनी थी। एडवांस मिलते ही शूटर हत्याकांड का अंजाम देकर फरार हो गया। गौरतलब है कि 30 नवंबर की रात अज्ञात अपराधियों ने संजय पाहन की उसके घर के चहारदीवारी के अंदर ही गोली मारकर हत्या कर दी थी।

दक्षिण कोरिया के विश्वविद्यालय के स्टूडेंट्स भी सीयूजे में करेंगे पढ़ाई, शैक्षणिक करार

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजे) में दक्षिण कोरिया के यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले स्टूडेंट्स भी जल्द नजर आएंगे। कोरिया की तीन यूनिवर्सिटियों और सीयूजे के बीच मंगलवार को इस संबंध में शैक्षणिक एमओयू किया गया है। सीयूजे कुलपति प्रो. केबी दास बीते दिनों दक्षिण कोरिया के दस दिवसीय दौरे से भारत लौटे हैं। कोरिया यात्रा के दौरान उन्होंने दक्षिण कोरिया के तीन विश्वविद्यालयों हंगुक विदेशी भाषा अध्ययन विश्वविद्यालय, केम्योंग विश्वविद्यालय एवं बुसान विदेशी भाषा अध्ययन विश्वविद्यालय का दौरा किया। साथ ही भारत की उभरती अर्थव्यवस्था, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं कोरियाई छात्रों के लिए भारत का महत्व जैसे विषयों

पर व्याख्यान देने के साथ समझौता ज्ञापन सौंपा प्रो. केबी दास ने कहा कि यह दौरा सीयूजे के शैक्षणिक विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है एवं इसके दूरगामी परिणाम से जल्द ही छात्र लाभान्वित होंगे। खासकर हंगुक भाषा अध्ययन विश्वविद्यालय एवं बुसान विदेशी भाषा अध्ययन विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों को यह आश्वस्त किया कि ऑनलाइन अध्यापन के साथ-साथ सीयूजे कोरियाई छात्रों को ऑफलाइन अध्यापन के लिए भी पूर्ण रूप से तैयार है। इस शैक्षणिक दौरे की सफलता के रूप में बहुत जल्द ही कोरियाई छात्र झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रांगण में अध्ययन करते नजर आएंगे। प्रो दास के साथ गए हुए सुदूर पूर्व भाषा के प्राध्यापक शशि मिश्रा ने कहा कि हंगुक विश्वविद्यालय के साथ अनेक तरह के शैक्षणिक कार्य साथ में किए जा रहे हैं। खास तौर पर टैंडम कक्षा, जिसमें 12 कोरियाई छात्र एवं 12 सीयूजे के छात्र विगत तीन सेमेस्टर से भाषा आदान-प्रदान करते चले आ रहे हैं। शिक्षा जगत में यह अनूठी पहल है। इस कक्षा के माध्यम से दोनों विश्वविद्यालयों के छात्र भाषा अदान-प्रदान के साथ अनेक विषयों पर अपना विचार अदान-प्रदान करते हैं।

मारपीट केस में मानवाधिकार आयोग ने डीजीपी से मांगी रिपोर्ट

होमगार्ड प्रदेश महासचिव ने दर्ज कराई थी कंप्लेन

CRIME REPORTER RANCHI : होमगार्ड वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश महासचिव के साथ मारपीट के मामले में मानवाधिकार आयोग ने डीजीपी से रिपोर्ट मांगी है। गौरतलब है कि झारखंड होमगार्ड वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश महासचिव राजीव कुमार तिवारी ने धुर्वा थाना के पूर्व थाना प्रभारी प्रवीण कुमार के विरुद्ध मारपीट गाली गलौज और फर्जी केस करने को लेकर मानवाधिकार आयोग में शिकायत दर्ज कराया था। इस शिकायत पर संज्ञान लेते हुए मानवाधिकार आयोग ने कार्रवाई करने का निर्देश पुलिस अधीक्षक रांची को दिया था। जिसके आलोक में हटिया पुलिस उपाधीक्षक के द्वारा जांच करते हुए जांच प्रतिवेदन मानवाधिकार आयोग को समर्पित किया गया था। इस जांच रिपोर्ट के आधार पर मानवाधिकार आयोग ने राजीव तिवारी से उनका पक्ष मांगा था। राजीव तिवारी ने इस जांच रिपोर्ट पर असहमति जताते हुए मानवाधिकार आयोग को संपूर्ण तथ्यों के साथ जांच रिपोर्ट की खामियां बताई थी। जिसके आलोक में मानवाधिकार आयोग ने पुनः संज्ञान लेते हुए 8 जनवरी 2024 तक कार्रवाई करते हुए रिपोर्ट का मांग डीजीपी से किया है।

केबीसी में अमिताभ बच्चन ने लॉन्च किया पोस्टर

भगवान बिरसा मुंडा की जीवनी पर बन रही फिल्म

PHOTON NEWS RANCHI : भगवान बिरसा मुंडा की वीरता और संघर्ष पर बनाए जा रहे फिल्म के पोस्टर की लॉन्चिंग महानायक अमिताभ बच्चन ने केबीसी के कार्यक्रम के दौरान की। बिग बी ने फिल्म का पोस्टर लॉन्च करते हुए अभिनेता सुची कुमार बधाइ दी और कहा कि भगवान बिरसा मुंडा ऐसे महान क्रांतिकारी और योद्धा थें, जिनपर फिल्म बनाया जाना बहुत ही कठिन है। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा पर फिल्म बनाए जाने पर काफी प्रसन्नता व्यक्त की। मालूम हो कि धरती आबा पर फिल्म बनाने की पूरी तैयारी पूरी कर ली गई है। साल 2024 के मार्च महीने में भगवान बिरसा मुंडा के गांव उलिहातू से फिल्म की शूटिंग शुरू करने की बात कही गई है।

पोस्टर लॉन्च करते महानायक अमिताभ बच्चन व अन्य।

सुची कुमार निभाएंगे भगवान बिरसा मुंडा का किरदार

इस फिल्म में अभिनेता सुची कुमार भगवान बिरसा मुंडा का किरदार निभाएंगे। वहीं फिल्म के निदेशक एन राघवन हैं। भगवान बिरसा मुंडा की जीवनी से प्रभावित होकर वह फिल्म बनाने के लिए काफी गंभीर हैं। अभिनेता ने कहा कि इस फिल्म को लेकर मैं बीते पांच सालों से भगवान बिरसा मुंडा की जीवनी पर अध्ययन कर रहा हूं। अभिनेता ने बताया कि उन्होंने भगवान धरती आबा के गांव जाकर उनके परिवार के सदस्यों से भी मुलाकात की और काफी बारीकी से पूरी जानकारी लेने की कोशिश की। साथ ही पुराने लोगों से मिलकर उनके रहन सहन, जीवन यापन पर जानकारी लेकर अन्य विषयों पर भी वे निरंतर अध्ययन कर रहे हैं। अभिनेता ने बताया कि लेखक मनीष कुमार पांडेय के द्वारा धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा पर एक पुस्तक लिखी गयी है, जिसका प्रकाशन राज मंगल पब्लिकेशन के द्वारा किया गया है। फिल्म के निदेशक एन राघवन चाहते हैं कि एक ऐसी फिल्म बने कि लोगों को लगे कि वे जीवित भगवान बिरसा मुंडा को देख रहे हैं, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ाई जारी रखी हुई है। यह फिल्म ऐसी होगी कि झारखंड ही नहीं, ना ही पूरे देश बल्कि विदेशों में भी लोग भगवान बिरसा मुंडा की वीरता से प्रेरणा लेंगे।

विधानसभा का शीतकालीन सत्र 15 से गूंजेगा सांसद धीरज साहू का मामला

कल सत्ता पक्ष व विपक्ष की होगी बैठक, बनेगी रणनीति

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड विधानसभा का शीतकालीन सत्र 15 दिसंबर से शुरू हो रहा है। सदन की कार्यवाही शांतिपूर्ण संचालित करने के लिए जहां एक तरफ तैयारी पूरी की जा रही है। दूसरी ओर विपक्ष की ओर से सत्ता पक्ष को घेरने की तैयारी की गई है। इस शीतकालीन सत्र में छह कार्यदिवस होंगे, जिसमें सरकार की ओर से कई बिल भी सदन के पटल पर लाने की तैयारी की गई है। विधानसभाध्यक्ष ने 14 दिसंबर को शीतकालीन सत्र को लेकर हाई लेवल बैठक बुलाई है, जिसमें सदन की कार्यवाही को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के नेताओं के साथ-साथ राज्य के आला

अधिकारी मौजूद रहेंगे। यह पहला मौका होगा जब नेता प्रतिपक्ष भी पंचम विधानसभा के इस सत्र के बैठक में मौजूद रहेंगे। शीतकालीन सत्र के दौरान सरकार को घेरने की तैयारी में जुटी प्रमुख विपक्षी दल भाजपा ने अपने विधायक दल की बैठक 14 दिसंबर को शाम सात बजे बुलाई है। इस बैठक में पार्टी द्वारा रणनीति बनाई जायेगी।जानकारी के मुताबिक शीतकालीन सत्र में भारतीय जनता पार्टी के द्वारा कांग्रेस सांसद धीरज साहू के घर आईटी रेड में मिले भारी भरकम राशि का मुद्दा भी सदन में उठाया जायेगा। भाजपा लगातार इस मामले में सांसद धीरज साहू पर कार्रवाई करने की मांग कर रही है और इस बहाने कांग्रेस पर हमला बोलने में जुटी है। भाजपा प्रदेश महामंत्री बालमुकुंद सहाय नेकहा कि आईटी की कार्रवाई के दौरान जिस तरह से कैश बरामद हुए हैं उससे साफ जाहिर होता है कि यह एक बड़ा मुद्दा है जिसे पार्टी प्रमुखता से रखने का प्रयास करेगी। इसके अलावा विपक्ष के द्वारा सरकार को भ्रष्टाचार, जनता से वादा खिलाफी सहित ऐसे कई मुद्दों पर घेरने की तैयारी की जा रही है।

BRIEF NEWS

संजय तिवारी को बेल देने से सीबीआई कोर्ट का इन्कार

RANCHI : मिड डे मील योजना के 100 करोड़ रुपये घोटाला करने के आरोपी संजय तिवारी को रांची सीबीआई कोर्ट से राहत नहीं मिली है।रांची सीबीआई कोर्ट ने उसकी जमानत याचिका पर फैसला सुना दिया है। अदालत ने संजय तिवारी की याचिका को खारिज करते हुए उसे बेल देने से इनकार कर दिया है। दरअसल, मिड डे मील के करीब 100 करोड़ रुपये एसबीआई धुर्वा ब्रांच से भानू कंस्ट्रक्शन के 34 खातों में अवैध तरीके से स्थानांतरित कर दिये गये थे। इसे लेकर पहले धुर्वा थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। बाद में मामले की जांच सीबीआई ने अपने हाथ ले ली। वर्ष 2021 में ईडी ने कांड संख्या ईसीआईआर 3/2021 दर्ज कर केस टेकअप किया है। संजय तिवारी के साथ राजू वर्मा और सुरेश कुमार भी इस केस में अभियुक्त हैं।

परीक्षा में उपस्थित छात्रा को रिजल्ट में दिखाया एब्सेंट

RANCHI : संत अन्ना इंटरमीडिएट कॉलेज की छात्रा ने जैक के नाम आवेदन लिखा है। छात्रा वंदना तिर्की इलेवंथ की परीक्षा में सभी विषयों में उपस्थित थी। छात्रा सभी विषयों की परीक्षा दी थी। लेकिन जब रिजल्ट आया तो छात्रा को सभी विषयों में एब्सेंट दिखा दिया गया है। जिसपर छात्रा ने आवेदन लिखकर अपनी आपत्ति जताई है। 11वी की परीक्षा में उसका सेंटर संत जेवियर कॉलेज रांची दिया गया था। संत अन्ना इंटरमीडिएट कॉलेज की छात्रा ने जैक के नाम आवेदन लिखा है। परीक्षा इसी साल अप्रैल में ली गई थी। इस संबंध में छात्रा ने कहा कि मैं अपनी परीक्षा देकर अगली परीक्षा की तैयारी में लग गयी। लेकिन इस प्रकार का रिजल्ट आने से मैं काफी चौंक गई। जब परीक्षा दिया तो फिर ऐसा क्यों हुआ, इसके लिए मैंने जैक को आवेदन लिखा है और इंतजार कर रही हूं कि कब तक इसका परिणाम आएगा।

जिला निर्माण प्रबंधन समिति की हुई बैठक

RANCHI : रांची डीसी राहुल कुमार सिन्हा ने मंगलवार को समाहरणालय में एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (जिला निर्माण प्रबंधन समिति) की बैठक की। बैठक में परियोजना निदेशक समेकित जनजाति विकास अभिकरण सुधीर बाड़ा, जिला कल्याण पदाधिकारी संगीता शरण, अंचलाधिकारी- लापुंग, नामकुम, नगड़ी, मांडर, बेड़ो, सम्बंधित डीएसपी और संबंधित पदाधिकारी मौजूद थे। डीसी ने एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय की बैठक करते हुए संबंधित सभी अधिकारियों को एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय के भवन निर्माण हेतु भूमि के संबंध में आ रही कठिनाइयों एवं इसके निराकरण के लिए कई निर्देश दिये। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (ईएमआरएस) का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले अनुसूचित जनजाति के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। उन्हें बेहतर रोजगार के अवसरों को सुरक्षित करने में मदद करने के लिए उच्च और व्यावसायिक शिक्षा और डिग्री लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

पीएम से शहीद अल्बर्ट एक्का के पैतृक गांव आने का आग्रह

RANCHI : परमवीर अल्बर्ट एक्का सम्मान समिति की ओर से प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। प्रेस को संबोधित करते हुए न्यूरोसर्जन और समिति के संरक्षक सदस्य डॉ विजय राज ने कहा कि समिति प्रधानमंत्री से अल्बर्ट एक्का के गांव के भ्रमण का आग्रह करती है। गुमला के जारी स्थित अल्बर्ट एक्का के पैतृक गांव का अगर प्रधानमंत्री दौरा करते हैं तो समिति गुमला जिले के सभी 159 पंचायतों में एक नि:शुल्क चिकित्सा सेवा शिविर का आयोजन करेगी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन और रेड क्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ शंभू प्रसाद सिंह ने कहा कि अल्बर्ट एक्का आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। एक्का के साहस ने कई आदिवासी युवाओं को सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। जिससे गुमला, सिमडेगा और खूंटी जैसे आदिवासी बहुल जिलों में बेरोजगारी में काफी कमी आयी।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

BRIEF NEWS

बिरमित्रपुर नगरपालिका कार्यालय का भाजपा ने किया घेराव

ROURKELA : भाजपा की ओर से विरमित्रपुर विधायक शंकर ओराम के नेतृत्व में भाजपा कार्यकताओं ने विरमित्रपुर विधान सभा क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों को लेकर विरमित्रपुर नगरपालिका कार्यालय का घेराव किया। विधायत शंकर ओराम ने सीधे तौर पर आरोप लगाया कि बीजेडी सरकार भ्रष्टाचार में डूबी हुई है। विधायक ने विरमित्रपुर में सड़कों की खराब स्थिति, स्वच्छता प्रबंधन की कमी, पेयजल समस्या, जागा मिशन में अनियमितता की शिकायत को लेकर आरोप लगाए।

पटमदा सीओ के खिलाफ लगे आरोपों की एडीसी ने नहीं की जांच

JAMSHEDPUR : आरटीआई कार्यकर्ता संघ के केन्द्रीय महासचिव सह आजसू पार्टी के जिला सचिव कृतिवास मंडल ने जिला उपायुक्त को एक पत्र लिखा है। इसमें उन्होंने जानकारी दी है कि 11 दिसंबर को दोपहर एक बजे पटमदा पंचायत सचिवालय में उनके परिवाद पत्र के आलोक में अपर उपायुक्त जयदीप तिग्गा के द्वारा जांच की जानी थी। इसके लिए अंचलाधिकारी पटमदा और शिकायत कर्ता कृतिवास मंडल को एक बजे पटमदा पंचायत सचिवालय में उपस्थित रहने का निर्देश दिया गया था। अपर उपायुक्त के निर्देश पर कृतिवास मंडल पंचायत सचिवालय में ससमय पहुंच गए थे, लेकिन अपर उपायुक्त और अंचलाधिकारी वहां नहीं पहुंचे। इस कारण उनके शिकायत की जांच अपर उपायुक्त के द्वारा नहीं की जा सकी। कृतिवास मंडल ने उपायुक्त से मांग की है कि अंचलाधिकारी पटमदा की जांच उच्च स्तरीय समिति बनाकर की जाए ताकि आम जनता को न्याय मिल सके। पत्र की प्रतिलिपि मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन को भी प्रेषित किया गया है।

गुवा पश्चिमी पंचायत लाउवा गांव होगा रोशन

JAMSHEDPUR : नोवामुंडी प्रखंड अंतर्गत गुवा पश्चिमी पंचायत के लाउवा गांव में आज मंगलवार को बिजली विभाग के अधिकारियों की टीम ने निरीक्षण कर लोगों को बिजली पोल लगाने के लिए जानकारी दी।ज्ञात हो कि लाउवा गांव में आजादी से पूर्व वहां के ग्रामीण अंधेरे में रहने को विवस थे।जबकि इस गांव में पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा एवं सांसद गीता कोड़ा ने भी भ्रमण कर गांव में बिजली पहुंचाने का ग्रामीणों को आश्वासन दिया था।इसके साथ ही सांसद गीता कोड़ा के प्रयास से अब लाउवा गांव में भी रोशन होगा।

चुनाव में सभी सीटें जीतने में जुटें कार्यकर्ता

JAMSHEDPUR : पूर्व मंत्री सह भाजपा के वरिष्ठ नेता बड़कुवंर गागराई, पश्चिम सिंहभूम के पूर्व जिलाध्यक्ष संजू पाण्डेय समेत भाजपा के दर्जनों पदाधिकारी क्षेत्र के दौरे के क्रम में सेल की मेघाहातुबुरु गेस्ट हाउस पहुंचे। गेस्ट हाउस में बड़कुवंर गागराई व संजू पाण्डेय ने भाजपा कार्यकताओं के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक के बाद लगातार न्यूज से बातचीत में बड़कुवंर गागराई ने कहा कि यह दौरा जिले के भाजपा कार्यकताओं में जोश भरने के लिये निरंतर किया जा रहा है। दौरा का मुख्य उद्देश्य वर्ष 2024 लोक सभा चुनाव में पश्चिम सिंहभूम संसदीय सीट समेत झारखण्ड के तमाम लोकसभा सीटों पर भाजपा प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित कर केन्द्र में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार ऐतिहासिक व मजबूत भाजपा सरकार का गठन करना है। इसके अलावे आगामी विधान सभा चुनाव में झारखण्ड में भाजपा की सरकार को पूर्ण बहुमत के साथ लाना, जिसमें पश्चिम सिंहभूम की तमाम विधानसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी का जीत सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि दौरा का अहम कारण यह भी है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार द्वारा पिछले 9 वर्षों के दौरान अनेक जन विकास योजनाये प्रारम्भ की गई है। उस योजनाओं को जन जन तक पहुंचाने के लिये केन्द्र सरकार की तरफ से विकसित भारत संकल्प यात्रा प्रारम्भ की गई है।

टांगरपाली में जमीन माफिया कर रहे खाली जमीन की बिक्री

70 हजार से लेकर एक लाख प्रति डिसमिल है कीमत

PHOTON NEWS ROURKELA : शहर के टांगरपाली समरा बस्ती की जमीन को दलाल प्लाटिंग कर बेच रहे है। इसका विरोध करने पर मंगलवार को तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। मामला तहसील के अधीन आने का कारण इसका समाधान तहसीलदार गांव के किस्मत भूमिज व किसान भूमिज इन अनाबादी जमीन प्लाटिंग कर बेच रहे है। जबकि गांव वालो का कहना है पर्दे के पीछे से पूरा काम इंद्रजीत साहू कर रहा है। उसका रिश्तेदार राउरकेला तहसील में कार्यरत है। तहसील कार्यालय से

अनाबादी जमीन का रिकॉर्ड निकालने के बाद यह पूरी जालसाजी की जा रही है। इन अनाबादी जमीनों को 70 हजार से लेकर 1 लाख रुपये तक प्रति डिसमिल बेचा जा रहा है। अनाबादी जमीन के पीछे जिनकी जमीन है, उनके लिए सड़क तक नहीं छोड़ा जा रहा है।

गांव के अनाबादी जमीन की प्लाटिंग हो रही थी। बस्ती के लोग एकजुट होकर इसका विरोध किए । हंगामे की स्थिति उत्पन्न होने पर अतिक्रमण कर रहे लोगो भागना पड़ा था। इससे पूर्व भी ग्रामीणों ने इसे लेकर उपजिलापाल, तहसीलदार व टांगरपाली पुलिस को इन लोगों के नाम से लिखित शिकायत कर कार्रवाई की मांग की थी। इसके बावजूद अब तक इस दिशा में कोई कार्रवाई नहीं होने से दलाल अब अनाबादी जमीन से रास्ता देने के लिए जमीन मालिकों से पैसे की मांग कर रहे है।

संबलपुर में ट्यूबवेल में फंसा बच्चा, बचाव का काम जारी

PHOTON NEWS SAMBALPUR : एक बंद पड़े ट्यूबवेल में एक अनोखी घटना देखने को मिली है। एक नवजात शिशु की रोने की आवाज परित्यक्त ट्यूबवेल से मिली। मंगलवार दोपहर कुछ लोग संबलपुर जिला रेंगाली थाना अंतर्गत लारीपाली स्थित श्रीराम नामक एक वृद्ध कुछ लोगो के साथ जंगल में गये थे। उन्होंने जंगल के अंदर एक परित्यक्त ट्यूबवेल से एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी। लोगों ने इसकी सूचना स्थानीय ग्रामीणों को दी। बाद में इसकी जानकारी पुलिस और फायर ब्रिगेड को दी गई।

बच्चे को ट्यूबवेल से निकालने के लिए जंगल में जुटे ग्रामीण व पुलिस। ● फोटोन न्यूज

सूचना मिलने के बाद फायर ब्रिगेड और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। इसी तरह, स्थानीय बीडीओ कृष्णचंद्र दलपति, तहसीलदार और रेंगाली पुलिस स्टेशन आईआईसी सुदर्शन पांडा के नेतृत्व में पुलिस टीम ने बच्चे को सुरक्षित बचाने का प्रयास कि उद्धार कार्य में लगे।

एक जेसीबी मौके पर पहुंची और खुदाई शुरू कर दी। किसी ने बच्चे को सुनसान ट्यूबवेल में फेंक दिया है। हालांकि, पुलिस का कहना है कि बच्चे को बचाने का काम होने के बाद मामले की जांच होगी। जांच के बाद ही असली घटना सामने आ पाएगी।

सबडेगा ब्लॉक जन शिकायत कार्यक्रम आयोजित, छह मामलों का त्वरित निबटारा

कार्यक्रम में जनसुनवाई के दौरान उपस्थित लोग। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS SUNDARGARH : जिला प्रशासन की ओर से आज सबडेगा ब्लॉक क्षेत्र में संयुक्त जन शिकायत सुनवाई की गई। मंगलवार की शिकायत सुनवाई में कुल 66 शिकायतें प्राप्त हुईं। इनमें से 44 व्यक्तिगत शिकायतें थीं, जबकि 18 सामूहिक शिकायतें थीं। इन शिकायतों में से 6 का तुरंत समाधान किया गया। इनमें तीन मुख्यमंत्री राहत कोष से और एक रेडक्रॉस से आर्थिक सहायता के आवेदन थे। प्राप्त शिकायतों में बारिश से धान की खेती को नुकसान, कार्ड संबंधी समस्या, भत्ता, पेयजल आपूर्ति आदि प्रमुख थे।

शिकायत सुनवाई में सुंदरगढ़ के पुलिस अधीक्षक प्रत्यूष दिबाकर, जिला परिषद के मुख्य विकास अधिकारी और कार्यकारी अधिकारी मनोज महाजन, अतिरिक्त जिलापाल अभिमन्यु माझी और सभी विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

इस्पात इंग्लिश मीडियम स्कूल में विज्ञान व कला-शिल्प प्रदर्शनी का हुआ आयोलन

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) के सेक्टर-20 स्थित इस्पात इंग्लिश मीडियम स्कूल में मंगलवार को 19वीं इंटर स्कूल विज्ञान प्रदर्शनी-2023 और पहली इंटर स्कूल कला एवं शिल्प प्रदर्शनी में आयोजित हुई। लगभग 350 छात्रों ने भाग लिया। प्रदर्शनी का उद्घाटन बोकारो स्टील प्लांट के अतिरिक्त प्रभार के साथ आरएसपी के निदेशक प्रभारी अतनु भौमिक ने किया।

प्रदर्शनी का निरीक्षण करते अतनु भौमिक व अन्य। ● फोटोन न्यूज

कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। अतनु भौमिक ने प्रदर्शनी का निरीक्षण किया। प्रदर्शनी में गहरी रुचि ली तथा छात्रों से उनकी परियोजनाओं के बारे में बातचीत की।

इस वर्ष की प्रदर्शनी का विषय ह्यसतत जीवन के लिए विज्ञानह्ल है। इस आयोजन में राउरकेला के 15 स्कूल भाग ले रहे हैं। विज्ञान प्रदर्शनी में 256 विद्यार्थियों ने तीन श्रेणियों में 128 प्रोजेक्ट प्रस्तुत किये। प्रतिभागियों ने डिजिटल और तकनीकी समाधान, ई-कचरे का पुनर्चक्रण, अंतरिक्ष बस्ती, सतत जीवन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र, वैकल्पिक ईंधन और इसकी कार्यप्रणाली और गणितीय मॉडलिंग और कई अन्य विषयों पर आधारित कई नवीन परियोजनाओं के माध्यम से अपने वैज्ञानिक कौशल का प्रदर्शन किया।

इसके साथ ही, पहली अंतर-स्कूल कला और शिल्प प्रदर्शनी में विभिन्न स्कूलों के 80 छात्रों की कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया गया। परियोजनाओं में 'इस्पात नगरी की सुंदरता' और 'अपशिष्ट से सर्वोत्तम' जैसे विषयों पर छान-बीन की गई, जिसमें सामग्रियों के पुनः उपयोग के रचनात्मकता पर प्रकाश डाला गया।

स्नातक पांचवें सेमेस्टर का रिजल्ट जारी करने की मांग को लेकर प्रभारी प्राचार्य को सौंपा ज्ञापन

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स आर्गनाइजेशन (एआईडीएसओ) जमशेदपुर नगर कमेटी का एक प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को एलबीएसएम कॉलेज की प्रभारी प्राचार्य से मिला। इस क्रम में संगठन की ओर से कोल्हान विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक के नाम ज्ञापन सौंपा गया। एआईडीएसओ की नगर उपाध्यक्ष बबीता सोरेन ने कहा कि पिछले सोमवार को कोल्हान विश्वविद्यालय द्वारा स्नाकोत्तर पीजी में नामांकन की तिथि जारी की है। लेकिन ऐसे अनेक विद्यार्थी ऐसे हैं, जिनका सभी सेमेस्टर का रिजल्ट क्लीयर है, लेकिन स्नातक पांचवें सेमेस्टर का रिजल्ट जारी नहीं हुआ है।

प्रभारी प्राचार्य को ज्ञापन देते प्रतिनिधिमंडल। ● फोटोन न्यूज

एआईडीएसओ की ओर से ज्ञापन में कहा गया है कि विश्वविद्यालय द्वारा दो महीने पहले पांचवें सेमेस्टर परीक्षा ली गई थी, लेकिन अभी तक इसका रिजल्ट जारी नहीं किया गया है। अतः स्नातक पांचवें सेमेस्टर का रिजल्ट जल्द जारी किया जाए ताकि इच्छुक सभी विद्यार्थी स्नाकोत्तर में नामांकन के लिए आवेदन कर सकें। प्रतिनिधिमंडल में एआईडीएसओ के नगर अध्यक्ष शुभम कुमार झा, सचिव सविता सोरेन, ब्रजेश गोप, राहुल महतो व अन्य शामि थे।

जमीन की अवैध बिक्री का विरोध करने पर बिरसा सेना के सदस्य से की मारपीट

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : एमजीएम थाना क्षेत्र में इन दिनों भू-माफिया काफी सक्रिय हो गए है। अनावाद बिहार सरकार की जमीन अवैध रूप से खरीद-बिक्री करने का विरोध करने पर बिरसा सेना के एक सदस्य की माफियाओं ने पिटाई कर दी। मंगलवार सुबह लगभग 9 बजे हुई इस घटना के बाद से बिरसा सेना के सदस्यों में आक्रोश है। बताया जाता है कि एमजीएम थाना अंतर्गत मुखियाडांगा स्थित देवघर पंचायत निवासी सरकार मुर्मू उर्फ टाइगर मुर्मू पर घात लगाकर भू-माफियाओं ने जानलेवा हमला कर

दिया। इस दौरान उन्हें लाठी डंडे और लात घुसों से भी बुरी तरह मारा पीटा गया, जिससे वे घायल हो गए। घटना उस वक्त हुई जब वे घर की ओर जा रहे थे। जानकारी मिलने पर बिरसा सेना के अन्य सदस्य मौके पर पहुंचे और घायल को इलाज के लिए एमजीएम अस्पताल पहुंचाया।

ग्रामीणों को देख फरार हुए आरोपी : सरकार मुर्मू के अनुसार मारपीट करने वालों में कुदरा टुडू, कोंदा टुडू और बबलू टुडू तीनों भाई शामिल थे। हमलावर उन्हें घसीट कर उनकी हत्या करने के इरादे से जंगल में ले जाना चाह रहे थे, परंतु ग्रामीणों को आता देख सभी वहां से फरार हो गए। बिरसा सेना के केंद्रीय अध्यक्ष दिनकर कश्यप ने कहा कि अगर पुलिस 24 घंटे के अंदर आरोपियों को गिरफ्तार नहीं करती है तो बिरसा सेना सड़क पर उतर कर आंदोलन करेगी और एनएच-33 को जाम करेगी।

डुमरिया प्रखंड में 10 हजार से अधिक लोगों की पेंशन स्वीकृत : संजीव सरदार

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : डुमरिया प्रखंड के कांटाशोल पंचायत में मंगलवार को आपकी सरकार आपके द्वार शिविर का आयोजन किया गया। पोटका विधायक संजीव सरदार ने बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित होकर लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण किया। साथ ही धातृ महिलाओं के गोदभराई में शामिल होकर महिलाओं को उपहार प्रदान किया। इस अवसर पर विधायक ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हेमंत सोरेन की सरकार ग्रामीणों के बीच जाकर उनके समस्याओं का समाधान कर रही है। उन्होंने कहा कि डुमरिया प्रखंड में ही अब तक 10 हजार से अधिक लोगों की पेंशन योजना स्वीकृत की गई है, जिससे बुजुर्ग, निशक्त, परित्यक्त महिलाएं लाभान्वित हो रही हैं।

विधायक ने लोगों को आह्वान करते हुए कहा कि स्वयं सभी लाभकारी योजनाओं में आवेदन भरें और अपने आसपास और कुटुंब जनों को भी आवेदन जमा करने के लिए प्रेरित करें। विधायक ने कहा कि किसान, पशुपालक, किशोरियों और वन क्षेत्र में निवास करने वाले ग्रामीणों के लिए सभी वर्गों के लिए हेमंत सोरेन की सरकार में योजनाएं संचालित की जा रही है। मौके पर डीसीएलआर नित निखिल सूरिन, बीडीओ चंचला कुमारी, प्रमुख गंगामनी हांसदा, उप प्रमुख चैतन मुर्मू, मुखिया डोमन हांसदा, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष मिर्जा सोरेन, बीस सूत्री अध्यक्ष भागात बास्के, भगत हांसदा समेत विभिन्न विभागों के पदाधिकारी और कर्मी उपस्थित थे।

आरवीएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में रंगारंग 'प्रारंभ' के साथ नये सत्र की शुरूआत

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : स्थानीय आरवीएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में मंगलवार को नए सत्र की शुरूआत हुई। इस अवसर पर रंगारंग ह्लप्रारंभह्ल शीर्षक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का का उदघाटन मुख्य अतिधि पिलटगार्ड फिल्टर्स प्राइवेट लिमिटेड के प्लांट हेड उदय शंकर शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान मंच पर मुख्य अतिथि के अलावा कॉलेज के अध्यक्ष बिंदा सिंह, विशिष्ठ अतिथि उक्त कंपनी के एचआर हेड सुरजीत पांडा, प्रोडक्शन इंचार्ज बीरेन्द्र यादव, कॉलेज के कोषाध्यक्ष शत्रुघ्न सिंह, कार्यकारी सदस्य शक्ति सिंह, प्राचार्य डॉ राजेश कुमार तिवारी एवं अन्य उपस्थित थे। अतिथियों एवं छात्रों को संबोधित करते हुए उदय शंकर ने कहा कि किताबों को अपना दोस्त बनाइए, क्योंकि भविष्य संवारने के लिए उससे अच्छा दोस्त और साधन दूसरा नहीं हो सकता है।

शत्रुघ्न सिंह ने कहा कि अपने नए छात्रों को देखकर काफी खुशी हो रही है और हम चाहते हैं कि आप जब इस कॉलेज से पढ़-लिख कर नौकरी में जाएं तो आपके माता-पिता और कॉलेज को आप पर गर्व महसूस हो। कॉलेज के प्राचार्य डॉ राजेश कुमार तिवारी ने कहा कि आप सब अपनी पढ़ाई अच्छी तरह पूरी करें। कॉलेज में उपलब्ध सुविधाओं का पूरा फायदा आप को मिलेगा। यह आप पर निर्भर करता है कि आप कितना ज्यादा से ज्यादा इन सुविधाओं का फायदा उठाते हैं। उन्होंने कहा कि आप एक अच्छे और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व के मालिक तभी बनेंगे जब आप अनुशासन में रहेंगे।

पांच दिवसीय कोल्हान विश्वविद्यालय इंटर कॉलेज क्रिकेट प्रतियोगिता 2023-2024 का शुभारंभ

टाटा कॉलेज ने बहरागोड़ा कॉलेज को नौ विकेट से हराया

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : पांच दिवसीय कोल्हान विश्वविद्यालय इंटर कॉलेज क्रिकेट प्रतियोगिता 2023-2024 का शुभारंभ मंगलवार को जमशेदपुर को ऑपरेटिव कॉलेज मैदान में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा राजेंद्र भारती, विशिष्ट अतिथि के रूप हसन इमाम मलिक मैनेजर स्पोर्टस डिवीजन टाटा स्टील, विशिष्ट अतिथि कोल्हान विश्वविद्यालय के वित पदाधिकारी डा विनय कुमार सिंह, महाविद्यालय प्राचार्य डा अमर सिंह, समेंत विभिन्न महाविद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षकगण उपस्थित थे। कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि कुलसचिव डा राजेंद्र भारती ने कहा कि खेल वर्तमान समय में लोगो के शरीर को स्वस्थय रखने के साथ ही रोजगार उपलब्ध कराने का भी मार्ग बन गया है। क्रिकेट के माध्यम से महेंद्र सिंह धोनी, सौरभ तिवारी जैसे क्रिकेटर इसके माध्यम से झारखंड का डंका पूरे देश ही नही विश्व में भी बजाया है। केवल अपने कार्य को युवा वर्ग कठिन

टाटा कॉलेज चाईबासा की टीम व अन्य। ● फोटोन न्यूज

परिश्रम एवं ईमानदारी करे तो सफलता तय है। महाविद्यालय के प्राचार्य डा अमर सिंह ने स्वागत भाषण ने युवाओं को खेल के प्रति प्रेरित करते हुए कहा कि उनमें केवल सच्ची लगन होना चाहिए सफलता उनके कदम चुमेगी। प्राचार्य ने कहा कि लंबे समय से महाविद्यालय के द्वारा इस खेल का मेजबानी बेहतर तरीके से करते आ रहा है जिसके सफलता के लिए खेल कमेटी के साथ ही सभी शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारी बधाई के पात्र है। मंच का संचालन डा अंतरा कुमारी ने किया। इस अवसर पर वर्कस कॉलेज के प्राचार्य डा एसपी महालिक,घाटशिला डाआर के चौधरी, करीम सिटी कॉलेज के प्राचार्य डा रेयाज, ग्रेजुएट कॉलेज के प्राचार्या डा वीणा प्रियदर्शी, वन विभाग के पदाधिकारी नितीश कुमार, डा संजय यादव, डा एस एन ठाकुर, डा राजीव कुमार, डा मंगला श्रीवास्तव, डा संजय नाथ, डा भूषण कुमार सिंह, डा आरएसपी सिंह, डा अमर कुमार, प्रोफेसर ब्रजेश कुमार,डा अशोक कुमार रवानी, खेल इंचार्ज डा रणविजय सिंह, डा अनिल कुमार झा, डा दुर्गा तामसोय, डा स्वाती सोरेन, डा किरण दुबे, डा राजेश कुमार, डा प्याली विश्वास, चंदन कुमार, प्रभात कुमार पांडे संजय यादव, शंकर रजक समेत काफी संख्या में शिक्षक व कर्मचारी उपस्थित थे।

गुब्बारा उड़ाकर किया गया कार्यक्रम का उद्घघाटन : अतिथियों के द्वारा कार्यक्रम का उद्घघाटन गुब्बारा उड़ाकर किया गया। इसके साथ ही अतिथियों के द्वारा खिलाड़ियों का परिचय कराया गया। इससे पूर्व महाविद्वयालय के द्वारा अतिथियों को स्वागत पौधा व शॉल प्रदान करके किया गया।

टाटा कॉलेज ने जीत से किया श्रीगणेश : प्रतियोगिता के प्रथम दिन बहरागोड़ा कॉलेज बहरागोड़ा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। लेकिन पुरी टीम महज 35 रनों पर ही सिमट गई।वही बल्लेबाजी करते हुए टाटा कॉलेज चाईबासा ने बहरागोड़ा को 9 विकेट से हराकर प्रथम मैच जीत लिया। टाटा कॉलेज चाईबासा ने महज 5.5 गेंद में जीत का लक्ष्य 36 रन महज एक विकेट खोकर बना लिया। वही टाटा कॉलेज चाईबासा के राहुल ने 7 विकेट अपने नाम किया।

नक्सलियों ने की पूर्व उप प्रमुख की हत्या, घटनास्थल पर छोड़ा पर्चा

PHOTON NEWS CHAIBASA : जिला गुदड़ी प्रखंड में पूर्व उप प्रमुख कमल पूर्ति की हत्या की जिम्मेदारी मंगलवार को भाकपा माओवादियों ने ली है। माओवादियों ने पुलिस मुखबिर के आरोप में कमल पूर्ति की हत्या की है। हत्या के बाद माओवादियों ने रायगढ़ा गांव से कुछ दूर मुख्य सड़क पर हस्तलिखित पर्चे छोड़े हैं, जिसमें पुलिस का एसपीओ बताकर सजा देने की बातें लिखी गयी हैं।

हालांकि, अभी तक पुलिस की टीम घटनास्थल नहीं पहुंची है। नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण पुलिस को घटनास्थल पर पहुंचने में वक्त लग सकता है। माओवादियों ने सोमवार दोपहर को घटना को अंजाम दिया। जानकारी के मुताबिक कमल पूर्ति नक्सलियों के भय से अपना गांव रायगड़ा छोड़कर सोनुआ में किराये के मकान में रह रहा था। सोमवार को अपने गांव रायगड़ा पहुंचा था।

बताया जाता है कि कमल पूर्ति

सोमवार सुबह 11 बजे घर से किसी काम से बाहर निकला था। इस बीच रास्ते में माओवादी दस्ते से भेंट हो गयी और रास्ते में ही दस्ते ने गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। साथ ही शव के साथ सड़क पर एक पर्चा लिखकर छोड़ दिया। घटना के बाद परिजन और ग्रामीण घटनास्थल पहुंचे और शाम को पुलिस को सूचना दी गई। अंधेरा हो जाने के कारण पुलिस सोमवार को घटनास्थल नहीं पहुंच सकी। मंगलवार सुबह पुलिस शव लाने के लिए रवाना हुई।

उल्लेखनीय है कि यह नक्सल प्रभावित क्षेत्र है। काफी दिनों से यह इलाका शांत था लेकिन कमल पूर्ति की हत्या के बाद एक बार फिर लोगों के चेहरे में नक्सलियों का खौफ बढ़ गया है।

पटना में छात्रा की हत्या का VIDEO

पिस्टल देखते ही भागी लड़की, दौड़कर शूट किया; गिरते ही दूसरी गोली मार दी

पटना:पटना के मसौढ़ी में सोमवार की सुबह-सुबह कोचिंग जा रही 12वीं क्लास की छात्रा की गोली मारकर हत्या कर दी। छात्रा की हत्या का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। 26 सेकंड के वीडियो में साफ दिख रहा है कि अनामिका(17) कोचिंग जा रही है। इसी बीच आरोपी पीछे से आता है। आहट पर छात्रा पीछे मुड़ती है। आरोपी उसके पास आकर बात करना चाहता है, वो मना करती है। तभी लड़का कमर से पिस्टल निकाल लेता है। अनामिका डर कर पीछे भागने लगती है, तो आरोपी दौड़कर उसे शूट कर देता है। छात्रा के गिरते ही वो सटाकर दूसरी गोली मारता है। वीडियो में छात्रा की मौत के बाद आरोपी पैदल भागते नजर आ रहा है। घटना मसौढ़ी के तारेगनाझमणिचक रोड की है, जहां घात लगाए सनकी युवक ने घटना को अंजाम दिया। चपौर पंचायत के काजीचक गांव निवासी कमलेश कुमार की बेटी अनामिका कुमारी पैदल गांधी मैदान स्थित एक

कोचिंग संस्थान में पढ़ने जा रही थी। एक सप्ताह पहले ही छेड़खानी करने पर छात्रा ने युवक को सड़क पर ही फटकार लगाई थी। सीसीटीवी फुटेज में दिख रहा है कि युवक ने अनामिका को जबरन रोककर बात करने की कोशिश की। छात्रा उससे बात नहीं कर रही थी। फिर आरोपी ने कमर से पिस्टल निकाली। पिस्टल देख अनामिका पीछे मुड़कर भागने लगी। युवक ने उसे खदेड़कर गोली मार दी। वो जमीन पर गिर पड़ी। युवक ने दूसरी गोली लोड कर उसकी कनपटी में दाग दी। फिर पैदल ही फरार हो गया। एएसपी शुभम आर्य ने बताया कि कुछ दिन पहले बदतमीजी करने को लेकर छात्रा ने आरोपित को फटकार लगाई थी। जिसके बाद उसने बदला लेने की धमकी दी थी। आशंका है कि उसी प्रतिशोध में छात्रा की हत्या कर दी। सीसीटीवी फुटेज से आरोपी की पहचान हो गई है। पुलिस उसके परिजनों से पूछताछ कर रही है। हालांकि आरोपी का नाम उजागर करने से पुलिस परहेज कर रही है। फुटेज में दिख रहा है कि दो गोली मारने के बाद आरोपी आश्वस्त हो गया कि छात्रा की मौत हो गई है, तब वह पैदल ही भाग निकला।

CM ने टेक्सटाइल पार्क-ब्रिटानिया बिस्किट फैक्ट्री का किया उद्घाटन

पटना: बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने बिहटा प्रखंड के सिकंदरपुर स्थित औद्योगिक क्षेत्र में बने करोड़ों की लागत से टेक्सटाइल पार्क और ब्रिटानिया बिस्किट फैक्ट्री का उद्घाटन किया। मौके पर उद्योग

मंत्री समीर महासेठ, वित्त मंत्री विजय चौधरी के अलावा विभाग के तमाम अधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान प्रदेश के उद्योग मंत्री समीर महासेठ ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का सपना है कि मजदूर बाहर ना जाकर बिहार में ही काम करें। यहां काम मिलने से बेहतर तरीके से अपना जीवन यापन कर सकेंगे। जो पैसा बाहर कमाते हैं। उससे ज्यादा पैसा बिहार में मिलने जा रहा है। सीएम ने टेक्सटाइल पार्क और ब्रिटानिया बिस्किट फैक्ट्री का उद्घाटन किया है, इससे अब प्रदेशवासियों को रोजगार मिलेगा। उन्होंने आगे कहा कि जो मजदूर यहां से बाहर जाकर काम करते थे। उन्हें अब यहीं पर उससे बेहतर रोजगार और पैसा मिलेगा। मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत कई तरह के कार्य किया जा रहे हैं। करोड़ों की लागत से बने दोनों फैक्ट्रियों में आज से कार्य भी शुरू कर दिए गए हैं।

सड़क हादसे में घायल शख्स की इलाज के दौरान मौत

भागलपुर: भागलपुर के जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अस्पताल में इलाज के दौरान एक शख्स की मौत हो गई। मृतक सिकंदर मांझी बांका समाहरणालय में चपरासी के पद पर तैनात था। पुलिस ने शव को कब्जे में

लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतक के पुत्र ने बताया कि सोमवार की सुबह उसके पिता सिकंदर मांझी साइकिल से बांका समाहरणालय ड्यूटी करने जा रहे थे। इस दौरान बांका ब्लॉक के सामने बाइक सवार ने जोरदार टक्कर मार दी। गंभीर हालत में डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद भागलपुर रेफर कर दिया। जहां इलाज के दौरान मंगलवार को उनकी मौत हो गई। जिसके बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। इस संबंध में पुलिस का कहना है कि सड़का हादसे में बुजुर्ग घायल हो गए थे। इलाज के दौरान आज मौत हो गई है। परिजनों के बयान के आधार पर पुलिस अग्रिम कार्रवाई कर रही है।

विवाहिता ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

भागलपुर :भागलपुर में पारिवारिक कलह के कारण एक महिला ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। दुप्पटे का फंदा बनाकर वह पंखे के सहारे लटक गई। घटना सोमवार की देर शाम कोयलाघाट इलाके की है। मृतका रुचि यादव उर्फ रचना (23) गौतम यादव की पत्नी थी। घटना के बाद से मृतक के परिजनों का रोकर बुरा हाल है। परिजनों के द्वारा घटना के मौके पर जोगसर थाने की टीम सबसे पहले पहुंची, जिसके बाद घटनास्थल की जांच के लिए एफएसल की टीम को बुलाया गया। जोगसर पुलिस घर में लगे सीसीटीवी कैमरे को भी खंगाल रही है। वहीं, घटना की जानकारी मिलते ही बरारी फैक्ट्री रोड से मृतका रुचि के मायके वाले भी मौके पर पहुंच गए। मृतका की मां सुनैना देवी ने बताया कि मेरी बेटी को सुसराल वाले लगातार प्रताड़ित कर रहे थे। इसी वजह से मेरी बेटी ने आत्महत्या की है। इन लोगों ने मेरी बेटी को मरने पर मजबूर कर दिया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। वहीं मृतका रुचि यादव की छोटी बहन ने बताया कि 15 दिन पहले मेरी बहन तीर्थ स्थल घूमने के लिए बाहर गई थी। इसी दौरान बहन के कमरे से काफी सारा गहना चोरी कर लिया गया था। दीदी के भैसुर के बेटे ने ही चोरी की थी। सोमवार की दोपहर 12.30 बजे के बीच बहन से बात हुई थी। शाम में छह बजे के बीच दोबारा कॉल करने पर मेरी बहन ने कोई जवाब नहीं दिया। जिसके बाद आठ बजे के करीब मेरे पिता को बहन के ससुराल वालों ने बताया कि आपकी बेटी ने आत्महत्या कर लिया है। उन्होंने बताया कि पिछले एक माह से मेरी बहन सही से बात नहीं कर रही थी। पूछने पर कुछ नहीं बताती थी। एक माह पहले उसे टायफायड की बीमारी हो गई थी। मेरी बहन का वर्ष 2016 में शादी हुई थी। उसे एक तीन वर्ष की बेटी काव्या आर्या है। मृतका रुचि यादव के मायके और ससुराल वालों के बीच घटना के बाद जमकर बहस हो गई। एक तरफ मायके वालों का कहना है कि रुचि के भैसुर और उसकी पत्नी समेत अन्य परिजनों के प्रताड़ना की वजह से रुचि ने यह कदम उठाया है। घटना के बाद से वह लोग अपने कमरे से बाहर निकल कर देखने तक नहीं आए। हालांकि मृतका के भैंसुर की तरफ से इस मामले में कुछ भी कहने से इनकार किया गया है।

2 बाइकों की आमने-सामने टक्कर

बेगूसराय :बेगूसराय में दो बाइकों की आमने-सामने की टक्कर में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि मृतक की मां और पत्नी गंभीर रूप से घायल हुईं है। दूसरे बाइक पर सवार पिता-पुत्री की भी हालत गंभीर है। सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

घटना मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बंदूआर ढला की है। मृतक विजय कुमार बंदूआर गांव का रहने वाला था। मृतक की पत्नी सीता कुमारी ने

बताया कि गांव से बाइक पर सवार होकर पति और सास के साथ राजौरा जा रहे थी। इस दौरान बंदुआर के समीप विपरीत दिशा से आ रही बाइक से टक्कर हो गई, उनके पति की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, घायल लक्ष्मी कुमारी ने बताया कि पिता के साथ बाइक पर सवार होकर मंझौल जा रही थी। इसी बीच ये हादसा हो गया। घटना की सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। घायलों को इलाज के अस्पताल में भर्ती कराया। शव को कब्जे में पोस्टमार्टम के लिए भेजा दिया।

ठाकुरगंज के महावीर पारीक को अमेरिका में मिला सम्मान

किशनगंज :किशनगंज के ठकुरगंज निवासी और वर्तमान में सिलीगुड़ी में रहने वाले महावीर पारीक को बीमा क्षेत्र में उनके द्वारा किये गए उत्कृष्ट सेवा के लिए डॉक्टरेट की उपाधि मिली है। बीमा के क्षेत्र में निरंतर योगदान के लिए अमेरिकन ईस्ट कॉस्ट यूनिवर्सिटी द्वारा उन्हें यह सम्मान दिया गया है। विश्वविद्यालय उन लोगों को यह सुविधा प्रदान करता है

जिनकी विशिष्ट क्षेत्र में असाधारण योगदान हो। महावीर पारीक ने 21 वर्षों तक एलआईसी में अपनी सेवा दी है और वे एमडीआरटी, टीओटी और सीओटी जैसे विशिष्ट सम्मान पाने वाले भागलपुर (किशनगंज) के एकमात्र एलआईसी सलाहकार हैं।

इस उपलब्धि के लिए महावीर पारीक ने भारतीय जीवन बीमा निगम के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करने साथ-साथ माता-पिता के आशीर्वाद और परिवार के अथक समर्थन के लिए हृदय से आभार व्यक्त किया है।

रेलवे ट्रैक पर मिला प्रेमी जोड़े का शव

1 दिन पहले पंचायत में पत्नी को छोड़ा था

जमुई : में मंगलवार सुबह रेलवे ट्रैक के पास से प्रेमी जोड़े का शव मिला है। युवक शादीशुदा था। वो हरियाणा में नौकरी करता था। लड़की भी उसके साथ वहीं जॉब करती थी। काम के दौरान ही दोनों को एक-दूसरे से प्यार हो गया। दोनों एक दूसरे से शादी करना चाहते थे। 1 दिन पहले ही युवक ने इसे लेकर अपने गांव में पंचायत बुलाई थी। युवक की पत्नी ने भी थाने में शिकायत की थी। सोमवार को वो थाने में गवाही देने के लिए निकला था। इसके बाद ट्रैक पर उसका शव मिला। स्थानीय लोगों ने इस घटना की सूचना झाझा थाना पुलिस और झाझा रेलवे पुलिस को दी। हालांकि पुलिस इस मामले पर कुछ भी नहीं कह रही है। शव अप-लाइन पर पड़े रहने के कारण रेल परिचालन घंटों तक बाधित रहा। रेल परिचालन प्रारंभ करने के लिए RPF ने शव को रेलखंड से हटाया। इसके बाद रेल का परिचालन शुरू किया गया। वहीं रेल पुलिस और झाझा पुलिस के सीमा विवाद के कारण सुबह 6 बजे से 8 बजे तक शव रेलवे ट्रैक पर ही पड़ा रहा। पुलिस ने बताया कि झाझा रेलवे स्टेशन से 1 किलोमीटर दूर सतीघाट दुधीजोर पुल नंबर 708 के पास अप-लाइन के रेलवे ट्रैक पर एक युवक और

युवती का शव बरामद किया गया है। इसकी वजह से करीब डेढ़ घंटे तक अप-लाइन का रेलवे परिचालन बाधित रहा। मामला प्रेम-प्रसंग का बताया जा रहा है। शव मिलने के बाद इलाके में हड़कंप मच गया है। झाझा थाने की पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर शव की तलाशी ली। दोनों के पास से आधार कार्ड मिला है। इसके आधार पर दोनों की पहचान हो पाई है। ग्रामीणों से मिली जानकारी के अनुसार दोनों के बीच करीब 1 साल से प्रेम-प्रसंग चल रहा था। मृतक लड़की की पहचान बरहट थाना क्षेत्र के गुगलडीह गांव के गुल्ली रविदास की बेटी बनीता कुमारी(20) और लड़के की पहचान लक्ष्मीपुर थाना के चिनवेरीया गांव के मोहन दास का बेटा प्रमोद कुमार(23) के रूप में हुई है। पुलिस ने दोनों के परिजन को इसकी सूचना दे दी है। वहीं प्रेमी प्रमोद कुमार दास शादीशुदा बताया जा रहा है। प्रेमिका शादीशुदा नहीं है। पुलिस ने दोनों के शव को उठाकर पोस्टमॉर्टम के लिए जमुई भेज दिया है। पुलिस परिजन के आने के बाद आगे की कार्रवाई करने की बात कही है। पुलिस अभी यूडी के तहत मामला दर्ज करने की बात कह रही है। इस मामले में मृतक प्रमोद की पत्नी संगीता कुमारी ने बताया कि दोनों हरियाणा में एक ही कंपनी में काम कर रहा था। दोनों के बीच प्रेम हुआ था। दोनों हरियाणा से ही 26 मई को भाग गए थे। महिला ने बताया कि इस बात को लेकर पंचायत भी हुआ था। थाने में आवेदन भी दिया गया था। बॉन्ड पेपर भी बनाया गया था। पंचायत में फैसला हुआ की डेढ़ लाख रुपया लकड़ी को देने की बात कही गई थी। संगीता कुमारी ने बताया कि सोमवार को घर से गवाही देने के बाद वह निकाला था। लड़की साथ में थी कि नहीं यह नहीं पता है। इस घटना के बाद मृतक की पत्नी का रो-रो कर बुरा हाल है। इस मामले में झाझा एसडीपीओ राजेश कुमार ने बताया कि स्टेशन मास्टर ने रेलवे ट्रैक पर युवक और युवती के शव मिलने की जानकारी दी थी। दोनों के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जमुई भेज दिया गया है। मामला प्रेम प्रसंग का बताया जा रहा है। पुलिस इस मामले की छानबीन कर रही है।

जॉब कैंप का आयोजन, 20 पदों पर ली जाएगी बहाली

ग्रेजुएट अभ्यर्थी बन सकते है फील्ड ऑफिसर

बक्सर: बक्सर जिले के युवाओं के लिए सुनहरा मौका है। आईटीआई परिसर में स्थित श्रम संसाधन विभाग द्वारा एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है। जहां युवा अपने शैक्षणिक प्रमाण पत्र के साथ 12 दिसंबर की सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक पहुंच अपनी योग्यता सिद्ध कर नौकरी पा सकते है। जिला नियोजन पदाधिकारी द्वारा इसकी जानकारी दी गई है। कम्पनी द्वारा चयनित युवाओं को झुंझुनूं, लोहारू, श्रीमाधोपुर, नवलगढ़ एवं चिरवा

जैसे शहरों में काम करने के लिए मौका देगी। रोजगार शिविर में दिनांक 12 दिसंबर को समावेश फिनसर्व प्राइवेट लिमिटेड के द्वारा भाग लिया जाएगा। जिसकी उम्र सीमा का निर्धारण 18-30 वर्ष किया गया है। कम्पनी के द्वारा इंटर एवं ग्रेजुएशन योग्यताधारी युवक और युवतियों को फील्ड ऑफिसर के पद पर नियुक्ति की जाएगी। कम्पनी के द्वारा कुल 20 पदों की रिक्तियां दर्शाई गई है। नियोक्ता के द्वारा वेतन एप्रोकसमेंटल 1000/- पर महीना (इंक्लूडिंग पीएफ & ईएसआई) प्रति महीना साथ में दर्शाया गया है। कार्य स्थल झुंझुनूं, लोहारू, श्रीमाधोपुर, नवलगढ़ एवं चिरवा है। जिला नियोजन पदाधिकारी अनीश तिवारी द्वारा बताया गया की इच्छुक आवेदकों से अपील किया है कि वे दिनांक 12 दिसंबर को जिला नियोजनालय बक्सर में सुबह 10:00 बजे से शाम 04:00 बजे तक सभी शैक्षणिक प्रमाण पत्रों जैसे आधार कार्ड, बायोडाटा, मैट्रिक एवं इंटर के प्रमाण पत्रों के साथ जिला नियोजनालय बक्सर में आकर अवसर का लाभ उठा सकते हैं। कार्य स्थल पर ही एनसीएस पर निशुल्क निबंधन किया जाएगा।

संक्षिप्त डायरी

जलसंसाधन मंत्री ने सीता पुल और रबर डैम का किया

गया : गया में मंगलवार को बिहार सरकार के जल संसाधन सूचना एवं जन-संपर्क विभाग के मंत्री संजय कुमार झा गया पहुंचे हैं। गया पहुंचते उन्होंने विष्णुपद मंदिर में भगवान विष्णु के गर्भ ग्रह में पूजा अर्चना की, पूजा अर्चना करने के बाद मंत्री संजय झा विष्णुपद स्थित देवघाट रबर डैम एवं सीता पुल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मंत्री संजय झा ने संबंधित पदाधिकारी को कई तरह के आवश्यक दिशा निर्देश दिए। मंत्री संजय झा ने कहा रबर डैम में समय-समय पर साफ-सफाई करवाते रहें ताकि पानी दूषित ना हो सके और पिंडदान करने वाले तीर्थयात्रियों को फल्गु रबर डैम तर्पण करने में कोई असुविधा न हो। जल संसाधन सह सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के मंत्री संजय कुमार झा सीता पुल और रबर डैम का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में मंत्री संजय कुमार झा ने संबंधित पदाधिकारियों से इसके संबंध में जानकारी भी ली और संबंधित पदाधिकारी को कई तरह के दिशा निर्देश दिए। मंत्री संजय कुमार झा के साथ कई समाजसेवी और पंडा समाज के गणमान्य लोग भी शामिल थे।

ज्यादा से ज्यादा लोग करें जैविक खेती

समस्तीपुर :समस्तीपुर के कृषि उत्पादन बाजार प्रांगण में मंगलवार से दो दिवसीय जैविक उद्यान मेला शुरू हुआ। बिहार राज्य जैविक मिशन, जैविक खेती स्वस्थ जीवन योजना के तहत जिले में जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य मेले की शुरूआत की गई। इस मेला का उद्घाटन स्थानीय विधायक अख्तरुल इस्लाम शाहीन, जिला परिषद अध्यक्ष खुशबू कुमारी, जिला कृषि पदाधिकारी दिनकर प्रसाद सिंह ने संयुक्त रूप से किया। इस मौके पर जिला कृषि पदाधिकारी ने कहा कि दिनकर प्रसाद सिंह ने कहा कि जिले को रासायनिक खाद से मुक्त करने की योजना के तहत जैविक मिशन योजना जिले में चलाई जा रही है। इस कृषि मेला में वैसे ही किसान शामिल हैं, जो रासायनिक खेती को बाय-बाय कर जैविक खेती कर रहे हैं। उन्होंने किसानों को आह्वान करते हुए कहा कि जिले के किसान ज्यादा से ज्यादा जैविक खेती करें। जैविक खाद से उत्पन्न अनाज एवं उन फल सब्जियां पूर्णत सुरक्षित होता है। बीमारी मुक्त होता है। मौके पर स्थानीय विधायक अख्तरुल इस्लाम साइन ने कहा कि खेतों की उर्वरा शक्ति बचाए रखती है तो लोग रासायनिक खाद का त्याग करें और जैविक खाद का उपयोग करें। इस मौके पर जिले में जैविक खेती करने वाले जिले के विभिन्न प्रखंडों के 11 किसानों को पुरस्कृत भी किया गया। मेला में आए किसानों को जैविक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

सड़क पर कूड़ा फेंकने वालों पर होगी कार्रवाई

मोतिहारी : भारत-नेपाल को जोड़ने वाली रक्सौल शहर के मुख्य सड़क के डिवाइडर पर कूड़ा फेंकने वालों को नगर परिषद चिन्हित कर जुमार्ने की राशि वसूल करेगी। इसको लेकर नगर परिषद के

कर्मचारियों को वैसे व्यक्तियों को चिन्हित करने का निर्देश दिया जा चुका है जो डिवाइडर पर कूड़ा फेंकते हैं। इसकी जानकारी कार्यपालक पदाधिकारी अनुभूति श्रीवास्तव ने दी। उन्होंने बताया की कई बार कूड़ा डिवाइडर पर नहीं फेंकने को हिदायत दी गई है उसके बावजूद लोग नही मान रहे है। दुकान व घर मे एकत्रित कूड़े को सड़क व डिवाइडर पर फेंक दिया जा रहा है। जिसको लेकर नगर परिसर के सफाई इंस्पेक्टर रामनरेश कुशवाहा व अन्य जमादार को निर्देश दिया गया है कि कूड़ा डिवाइडर पर फेंकने वालों को चिन्हित कर उनपे आर्थिक जुमार्ना लगाने को कहा गया है। वहीं बाटा चौक से कोइरियाटोला नहर चौक तक डिवाइडर पर फैले कूड़ा व कचरा का सफाई कराया जा रहा है। अनुभूति श्रीवास्तव ने बताया की रक्सौल शहर नेपाल का मुख्य द्वार माना जाता है। रक्सौल से नेपाल 70 प्रतिशत लोग इसी रास्ते जाते हैं। साफ सुथरा रखना हम सभी की जिम्मेवारी है।

सियासी लाभ की मंशा

तृणमूल कांग्रेस पार्टी की नेता महुआ मोइत्रा का संसद से निष्कासन एक बड़ी घटना है। बेशक उन पर लगे आरोप गंभीर हैं, लेकिन आरोप-प्रत्यारोप से अलग हटकर देखें तो कई और वजहें भी हैं, जिनसे यह घटना राजनीति के साथ-साथ सामाजिक परिवेश को भी लंबे समय तक उद्वेलित करती रहेगी। महुआ मोइत्रा पर न केवल निजी फायदे लेकर संसद में सवाल पूछने का बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा को दांव पर लगाने का भी आरोप है। कैश का लेन-देन अभी स्थापित नहीं हुआ है, लेकिन मेकअप के सामान गिफ्ट के रूप में लेने की पुष्टि खुद मोइत्रा कर चुकी हैं। ऐसे ही लोकसभा की वेबसाइट के लॉगइन और पासवर्ड शेयर करने की बात भी वह मान चुकी हैं। इतने गंभीर आरोपों को आंशिक रूप से ही सही, लेकिन कबूल कर लेने के बाद स्वाभाविक यही होता कि महुआ मोइत्रा और उनकी तरफदारी कर रहे लोग बचाव की मुद्रा में दिखाई देते। लेकिन न सिर्फ महुआ और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस बल्कि समूचा विपक्ष उनके साथ आक्रामक मुद्रा में खड़ा दिख रहा है। कारण शायद यह है कि महुआ पर लगे आरोपों के पीछे वे लोग हैं, जिनके पास उनसे नाराजगी की वजहें पहले से रही हैं। यह प्रकरण इस लिहाज से भी खास है कि इसमें आरोपों से जुड़े तथ्यों को लेकर अभियोजन और बचाव पक्ष के स्टैंड में ज्यादा अंतर नहीं है। दोनों पक्ष उन तथ्यों पर सहमत हैं, फिर भी एक पक्ष उसे गंभीर अपराध बता रहा है और दूसरा उसे अपराध मानने से इनकार कर रहा है। जाहिर है, सजा दिए जाने के बाद भी इस मामले पर बहस नहीं खत्म होने वाली। राजनीति में आने से पहले भी महुआ मोइत्रा का शानदार करियर रहा है। वह अपनी शर्तों पर जिंदगी जीने के लिए जानी जाती रही हैं। इस विवाद के साथ भी उनकी पर्सनल लाइफ के कुछ पहलू जोड़े गए, जिन्हें लेकर महुआ कतई डिफेंसिव नहीं रहीं। ऐसे में महिलाओं और लड़कियों का एक हिस्सा इस प्रकरण को इस रूप में भी देख सकता है कि क्या देश की मौजूदा राजनीति का पुरुषवादी स्वरूप एक मुखर और आजाद ख्याल महिला को बर्दाश्त नहीं कर पाया? जाहिर है इस प्रकरण से उपजे सारे सवालों के जवाब तत्काल नहीं मिलने वाले। कुछ जवाबों के लिए इंतजार करना होगा। लेकिन इतना तय है कि यह प्रकरण लंबे समय तक एक मिसाल के रूप में नागरिकों के अलग-अलग समूहों की याददाश्त में अलग-अलग वजहों से गूंजता रहेगा। फिलहाल तो इसने हालिया चुनावों में हार के बाद विपक्ष को एकजुट होने का एक मौका मुहैया कराया है। यह भी लग रहा है कि महुआ की पार्टी टीएमसी और विपक्ष इसे राजनीतिक रूप से भुनाने की कोशिश जरूर करेगा। यह देखना दिलचस्प होगा कि उन्हें इसमें कामयाबी मिलती है या नहीं।

बुरी नजीर

लोकसभा की आचार समिति (एथिक्स कमेटी) की रिपोर्ट के आधार पर 8 दिसंबर को आनन-फानन में ध्वनिमत द्वारा तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा का निष्कासन एक बुरा कदम है। यह निष्कासन तौर-तरीकों और तथ्यों के लिहाज से बुरा है। हालांकि, यह कदम चौंकाने वाला नहीं था। कमेटी के 6:4 बहुमत से, जिसमें एक निलंबित कांग्रेस सांसद का वोट भी शामिल है, कमेटी ने उन्हें ह्यअनैतिक आचरणह्न, ह्यविशेषाधिकार हननह्न और ह्यसदन की अवमाननाह्न का दोषी मानते हुए उनके निष्कासन की सिफारिश की थी। ये वो आरोप हैं जो भारतीय जनता पार्टी के एक सांसद ने लगाये थे और जिसके लिए वह मोइत्रा के अलग हो चुके पार्टनर पर भरोसा कर रहे थे। कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में 2005 में 11 सांसदों के निष्कासन की एक नजीर का हवाला दिया। इन सांसदों को पैसे लेकर सवाल पूछने के आरोप में एक न्यूज प्लेटफॉर्म के स्टिंग ऑपरेशन के बाद निष्कासित किया गया था। महुआ मोइत्रा पर लगे आरोपों के उलट, उस मामले में वीडियो सबूत उपलब्ध था जिसने एक मजबूत मामला बनाया। मोइत्रा ने संसद में पूछे जाने वाले सवालों को अपलोड करने के लिए अपना लॉगइन आईडी और पासवर्ड कारोबारी दर्शन हीरानंदानी से साझा किया। इस तथ्य को उन्होंने खुद कबूल किया। कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में यह माना कि उसके पास पैसों के लेनदेन का कोई सबूत नहीं है। उसकी रिपोर्ट में इस पहलू की ह्यकानूनी, गहन, संस्थानिक और समयबद्ध जांचह्न की मांग की गयी। इसके बावजूद, उसने पूरी मजबूती से मोइत्रा के निष्कासन की सिफारिश की और उनके द्वारा लॉगइन आईडी व पासवर्ड साझा किये जाने को आपराधिक कृत्य तक करार दे डाला। मोइत्रा द्वारा संसद में पूछे गये सवालों और हीरानंदानी समूह के कारोबारी हितों के बीच जोड़े गये रिश्ते में कोई दम नहीं है। मसलन, स्टील की कीमतों या बांग्लादेश के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों पर पूछा गया कोई सवाल बहुत से कारोबारी समूहों या उपभोक्ताओं के हित से जुड़ा हो सकता है। कमेटी ने कहा कि वह इस तथ्य को स्वीकार करती है कि कई सांसद अपने लॉगइन आईडी व पासवर्ड दूसरों के साथ साझा करते हैं, लेकिन उसने जबरदस्ती का मामला बना डाला कि मोइत्रा ने राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे में डाली है। यह दलील कि सांसदों को संसद के पोर्टल पर ऐसे दस्तावेजों तक पहुंच हासिल है जो सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं, एक बेवजह तूल दी गयी बात है। बल्कि, मसौदा विधेयकों को गोपनीय रखने की कोई जायज वजह नहीं है। विधेयकों के मसौदे संसद में चर्चा और मतदान के लिए लाये जाने से पहले सार्वजनिक प्रसार और बहस के लिए ही होते हैं।

आदिवासियों के लिए इंकलाब लिखेंगे विष्णुदेव

ANALYSIS

डॉ. रमेश ठाकुर

लंबे राजनीतिक अनुभव के अलावा पहचान जमीनी स्तर की हो। ऐसा राजनेता जो उनके बीच सदैव रहा हो। फिलहाल, ये सभी च्वाइस विष्णुदेव साय में आकर सिमट जाती हैं। विष्णुदेव साय प्रदेश के सर्वमान्य नेताओं में गिने जाते हैं। यही कारण है कि आदिवासी समुदाय चाहे कांगेस से ताल्लुक रखता हो, या अन्य किसी और सियासी दल से, सभी विष्णुदेव साय की नियुक्ति से खुश हैं। छत्तीसगढ़ नक्सलवाद से जकड़ा हुआ है। सभी चाहते हैं कि उन बंधक बेड़ियों से उन्हें कोई मुक्त करवाए। विष्णुदेव बेदाग और ईमानदार नेता हैं। पंचायत से लेकर केंद्र तक की महत्वपूर्ण सियासी जिम्मेदारियां उन्होंने संभाली हुई हैं। साय बेशक सांसद बनकर केंद्र की राजनीति में पहुंच गए हों पीछे, लेकिन उनका जुड़ाव स्थानीय स्तर पर कभी कम नहीं हुआ। गांव-कस्बों की टूटी नल-नालियों की परवाह हमेशा करते रहे। केंद्रीय मंत्री भी बने, लेकिन उनके भीतर से ग्राम प्रधान कभी नहीं निकला?

आदिवासी बाहुल्य प्रदेश छत्तीसगढ़ की कमान आदिवासी नेता विष्णुदेव साय को जबसे सौंपे जाने का ऐलान सार्वजनिक हुआ है, छत्तीसगढ़िया फूले नहीं समा रहे। खुश होना वैसे बनता भी है। आखिर इतने वर्षों बाद उनकी ख्वाहिशें पूरी जो हुई हैं। स्थानीय लोग शुरू से चाहते थे कि कोई आदिवासी समाज ही व्यक्ति प्रदेश का मुख्यमंत्री बने। ऐसा व्यक्ति जो 33 फीसदी आदिवासी समाज का चहेता हो और सामाजिक समूह को लेकर साथ चले। लंबे राजनीतिक अनुभव के अलावा पहचान जमीनी स्तर की हो। ऐसा राजनेता जो उनके बीच सदैव रहा हो। फिलहाल, ये सभी च्वाइस विष्णुदेव साय में आकर सिमट जाती हैं। विष्णुदेव साय प्रदेश के सर्वमान्य नेताओं में गिने जाते हैं। यही कारण है कि आदिवासी समुदाय चाहे कांगेस से ताल्लुक रखता हो, या अन्य किसी और सियासी दल से, सभी विष्णुदेव साय की नियुक्ति से खुश हैं। छत्तीसगढ़ नक्सलवाद से जकड़ा हुआ है। सभी चाहते हैं कि उन बंधक बेड़ियों से उन्हें कोई मुक्त करवाए। विष्णुदेव बेदाग और ईमानदार नेता हैं। पंचायत से लेकर केंद्र तक की महत्वपूर्ण सियासी जिम्मेदारियां उन्होंने संभाली हुई हैं। साय बेशक सांसद बनकर केंद्र की राजनीति में पहुंच गए हों पीछे, लेकिन उनका जुड़ाव स्थानीय स्तर पर कभी कम नहीं हुआ। गांव-कस्बों की टूटी नल-नालियों की परवाह हमेशा करते रहे। केंद्रीय मंत्री भी बने, लेकिन उनके भीतर से ग्राम प्रधान कभी नहीं निकला? वह इसलिए क्योंकि उनकी राजनीति की शुरूआत ही ग्राम प्रधानी से हुई। निश्चित रूप से साय जैसे जमीनी नेता अपने क्षेत्र, समुदाय और प्रदेश में नया इंकलाब लिखने का माद्दा रखते हैं। निश्चित रूप से वह अपने प्रयासों में सफल होने की कोशिश करेंगे। प्रदेश पर इस वक्त करीब 82,125 करोड़ रुपये का कर्ज है। इसके सिवाए महंगाई-बेरोजगारी की स्थिति से तो सभी वाकिफ हैं ही। इन सभी चुनौतियों से भी विष्णुदेव साय को बड़े साहस से लड़ना होगा। हालांकि उन्हें केंद्र सरकार का साथ भरपूर मिलेगा, क्योंकि डबल इंजन की सरकार में प्रयासों में गति आना स्वाभाविक होता है। बहरहाल, छत्तीसगढ़ की 33 फीसदी आदिवासी समुदाय के लिए साय मात्र मुख्यमंत्री ही नहीं बनेंगे, बल्कि वो उनके उम्मीदों के सौदागर भी बनेंगे, जो प्रदेश गठन के बाद अभी तक पूरी नहीं हुई। प्रदेशवासियों की शुरू से मांग रही है कि उनका मुख्यमंत्री उन्हीं के बीच का हो, ताकि उनकी जरूरतों और समृद्ध विरासत को आगे बढ़ा सके। ऐसे लक्ष्यों को पूरा करने में साय फिलहाल फिट बैठते दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने राजनीतिक करियर से लोगों के बीच वैसी ही छाप छोड़ी है। तभी, चुनाव कैंपेन के दौरान गृहमंत्री अमित शाह ने वोटरों को इशारा भी किया था कि विष्णुदेव साय को बड़ा आदमी बनाएंगे, उनके लिए कुछ बड़ा सोचा हुआ है। हालांकि, तब लोगों ने उनकी बात को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया था, सोचा कि चुनावों में नेता बहुत कुछ बोलकर चले जाते हैं। पर, इतना नहीं भूलना चाहिए कि नरेन्द्र मोदी-अमित शाह अलग किस्म की गारंटी देते हैं। जहां से लोग सोचना बंद कर देते हैं, ये जोड़ी वहीं से सोचना आरंभ करती है। द्रौपदी मुर्मू को जब राष्ट्रपति का उम्मीदवार घोषित किया गया था, तभी आदिवासी समाज समझ गया था कि कोई तो है जो उनके विषय में सोचता है? ये भी तय है कि छत्तीसगढ़ को आदिवासी मुख्यमंत्री देने के बाद मोदी-शाह की राजनीतिक लड़ाई यहीं नहीं धमेंगी। अगली फाइट ओडिशा के लिए शुरू होगी। ओडिशा भी आदिवासी बाहुल्य प्रदेश है। छत्तीसगढ़ के बाद वहां के लोगों को भी आदिवासी मुख्यमंत्री देने का संदेश दिया जाएगा, क्योंकि वहां भी चुनाव नजदीक हैं। जहां तक साय की बात है तो छत्तीसगढ़ की राजनीति में वो सम्मानीय चेहरा हैं। अजित जोगी के बाद लोग साय से बहुत उम्मीदें करते हैं, क्योंकि साय चार मर्तबा सांसद, दो बार विधायक, केंद्रीय राज्यमंत्री और दो-दो बार भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का दायित्व संभाल चुके हैं। इसके अलावा उनके पास संगठनात्मक कार्य का लंबा-चौड़ा अनुभव भी है। इस बार वो कुनकुरी विधानसभा से निर्वाचित हुए हैं। जहां उन्होंने अपने अपोजिट उम्मीदवार को अच्छे मार्जिन से मात दी। अपने दम पर जिले की सभी सीटें भाजपा को जितवाई। जबकि, कुनकुरी में अभी तक कांग्रेस की तूती बोलती रही थी। बहरहाल, प्रदेश के नए मुख्यमंत्री बनने जा रहे है साय से भाजपा का शीर्ष नेतृत्व कभी नाराज भी हुआ था, नाराजगी इस कदर थी कि उन्हें प्रदेश अध्यक्षी से भी हटा दिया गया था। बावजूद इसके उनकी निष्ठा पार्टी के प्रति जरा भी कम नहीं हुई। साय लगातार पार्टी गतिविधियों में सक्रिय रहे। संगठन को मजबूत करते गए। नए लोगों को भाजपा से जोड़ते रहे। धीरे-धीरे उन्होंने अपने क्षेत्र में ऐसा संगठन खड़ा किया कि मौजूदा चुनाव में दूसरे दलों का सूफड़ा तक साफ करवा दिया। वैसे, अगर उनके शुरूआती राजनीतिक जीवन पर नजर डालें तो आगाज 1989 में हुआ। सबसे पहले वह अपने ग्राम के सरपंच बनें, उसी दौरान उनका संघ से जुड़ाव हुआ, जिले, कस्बों व गांवों में शाखाएं स्थापित करवाईं। प्रचारक की भूमिका में आए। धीरे-धीरे संघ के बड़े नेताओं की नजरों में आ गए। संघ का प्रचार उन्होंने आदिवासियों के बीच में भी जबरदस्त किया। कई नक्सलियों का हृदय परिवर्तन कर भाजपा और संघ के प्रति प्यार पैदा किया। यही कारण है कि नक्सल प्रभावित सोच वाले व्यक्तियों ने भी इस बार दिल खोलकर भाजपा को वोट किया। छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद बड़ा मुद्दा है। साय के मुख्यमंत्री बनने के बाद कितना बदलाव आएगा, इस पर अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन साय को उम्मीद है कि उन्हें भटके रास्तों से वापस सही रास्तों पर लाने का प्रयास करेंगे। साय पर भाजपा ने पहली दफे भरोसा कर-के 1990 में ह्यतपकराह्न विधानसभा से उतारा था, जहां उन्होंने जीत हासिल की थी। इसके बाद साय रायगढ़ लोकसभा क्षेत्र से लगातार तीन बार के सांसद चुने गए। 2014 में वो मोदी-शाह के प्रिय बन गए। उनके संबंध अन्य दलों के नेताओं से भी मधुर हैं। सभी को साथ लेकर चलने में विश्वास करते हैं। फिलहाल, मुख्यमंत्री के रूप में उनका पहला वर्ष काफी चुनौतियों से भरा होगा, क्योंकि चुनावों में जो वादे किए हैं उन्हें जमीन पर उतारना होगा। हालांकि मुख्यमंत्री पद के लिए घोषित होने के बाद उन्होंने सबसे पहले चुनावी वादों को पूरा करने का ही प्रण लिया है। किसानों की समस्याएं, सरकारी योजनाओं को लागू करना, शिक्षा, सुरक्षा और चिकित्सा ऐसे मसले हैं जिनको अगर अन्य राज्यों से तुलना करें, तो छत्तीसगढ़ अब भी काफी पिछड़ा है। इसके अलावा सबसे बड़ी परीक्षा तो नक्सलवाद को कम करने होगी। खत्म करना तो आसान नहीं होगा? कम हो जाए, वो भी गनीमत रहेगी। कुल मिलाकर छत्तीसगढ़ियों को नए मुख्यमंत्री से हजारों उम्मीदें रहेंगी, देखने वाली बात होगी कि साय देशवासियों की उम्मीदों पर कितना खरा उतरते हैं।

लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

न्याय की आस में पचास साल से सलमान रुश्दी

लेखक सलमान रुश्दी की दिल्ली के पॉश एरिया फ्लैग स्टाफ रोड में पैतृक संपत्ति का कोर्ट में बीती आधी सदी से चल रहा कानूनी विवाद इस बात की चीख-चीख कर पुष्टि करता है कि हमारे यहां कोर्ट के रास्ते से न्याय पाना कितनी कठिन और थकाने वाली प्रक्रिया है। दरअसल सलमान रुश्दी के पिता अनीस अहमद रुश्दी ने पूर्व कांग्रेस नेता और सांसद भीखू राम जैन से 1970 में 3.75 लाख रुपये में संपत्ति बेचने का समझौता किया था। जैन ने रुश्दी को कुछ बयाना भी दे दिया था। पर रुश्दी सौदे से मुकर गए और इसके बाद से यह केस निचली अदालतों से देश की सर्वोच्च अदालत में झूल रहा है। भारत में अदालती मामलों में फैसला आने में देरी की वजह सभी स्तरों के न्यायालयों द्वारा पीड़ित व्यक्ति या संगठन को न्याय प्रदान करने में होने वाली है। आप जानते हैं कि देश में न्यायपालिका तीन स्तरों पर काम करती है - सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय, और जिला न्यायालय। अदालती मामलों को दो प्रकारों में बांटा गया है-सिविल और क्रिमिनल। 2022 में पूरे भारत में लंबित रहने वाली सभी कोर्ट केस की संख्या बढ़कर 5 करोड़ हो गई थी, जिसमें जिला और उच्च न्यायालयों में 30 से भी अधिक वर्षों से लंबित 169,000 मामले शामिल हैं। दिसंबर 2022 तक 5 करोड़ मामलों में से 4.3 करोड़ यानी 85% से अधिक मामले सिर्फ जिला न्यायालयों में लंबित हैं। सरकार स्वयं सबसे बड़ी वादी है, जहां 50 प्रतिशत लंबित मामले सिर्फ राज्यों द्वारा दायर हैं। सरकार और कानून की दुनिया के सभी पक्षों को इस बारे में सोचना होगा कि भारत में दुनिया के सबसे अधिक अदालती मामले क्यों लंबित हैं? 2018 के नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार, हमारी अदालतों में मामलों को तत्कालीन दर पर निपटाने में 324 साल से अधिक समय लगेगा। उस समय 2018 में 2.9 करोड़ मामले कोर्ट में लंबित थे। अदालतों में देरी होने से पीड़ित और आरोपित दोनों को न्याय दिलाने में देरी होती है। अप्रैल 2022 में बिहार राज्य की एक अदालत ने 28 साल जेल में बिताने के बाद, सुबूतों के अभाव में, हत्या के एक आरोपित को बरी कर दिया। उसे 28 साल की उम्र में गिरफ्तार किया गया था, 58 साल की उम्र में रिहा किया गया। भारत में 2022 में जजों की स्वीकृत संख्या प्रति दस लाख आबादी पर 21.03 की थी। जजों की कुल स्वीकृत संख्या सर्वोच्च न्यायालय में 34, उच्च न्यायालयों में 1108, और जिला अदालतों में 24,631 थी। भारत के विधि आयोग और न्यायमूर्ति वीएस मलीमथ की समिति ने जजों की संख्या प्रति दस लाख आबादी पर 50 तक बढ़ाने की सिफारिश की थी। जजों की स्वीकृत संख्या निर्धारित होने के बावजूद, भारत की अदालतों ने जजों की रिक्ति के कारण काफी समय से पूरी क्षमता में काम नहीं किया है। 2022 में भारत में जजों की असल संख्या प्रति दस लाख आबादी पर 14.4 की थी। यह संख्या 2016 में 13.2 की थी और तब से इसमें बहुत मामूली बदलाव हुआ है। इसकी तुलना में, जजों की संख्या यूरोप में प्रति दस लाख आबादी पर 210 है और अमेरिका में 150 हैं। गैर-न्यायिक कर्मचारियों के पद भी रिक्त हैं, कुछ राज्यों में 2018-19 में 25% तक रिक्तियां थी। सरकार ने कुछ समय पहले राज्यसभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया था कि कई अदालतों में लंबित मामलों की संख्या कुछ महीनों में 5 करोड़ के आंकड़े तक पहुंच सकती है। लंबित मामलों के मुद्दे पर चिंता जताते हुए सरकार ने कहा था कि ऐसे मामलों में सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट में कमी आ सकती है, लेकिन असली चुनौती निचली अदालतों में है। एक बात समझ लें कि लंबित मामलों की बढ़ती संख्या से सुप्रीम कोर्ट भी परेशान है। उसका मानना कहा है कि लंबित मामलों को निपटाने और सुनवाई टालने के तरीकों पर अंकुश लगाने के लिए सक्रिय कदम उठाए जाने की तत्काल जरूरत है। न्यायमूर्ति एस. रवींद्र भट और न्यायमूर्ति अरविंद कुमार की पीठ ने पिछले माह दिए अपने एक आदेश में जिला और तालुका स्तर की सभी अदालतों को समन की तामील कराने, लिखित बयान दाखिल करने, दलीलों को पूरा करने, याचिका को सुनवाई के लिए स्वीकार या इनकार करने की रिकॉर्डिंग और मामलों के त्वरित निपटारे आदि के निर्देश दिए। पीठ ने पांच साल से अधिक समय से लंबित पुराने मामलों की लगातार निगरानी के लिए संबंधित राज्यों के मुख्य न्यायाधीशों की ओर से समितियों के गठन का भी निर्देश दिया। कोर्ट ने कहा कि लोग न्याय की आस में अपने वाद दायर करते हैं, इसलिए सभी हितधारकों को यह सुनिश्चित करने की बड़ी जिम्मेदारी है कि न्याय मिलने में देरी के कारण इस प्रणाली में लोगों का विश्वास कम न हो। बेशक, भारत की विधि व्यवस्था पर सवाल खड़ी करती है न्याय मिलने में होने वाली अभूतपूर्व देरी। इस तरफ तत्काल कदम उठाने की जरूरत है। जरा सोचिए कि जब सलमान रुश्दी जैसी अंतरराष्ट्रीय शख्सियत को न्याय के लिए इतना जूझना पड़ रहा है, तो आम इनसान की कोर्ट में क्या हालत होती होगी। हमारे यहां कहा ही जाता है कि किसी को दुख देना है तो उसे किसी कानूनी केस में फंसा दो या फिर पुरानी यानी सेकेंड हैंड कार दिलवा दो। आप देश के किसी भी भाग में निचली अदालतों से लेकर हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में जाकर देख लें। वहां पर आपको इंसाफ के लिए जूझते बेबस लोग मिलेंगे। किसी को कुछ नहीं पता होता कि उनके केस का फैसला कब आएगा। अब इस समस्या को और लटकाना नहीं चाहिए। इसका तत्काल हल खोजना जरूरी है। देश के आम जन का देश की न्याय व्यवस्था पर भरोसा बना रहना चाहिए।

Social Media Corner

सच के हक में...

झारखण्ड अलग राज्य की लड़ाई में हमारा नारा होता था 'कैसे लेंगे झारखण्ड, लड़कर लेंगे झारखण्ड'। राज्य मिला पर मगर पूर्व की सरकारों के कारण पिछड़ा रहने को मजबूर रहा। हम विपरीत परिस्थितियों में राज्य को आगे ले जाने का काम कर रहे हैं। मगर हमारे विपक्ष लगातार कुछ न कुछ षड्यंत्र रच कर हमारा ध्यान भटकाने का प्रयास करते हैं। कुछ लोग इस उम्मीद में थे कि आज मैं इस कार्यक्रम में नही आ पाऊंगा। लेकिन चिंता मत करिए जब तक हेमन्त सोरेन जिंदा है, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा जिंदा है, इस राज्य पर बुरी नजर डालने वालों को हम कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे। इस वीर भूमि को बदनाम करने वालों को कभी बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

(सीएम हेमंत सोरेन का 'एक्स' पर पोस्ट)

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना यानी गरीबों को खाद्य सुरक्षा की 'मोदी गारंटी' देश के 81 करोड़ गरीब परिवारों के लिए वरदान साबित हो रही है प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना... अप्रैल 2020 में कोरोना काल के दौरान शुरू हुई विश्व की सबसे बड़ी गरीब कल्याण योजना के तहत अगले पांच वर्षों में लगभग 11. 80 लाख करोड़ रुपये खर्च कर 80 करोड़ गरीब परिवारों को मुफ्त राशन मुहैया कराया जाएगा।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी का 'एक्स' पर पोस्ट)

अपराधों की बदलती प्रवृत्ति पर हो ठोस कार्रवाई

कुछ दिन पहले 2022 के अपराधों का अखिल भारतीय ब्योरा राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो ने जारी किया। पिछले साल कुल 58.24 लाख मामले दर्ज हुए, जो 2021 की तुलना में 4.5 फीसदी कम थे। कई लोग इन आंकड़ों का आकलन राजनीतिक लिहाज से कर रहे हैं कि भाजपा या विपक्ष द्वारा शासित राज्यों में अपराधों की स्थिति क्या है? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चार जातियों का उल्लेख किया है- गरीब, महिला, युवा और किसान। इस वर्गीकरण के साथ दूसरे कई पैमानों पर भी अपराध के आंकड़ों के आकलन की आवश्यकता है। जब हम अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने की बात कर रहे हैं और हर राज्य विकास की दौड़ में होने का दावा कर रहा है, ऐसे में हमें देखना होगा कि किन कारणों से परंपरागत अपराधों में कमी आ रही है और दूसरे प्रकार के अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं? क्या आर्थिक विषमता बढ़ने से अन्य प्रकार के अपराधों में बढ़ोतरी हो रही है? परंपरागत अपराधों की संख्या 4.5 फीसदी कम हो गयी है, पर कई तरह के अन्य अपराध बढ़े हैं। परंपरागत अपराधों में प्रतिशोधात्मक हत्याओं के मामले ज्यादा हैं। इससे इंगित होता है कि हमारी पुलिस और न्याय व्यवस्था सही समय पर लोगों को न्याय देने में विफल रही है। आर्थिक अपराधों में 11.8 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। भ्रष्टाचार के मामलों में भी 10 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसे अपराधों को परंपरागत अपराधों से अधिक जघन्य माना है, क्योंकि इससे समाज और अर्थव्यवस्था दोनों का बड़े पैमाने पर विनाश होता है। इन अपराधों के बारे में वर्तमान प्रक्रिया और दंड के प्रावधान का मूल्यांकन होना चाहिए। लगभग 11,290 किसानों और मजदूरों ने 2022 में आत्महत्या की थी यानी हर दिन औसतन 30 ऐसी मौतें। महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु जैसे राज्यों में ज्यादा संख्या है। इससे जाहिर होता है कि जिन दक्षिणी राज्यों को हम विकास के पैमाने पर आगे मान रहे हैं, उन राज्यों में हाशिये के लोगों की जिंदगी बदतर हुई है। युवाओं की आत्महत्या में 4.2 प्रतिशत की चिंताजनक वृद्धि हुई है। इसमें छात्रों का बड़ा हिस्सा है। इससे यह सवाल पैदा होना स्वाभाविक है कि क्या बेरोजगारी जैसी वजहों से युवाओं में हताशा बढ़ रही है। बुजुर्गों के खिलाफ अपराधों में 9.3 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। बच्चों की बात करें, तो उनके विरुद्ध हुए अपराधों में 39.7 फीसदी की बहुत बड़ी बढ़ोतरी हुई है। इनमें साइबर अपराधों की भी बड़ी संख्या है। साल 2022 में पॉक्सो कानून के दायरे में आने वाले अपराधों की संख्या 62,095 रही। इस कानून के तहत तुरंत सुनवाई का प्रावधान है, पर जिस तरह से इसमें आने वाले अपराध बढ़ते जा रहे हैं, उनके निपटारे में 20 साल का समय लग सकता है। महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में चार फीसद की वृद्धि हुई है। ऐसे अपराध महानगरों में बढ़े हैं। इसे देखने के दो नजरिये हो सकते हैं। पहला यह कि महानगरों में अपराधों की सूचना देने के लिए एप और अन्य व्यवस्थाएं हैं। उसके बावजूद अपराधी दुस्साहस कर रहे हैं। दूसरा नजरिया यह हो सकता है कि जागरूक होते महानगरों में ऐसे अपराधों की रिपोर्टिंग अधिक हो रही है तथा दूर-दराज के इलाकों या ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसा नहीं हो पा रहा है। दुष्कर्म के मामले सबसे अधिक राजस्थान में दर्ज हुए। क्या ऐसे अपराधों का शिक्षा और समानता से संबंध है तथा परंपरागत सामंती समाज की धारणाएं इनसे प्रतिध्वनित हो रही हैं? एससी-एसटी के विरुद्ध अपराधों में 14.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मानवाधिकार के लिहाज से देखें, तो पुलिस हिरासत में सबसे अधिक मौतें गुजरात में हुई हैं। इस मसले का ठीक से आकलन करना जरूरी है। उल्लेखनीय है कि 2022 में जो पुलिसकर्मी मारे गये, उनमें अधिकतर हादसों का शिकार हुए।

पिछड़ने का सबब

पूरे साल की जीडीपी में वृद्धि से संबंधित अपने पूर्वानुमान को 50 आधार अंकों से बढ़ाते और मुद्रास्फीति में खाद्य मूल्य के झटके से प्रेरित अस्थिरता को चिन्हित करते हुए मानक (बेंचमार्क) ब्याज दरों के स्तर को बरकरार रखने का मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) का फैसला नीति निमार्ताओं के मुद्रास्फीति की उम्मीदों पर अंकुश लगाने में पिछड़ने के जोखिम से भरा है। खासकर, एमपीसी ने हैरतअंगेज तरीके से लगातार पांचवीं द्विमासिक बैठक में आरबीआई के 6.5 फीसदी के रेपो दर को अपरिवर्तित रखने का विकल्प चुना है। वह भी यह देखने के बाद कि प्रतिकूल आधार प्रभावों के साथ-साथ खाद्य कीमतों में व्याप्त अनिश्चितताओं की वजह से नवंबर-दिसंबर महीने में हेडलाइन मुद्रास्फीति बढ़ने की संभावना है और बार-बार लगने वाले खाद्य कीमतों के झटके अवस्फीति की जारी प्रक्रिया में बाधा डाल रहे हैं। निश्चित रूप से, अक्टूबर की शुरूआत में एमपीसी की पिछली बैठक के बाद से खुदरा मुद्रास्फीति में कमी आई है और हेडलाइन मुद्रास्फीति लगभग दो प्रतिशत अंक की नरमी के साथ अगस्त के 6.83 फीसदी से घटकर अक्टूबर में 4.87 फीसदी हो गई है। लेकिन, खुद एमपीसी के अपने हिसाब से, यह नरमी क्षणभंगुर हो सकती है क्योंकि नवंबर और दिसंबर में कीमतों में बढ़ोतरी फिर से तेज हो गई है और बढ़ती वैश्विक अनिश्चितता के बीच तेल की कीमतों और वित्तीय बाजारों में अस्थिरता के चलते कीमतों के अनुमानों को लेकर अतिरिक्त जोखिम है। नवंबर में किए गए आरबीआई के ताजा घरेलू मुद्रास्फीति की उम्मीदों से संबंधित सर्वेक्षण से पता चलता है कि अधिकांश परिवारों को अगले तीन महीनों और अगले एक साल में मुद्रास्फीति के तेजी से बढ़ने और इन अवधि में क्रमशः 9.1 फीसदी और 10.1 फीसदी के औसत स्तर पर बने रहने का अंदेशा है।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

टेस्ला ने फिर दी मालिकों को धमकी, एक साल के अंदर साइबरट्रक बेचने पर करना होगा 50,000 डॉलर का भुगतान

सैन फ्रांसिस्को।

एलन मस्क द्वारा संचालित टेस्ला ने एक बार फिर अपने नए लॉन्च किए गए साइबरट्रक के मालिकों पर स्वामित्व के पहले वर्ष के भीतर वाहन बेचने की कोशिश करने पर 50,000 डॉलर का मुकदमा करने की धमकी दी है। इलेक्ट्रेक की रिपोर्ट के अनुसार, टेस्ला ने अपने साइबरट्रक परचेस कॉन्ट्रैक्ट में एक क्लॉज को फिर से जोड़ा, जिसमें उन मालिकों पर मुकदमा करने की धमकी दी गई है जो खरीदारी के पहले वर्ष के भीतर साइबरट्रक बेचने की कोशिश करेंगे। यह क्लॉज, जिसे पहली बार नवंबर में पेश किया गया था और बाद में दोबारा जोड़े जाने से पहले वापस ले लिया गया था, कहता है कि साइबरट्रक खरीदारों को टेस्ला की अनुमति के बिना अपने स्वामित्व के पहले वर्ष के दौरान वाहन नहीं बेचने के लिए सहमत होना होगा। ऑटोमेकर वाहन के स्वामित्व के ट्रांसफर को रोकने के लिए निषेधाज्ञा राहत की मांग कर सकता है या आपसे 50,000 डॉलर की राशि या बिक्री या हस्तांतरण के लिए प्रतिफल के रूप में प्राप्त मूल्य, जो भी अधिक हो, की क्षतिपूर्ति की मांग कर सकता है। टेस्ला ने लगभग दो सप्ताह पहले अपने पहले कुछ साइबरट्रक वितरित किए। ऑस्टिन, टेक्सास में कंपनी के मुख्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में, मस्क ने लगभग एक दर्जन लोगों को ट्रक वितरित किया और भविष्यवाणी की कि यह एक नए, अधिक रोमांचक युग की शुरुआत करेगा।

इलेक्ट्रिक ट्रक के रियर-व्हील ड्राइव वर्जन की कीमत 60,990 डॉलर होगी, जो 2019 में 39,900 डॉलर थी। एक बार चार्ज करने पर इसकी रेंज 250 मील होगी। हालांकि, मॉडल 2025 तक उपलब्ध नहीं होगा। टेस्ला के ऑर्डर पेज के अनुसार, डुअल-मोटर और ट्राई-मोटर साइबरबीस्ट वर्जन 2024 में जल्द ही उपलब्ध होंगे और अधिक शक्तिशाली होंगे।

एडब्ल्यूडी साइबरट्रक की कीमत 79,990 डॉलर होगी, इसकी रेंज 340 मील होगी, यह 4.1 सेकंड में 0-60 मील प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ लेगा और इसकी टॉप स्पीड 112 मील प्रति घंटे होगी। ट्राई-मोटर ट्रिम की कीमत 99,990 डॉलर होगी, यह 845 हॉर्सपावर, 10,296 एलबी-फीट टॉर्क पैदा करेगा और इसकी रेंज लगभग 320 मील होगी।

इवेंट में बताई गई कीमतें 50,000 डॉलर की कीमत सीमा से काफी अधिक हैं, तकनीकी अरबपति ने लंबे समय से कहा था कि वाहन खुदरा बिक्री के लिए उपलब्ध होगा।

कॉर्निंग ने स्मार्टफोन ग्लास फैक्ट्री लगाने के लिए तमिलनाडु को चुना

नई दिल्ली।

तेलंगाना में सरकार बदलने के साथ खबर आई कि एप्पल के प्रमुख आपूर्तिकर्ता अमेरिका स्थित कॉर्निंग इंक ने घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माता ऑप्टिमस इंफ्राकॉम के सहयोग से अपनी 1,000 करोड़ रुपये की फैक्ट्री लगाने के लिए तेलंगाना के बजाय तमिलनाडु को चुना है।इससे पहले, तत्कालीन के. चंद्रशेखर राव के नेतृत्व वाली राज्य सरकार ने सितंबर में घोषणा की थी कि कॉर्निंग इंक ने अपनी गोरिल्ला ग्लास विनिर्माण फैक्ट्री लगाने के लिए तेलंगाना को चुना है। राज्य के पूर्व आईटी और उद्योग मंत्री के.टी. रामा राव के कार्यालय के एक बयान में कहा गया था कि तेलंगाना में प्रस्तावित फैक्ट्री से 800 से अधिक लोगों के लिए रोजगार पैदा होने की उम्मीद है। रामा राव ने न्यूयॉर्क में कॉर्निंग इंक के वरिष्ठ उपाध्यक्ष जॉन बायने, ग्लोबल ऑपरेशंस एक्जीक्यूटिव रवि कुमार और सरकारी मामलों की निदेशक सारा कार्टमेल से मुलाकात की थी। उन्होंने कहा था, कई इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण कंपनियां तेजी से हैदराबाद को अपने गंतव्य के रूप में चुन रही हैं। फॉक्सकॉन ने साल की शुरुआत में राज्य में एक महत्वपूर्ण निवेश किया था, और अब तेलंगाना में कॉर्निंग का निवेश तेलंगाना और भारत में स्मार्टफोन निर्माण के एक नए युग को आगे बढ़ाएगा। द इकोनॉमिक टाइम्स ने सूत्रों के हवाले से बताया कि कॉर्निंग इंक श्रीपेरंबुदूर के पास पिल्लईपक्कम में 1,000 करोड़ रुपये की विनिर्माण फैक्ट्री स्थापित करने पर विचार कर रही है और इसमें 300 लोगों को रोजगार मिलेगा। रिपोर्ट के मुताबिक, कॉर्निंग ने फॉक्सकॉन और पेगाट्रॉन जैसे अन्य एप्पल आपूर्तिकर्ताओं से निकटता के कारण तेलंगाना के बजाय तमिलनाडु को चुना है। जनवरी में ग्लोबल इन्वेस्टर मीट (जीआईएम) में समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर होने की संभावना है।

मुक्त व्यापार समझौते से ओमान में भारतीय निर्यात बढ़ेगाः रिपोर्ट

नई दिल्ली ।

भारत और ओमान के एक व्यापक मुक्त व्यापार समझौते पर पहुंचने से गैसोलीन, लोहा तथा इस्पात, इलेक्ट्रॉनिक और मशीनरी जैसे 3.7 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य के 83.5 प्रतिशत से अधिक भारतीय सामानों को ओमान में बढ़ावा मिलेगा।

एक रिपोर्ट में यह बात कही गई। शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिप्रोच इनिशिएटिव (जीटीआरआई) द्वारा तैयार की गई इंडिया-ओमान सीईपीए: गेटवे टू मिडिल ईर्स्टन मार्केट्स एंड बियॉन्ड' के अनुसार इन वस्तुओं पर वर्तमान में ओमान में पांच प्रतिशत आयात शुल्क लगता है। भारत और ओमान के बीच व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) पर बातचीत जारी हैं। समझौते पर पहुंचने से दोनों देश अपने बीच सहमत अधिकतम वस्तुओं पर सीमा शुल्क को काफी कम या समाप्त किया जा सकता है। रिपोर्ट में कहा गया कि नए व्यापार समझौते से प्रमुख निर्यात वस्तुएं जैसे मोटर गैसोलीन, लोहा व इस्पात उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक, मशीनरी, एल्यूमीनियम ऑक्साइड, कपड़ा, एल्यूमिना कैलक्लाइंड, प्लास्टिक, बिना हड्डी का मांस, आवश्यक तेल और मोटर कार पर शुल्क समाप्त होने से बेहद फायदा होगा।

बाजार को अमेरिकी मुद्रास्फीति के आंकड़ों का इंतजार

नई दिल्ली।

बाजार मंगलवार रात को अमेरिका से आने वाले मुद्रास्फीति डेटा और बुधवार को फेडरल रिजर्व के बयान पर नजर रखेगा। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी.के. विजयकुमार ने ये बात कही है।मंगलवार को बीएसई सेंसेक्स 32 अंक गिरकर 69,896 अंक पर कारोबार कर रहा है। एलएंडटी, मारुति 1 फीसदी नीचे हैं। उन्होंने कहा, बाजार में एक महत्वपूर्ण रुझान पीएसयू बैंकों और कुछ प्रमुख निजी बैंकों वाले सेक्टर में हो रहा संचय है। बाजार में तेजी का समर्थन करने वाले मूलभूत कारक कई हैं -- तीसरी तिमाही में जीडीपी विकास दर 7.6 प्रतिशत, सीपीआई मुद्रास्फीति में 4.87 प्रतिशत तक गिरावट, विनिर्माण पीएमआई 56 तक, ब्रेंट क्रूड 76 डॉलर तक नीचे और अमेरिकी 10-वर्षीय बॉन्ड यील्ड में 4.23 प्रतिशत तक सुधार -- इसके चलते एफपीआई खरीदारी कर रहे हैं। इन सकारात्मक आर्थिक खबरों

को 2024 के आम चुनावों के बाद राजनीतिक स्थिरता की उम्मीदों से बल मिल रहा है। उन्होंने कहा, बाजार आगे बढ़ने से पहले आने वाले महत्वपूर्ण आंकड़ों का इंतजार कर सकता है।

इस सप्ताह बाजार में आएंगे पांच कंपनियों के आईपीओ

मुंबई ।

इस सप्ताह इंडिया शेल्टर फाइनेंस और डोम्स इंडस्ट्रीज से हित कुल पांच कंपनियां अपना आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) लाएंगी। जिन तीन अन्य कंपनियों के आईपीओ इस सप्ताह खुलेंगे उनमें आईनॉक्स ग्रुप की इकाई आईनॉक्स इंडिया, जयपुर की खुदरा आभूषण कंपनी मोतीसंस ज्वेलर्स और मुंबई की सूरज एस्टेट डेवलपर्स हैं। संयुक्त रूप से इन कंपनियों के आईपीओ से कुल 4,200 करोड़ रुपए की राशि जुटाई जा सकेगी। पिछले महीने 10 कंपनियों का आईपीओ सफलतापूर्वक पूरे हुए हैं। पिछले महीने आईपीओ लाने वाली कंपनियों में टाटा टेक्नोलॉजीज भी थी। यह लगभग दो दशक में टाटा समूह की ओर से आईपीओ लाने वाली पहली कंपनी थी। इससे पहले 2004 में समूह की टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का आईपीओ आया था। भारतीय आईपीओ बाजार में चालू वित्त वर्ष में नवंबर तक 44 से ज्यादा निर्गम लाए गए हैं, जिनके माध्यम से लगभग 35,000 करोड़ रुपए जुटाए गए हैं। बाजार के जानकारों ने आईपीओ बाजार में पिछले कुछ सप्ताह में बढ़तीं गतिविधियों के लिए कई कारकों को वजह बताया। इनके अलावा केंद्र में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में जीत से निवेशकों की धारणा सकारात्मक हुई है। किफायती आवास वित्त कंपनी इंडिया शेल्टर फाइनेंस और पेंसिल निर्माता डोम्स इंडस्ट्रीज के आईपीओ 13 से 15 दिसंबर तक निवेशकों के लिए खुलेंगे। दोनों कंपनियों ने 1,200-1,200 करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य रखा है।

आईनॉक्स इंडिया का आईपीओ 14 दिसंबर से खुलकर 18 दिसंबर को बंद होगा। इसके अलावा, मोतीसंस ज्वेलर्स और सूरज एस्टेट डेवलपर्स के आईपीओ 18 दिसंबर को खुलकर 20 दिसंबर को बंद होंगे। इंडिया शेल्टर फाइनेंस के आईपीओ में 800 करोड़ रुपए के नए शेयर और 400 करोड़ रुपए की बिक्री पेशकश (ओएफएस) शामिल होगी। कंपनी ने आईपीओ के लिए मूल्य दायर 469-493 रुपए प्रति शेयर तय किया है।

रुपया एक पैसे बढ़कर 83.36 प्रति डॉलर

नई दिल्ली ।

रुपया मंगलवार को शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले एक पैसे की बढ़त के साथ 83.36 पर पहुंच गया। विदेशी कोषों के निरंतर प्रवाह और घरेलू शेयर बाजार में तेजी से भारतीय मुद्रा को बल मिला। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि हालांकि कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी से भारतीय मुद्रा की बढ़त सीमित रही। रुपया सोमवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 83.37 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.11 प्रतिशत की बढ़त के साथ 103.58 पर कारोबार कर रहा था।

सोने और चांदी के वायदा भाव में तेजी

- सोना 61,300 रुपए और चांदी 72,200 रुपए

नई दिल्ली । इस सप्ताह पहले दिन गिरावट के बाद दूसरे दिन मंगलवार को सोने और चांदी के वायदा भाव में तेजी देखी गई है। मंगलवार को दोनों के वायदा भाव तेजी के साथ खुले। सोने के वायदा भाव तेजी के साथ 61,300 रुपये और चांदी के वायदा भाव 72,200 रुपये के करीब कारोबार कर रहे हैं। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर सोने का बेंचमार्क फरवरी कॉन्ट्रेक्ट 119 रुपये की तेजी के साथ 61,236 रुपये के भाव पर खुला। फिलहाल यह कॉन्ट्रेक्ट 194 रुपये की तेजी के साथ 61,311 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव भी तेजी के साथ खुले। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क मार्च कॉन्ट्रेक्ट 217 रुपये की तेजी के साथ 72,081 रुपये के भाव पर खुला। फिलहाल यह 321 रुपये की तेजी के साथ 72,185 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी के वायदा भाव की शुरूआत आज तेज रही। कॉमेक्स पर सोना 1,997.80 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 1,993.70 डॉलर था। फिलहाल यह 7.50 डॉलर की तेजी के साथ 2,001.20 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 23.12 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव 23.05 डॉलर था। फिलहाल यह 0.15 डॉलर की तेजी के साथ 23.21 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

एलन ने एप्पल मार्ककॉम के पूर्व एग्जीक्यूटिव अपूर्व शर्मा को सीएमओ किया नियुक्त

नई दिल्ली।

एलन करियर इंस्टीट्यूट ने मंगलवार को एप्पल मार्ककॉम के पूर्व एग्जीक्यूटिव अपूर्व शर्मा को अपना मुख्य विपणन अधिकारी (सीएमओ) नियुक्त करने की घोषणा की।एप्पल में, अपूर्व शर्मा एप्पल के आइकोनिक डिवाइस, वेयरएबल्स और सर्विस के लिए ब्रांड बिल्डिंग, क्रिएटिव सॉल्यूशन और प्रोडक्ट मार्केटिंग के लिए जिम्मेदार थे। वह एलन के ब्रांड-बिल्डिंग, मार्केटिंग और पीआर प्रयासों को लीड करेंगे। शर्मा ने एक बयान में कहा, जैसा कि हम वर्ल्ड-क्लास एजुकेशन कंपनी बनाने की आकांक्षा रखते हैं, यह ऐसी प्रतिबद्धताओं के निर्माण के बारे में होगा जो न केवल सूचित करेगी बल्कि स्टूडेंट कम्युनिटी को एक उज्जवल भविष्य की कल्पना और प्राप्त करने के लिए प्रेरित और सशक्त भी बनाएगी। शर्मा के पास प्रोडक्ट मार्केटिंग, डिजिटल स्ट्रेटजी, क्रिएटिव कम्युनिकेशन, पार्टनरशिप और बिजनेस डेवलपमेंट में भूमिकाओं के साथ इंटरनेशनल जियोग्राफिक्स क्षेत्रों में बी2बी और बी2सी डोमेन में फैले 18 लावों से ज्यादा का एक्सपीरियंस है। वह पहले अमेजन, फ्लिपकार्ट और डीएक्ससी टेक्नोलॉजी जैसी टेक्नोलॉजी-फर्स्ट कंपनियों से जुड़े थे। एलन करियर इंस्टीट्यूट के सीईओ नितिन कुकरेजा ने कहा, एलन ने तीन दशकों से ज्यादा की अपनी यात्रा में छात्रों और अभिभावकों के साथ जबरदस्त ब्रांड इक्विटी अर्जित की है। मेरा मानना है कि अपूर्व का अनुभव एलन को एक ऐसे शिक्षा ब्रांड में बदलने में मदद करेगा जो एलन के लंबे समय से चले आ रहे लोकाचार और उसकी नई डिजिटल पहचान को जोड़ता है। शर्मा के पास आईएमटी गाजियाबाद और फ्रांस स्थित आईईएसईजी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट से दोहरी एमबीए और कंप्यूटर विज्ञान में स्नातक की डिग्री है।

मंगलवार को लाल निशाना पर बंद हुआ बाजार...सेंसेक्स और निफ्टी में गिरावट

मुंबई ।

शेयर बाजार में हफ्ते के दूसरे कारोबारी दिन मंगलवार को सत्र के दूसरे भाग में बिकवाली के दबाव में बेंचमार्क सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी लाल निशान पर बंद हुए। इस बीच ग्लोबल मार्केट में सकारात्मक रुझान देखने में मिले। मंगलवार के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 377 अंक कमजोर हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 91 अंक की गिरावट दर्ज की गई। व्यापक बाजारों में, बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांक क्रमशः 0.4 फीसदी और 0.27 फीसदी नीचे आ गए।

बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 377.50 अंक की गिरावट के साथ 69,551.03 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स में मंगलवार को 69,443.85 और 70,033.64

के रेंज में कारोबार हुआ। वहीं, दूसरी ओर नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के निफ्टी में भी 90.70 अंक की गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 20,906.40 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी में आज 20,867.15 और 21,037.90 के रेंज में कारोबार हुआ।

मंगलवार के कारोबार में बीपीसीएल, अपोलो अस्पताल, मारुति सुजुकी, सनफार्मा और एस्सार टैक्ससर्स निफ्टी के टॉप लूजर रहे। वहीं एचडीएफसी लाइफ, अल्ट्राटेंक सीमेंट, बजाज ऑटो, एसबीआई लाइफ इंस्योरेंस और एक्सिस बैंक टॉप गेनर रहे।

अगले वित्त वर्ष में भारत की वृद्धि दर 6.5 प्रतिश होगी

भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर अगले वित्त वर्ष 2024-25 में वैश्विक चुनौतियों के कारण घटकर 6.5 फीसदी पर आ जाएगी। एक निजी बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने यह अनुमान लगाया। मुख्य अर्थशास्त्री ने चालू वित्त वर्ष में वृद्धि के जोखिम के साथ 7 फीसदी की वृद्धि का अनुमान लगाया। आरबीआई ने पिछले शुक्रवार को चालू वित्त वर्ष के लिए अपना वृद्धि दर अनुमान 6.5 फीसदी से बढ़ाकर 7 फीसदी कर दिया है।

एआई घोटाले में स्पोर्ट्स इलस्ट्रेटेड के सीईओ बर्खास्त, मनोज भार्गव नए अंतरिम प्रमुख

सैन फ्रांसिस्को। स्पोर्ट्स इलस्ट्रेटेड के प्रकाशक ने पत्रिका के सीईओ रॉस लेविनसोहन को बर्खास्त कर दिया है, क्योंकि पत्रिका ने गैर-मौजूद लेखकों और एआई-जनरेटेड प्रोफ़ाइल चित्रों के साथ लेख प्रकाशित किए थे। द एरेना ग्रुप के निदेशक मंडल ने सोमवार देर रात लेविनसोहन के बर्खास्त कर दिया और मनोज भार्गव को अंतरिम मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में नामित किया। कंपनी ने एक बयान में कहा, यह पिछले सप्ताह की कार्रवाई के बाद हुआ है, इसमें कंपनी ने परिचालन अध्यक्ष और सीओओ एंड्रयू क्राफ्ट, मीडिया अध्यक्ष रॉब बैरेट और कॉर्पोरेट वकील जूली फेनस्टर के रोजगार को समाप्त कर दिया था। फ्यूचरिज्म की रिपोर्ट के अनुसार, एआई घोटाले ने मीडिया कवरेज की कड़ी आलोचना की और पत्रिका के कर्मचारियों ने नाराजगी जताई। कंपनी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष ग्रैडी ट्रिप ने कर्मचारियों को एक ईमेल में लिखा, तत्काल प्रभाव से, रॉस लेविनसोहन कंपनी और सीईओ के रूप में अपनी भूमिका छोड़ देंगे। यह पिछले सप्ताह तीन वरिष्ठ अधिकारियों के प्रस्थान के बाद हुआ है। भार्गव एनर्जी ड्रिंक ब्रांड 5-आवर एनर्जी के संस्थापक और द एरेना ग्रुप के बहुसंख्यक निवेशक हैं। एरेना ग्रुप के पास स्पोर्ट्स इलस्ट्रेटेड, द स्ट्रीट, परेड, मेन्स जर्नल और हबपेजेज जैसे ब्रांड हैं। कंपनी 265 से अधिक ब्रांडों के विविध पोर्टफोलियो में सामग्री एकत्र करती है, जो मासिक रूप से 100 मिलियन से अधिक उपयोगकर्ताओं तक पहुंचती है।

इंफोसिस के नए सीएफओ होंगे जयेश

मुंबई । आईटी सेक्टर की दिग्गज कंपनी इंफोसिस ने नए सीएफओ के नाम की भी घोषणा कर दी है। एक्सचेंज को दी गई जानकारी के अनुसार जयेश संघराजका 1 अप्रैल, 2024 से इंफोसिस के नए सीएफओ होंगे। हालांकि, नए सीएफओ के नाम की घोषणा के बाद भी कंपनी के शेयरों में मंगलवार को गिरावट देखने को मिल रही है। कंपनी के मुख्य वित्तीय अधिकारी के रूप में नीलांजन रॉय के इस्तीफे की घोषणा के एक दिन बाद मंगलवार, 12 दिसंबर को शुरुआती कारोबार में इंफोसिस के शेयर की कीमत में एक प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई। इंफोसिस का शेयर प्राइस 1,488.60 रुपये के पिछले बंद स्तर के मुकाबले 1,475 रुपये पर खुला और व्यापार के पहले 10 मिनट के अंदर 1.4 प्रतिशत गिरकर 1,468.50 रुपये के स्तर पर आ गया। कंपनी द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक निलंजन रॉय 31 मार्च 2024 तक कंपनी के सीएफओ पद पर बने रहेंगे। वहीं जयेश संघराजका 1 अप्रैल, 2024 से इंफो सिस के नए सीएफओ के पद को संभालेंगे। कंपनी के सीईओ और एमडी सलिल पारेख ने कहा कि रॉय 2018 से इंफोसिस के सीएफओ थे।

किआ सॉनेट फेसलिफ्ट जल्द होगी लांच

-6 एयरबग और अडास से लैस

नई दिल्ली ।

भारतीय कार बाजार में किआ सॉनेट फेसलिफ्ट जल्द लॉन्च होने जा रही है। किआ डीलरशिप में नई सॉनेट की बुकिंग शुरू हो चुकी है।नई सॉनेट एसयूवी को डीलरशिप पर 25 हजार रुपये की टोकन राशि देकर बुक कराया जा सकता है। कंपनी ने यह भी घोषणा की है कि ऐसे ग्राहकों जिन्होंने सॉनेट की बुकिंग पहले करवाई है उन्हें नए मॉडल की डिलीवरी की जाएगी। जानकारी के अनुसार, नई किआ सॉनेट नए फ्रंट और रियर बंपर और हेडलाइट सेटअप के साथ आएगी। इसके अलावा कार में नए डिजाइन का टेल लाइट सेटअप भी दिया गया है। कार के बूट डोर में कनेक्टेड लाइट स्ट्रिप भी इसके लुक में चार चांद लगाएगा।

2024 किआ सॉनेट फेसलिफ्ट का इंटीरियर भी पूरी तरह नए डिजाइन में दिखेगा। इसमें नए लेआउट वाले बड़े टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम के साथ वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले, ऑटो डिमिंग आईआरवीएम, ऑटो क्लाइमेट कंट्रोल, नया बोस साउंड सिस्टम, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल, एम्बिएंट लाइटिंग और कई तरह के नए फीचर्स मिलेंगे। किआ सॉनेट

फेसलिफ्ट में सबसे बड़ा अपडेट अडास लेवल-1 सेफ्टी सूट होगा। पैसेंजर सेफ्टी के नजरिये से इस कार में स्टैंडर्ड 6 एयरबैग, हेड्स-अप डिस्प्ले, 360 डिग्री कैमरा, एबीएस, ईएससी और कई नए सेफ्टी फीचर्स मिलेंगे। किआ सॉनेट फेसलिफ्ट में मौजूदा जनरेशन के 1.2 लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल, 1.0 लीटर टर्बो पेट्रोल और 1.5 लीटर डीजल इंजन को जारी रखा जाएगा। ट्रांसमिशन विकल्प में 5-स्पीड मैनुअल, 6 स्पीड मैनुअल, 6 स्पीड ढ्रूख्ख और 7 स्पीड ष्ठस्त गियरबॉक्स दिया जाएगा। बता दें कि सॉनेट फेसलिफ्ट को भारत में 15 दिसंबर को लॉन्च किया जाएगा। किआ सॉनेट फेसलिफ्ट में अंदर और बाहर कई डिजाइन और कॉस्मेटिक अपडेट देखने को मिलेंगे।

पटना में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में 600 निवेशकों के शामिल होने की संभावना

पटना।

बिहार की राजधानी पटना में 13 और 14 दिसंबर को होने वाले ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (बिहार बिजनेस कनेक्ट) में देश और दुनिया के 600 उद्यमी और निवेशक शामिल होंगे, जिसमे 31 हजार करोड़ के निवेश प्रस्तावों का करार होने की संभावना है। उद्योग विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि बिहार में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन नीतियां बनाने के साथ साथ आवश्यक आधारभूत संरचना का भी विकास किया गया है। बताया जाता है कि समिट के दौरान 500 करोड़ से अधिक का निवेश करने वाली 12 कंपनियों से अलग अलग करार होगा। 14 दिसंबर को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की उपस्थिति में यह करार होगा। इसमें सबसे अधिक करार फूड प्रोसेसिंग में होना है। अधिकारी ने बताया कि भारत के अलावा अन्य 15 देशों के 600 से अधिक निवेशक दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। राज्य के उद्योग विभाग द्वारा आयोजित शिखर सम्मेलन में प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर बहस, औद्योगिक क्षेत्रों का दौरा और बैठकें शामिल होंगी।

क्ले मॉडलिंग से बनाए अपना करियर

अगर आपको कलाकृतियां बनाने में दिलचस्पी है, आपकी सोच रचनाधर्मी है तो आपके लिए क्ले आर्ट के क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। कागज, लकड़ी और मिट्टी से बनी कलाकृतियों को अब घर में डेकोरेशन के रूप सजाया जाने लगा है।

मिट्टी और क्ले की मदद से अपनी रचनात्मकता का इस्तेमाल कर अगर आप घर बैठे ही बहुत कुछ नया बना डाल देते हैं तो अपने इस शौक को आप बतौर करियर की ओर मोड़ सकते हैं। कुछ समय पहले तक क्ले को महज बच्चों के खिलौनों के रूप में देखा जाता था लेकिन अब इसमें करियर की अपार संभावनाएँ जुड़ गई हैं।

क्ले मॉडलिंग की कला दिल से निकली हुई कला है। अगर आपका मन इसमें रमा हुआ है और मिट्टी से खेलना आपका शौक है तो आप इसमें बहुत आगे बढ़ सकते हैं।

आजकल विभिन्न प्रदर्शनियों से लेकर कला-संस्कृति से जुड़े बड़े आयोजनों में यह कला बखूबी इस्तेमाल की जाती है। एक बार आपका क्ले में हाथ साफ हो गया फिर आप सेरेमिक से लेकर नई-नई चीजों पर भी आसानी से काम कर सकते हैं। यही नहीं अगर आप एनिमेशन का कोई कोर्स करना चाहते हैं और आपकी क्ले मॉडलिंग पर अच्छी पकड़ है तो निश्चित तौर पर आप एनिमेशन में भी मास्टर हो सकते हैं।

मूलरूप से क्ले मॉडलिंग फाइन आर्ट्स का ही एक विषय है। यूँ तो आपमें हुनर और इस कला को सीखने की ललक है तो आप खुद-ब-खुद ही इसमें पारंगत हो जाएँगे।

इसके अंतर्गत क्ले मॉडलिंग का विषय खुद में बहुत रोचक है। इसी के साथ आप चाहें तो इसमें बैचलर और फिर मास्टर डिग्री भी ले सकते हैं।

■ अगर बैचलर्स नहीं करना चाहते तो शौकिया तौर पर हॉबी क्लासेस भी ले सकते हैं या फिर कोई शार्ट टर्म कोर्स भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड और गुड़गाँव के एपिसेंटर में भी मार्च और अप्रैल के माह में क्ले मॉडलिंग पर कार्यशालाओं का भी आयोजन किया जाता रहता है।

क्या है जरूरी

■ अगर आप क्ले मॉडलिंग में स्नातक करना चाहते हैं तो इसमें प्रवेश के लिए 12वीं में आपके 55 प्रतिशत अंक होने चाहिए। वैसे हर कॉलेज का अपना अलग-अलग क्राइटेरिया होता है। इसके अतिरिक्त बैचलर के बाद आप फाइन आर्ट्स में ही मास्टर भी कर सकते हैं।

■ इन सबके अलावा आप चाहें तो किसी प्रतिष्ठित इंस्टीट्यूट 3 और 6 महीने में शॉर्ट टर्म कोर्स भी कर सकते हैं।

■ जब तक आप खुद तसल्ली न कर लें कि जो आपने बनाया है वह सही है तब तक उसे बनाते रहने का प्रयास आपमें हो। ये सभी गुण क्ले मॉडलिंग के लिए बेहद जरूरी हैं। अगर से सभी गुण आपमें हैं तो आप इसे बतौर करियर चुन सकते हैं।

■ क्ले मॉडलिंग को बतौर करियर चुनने के बाद आप किसी स्कूल में आर्ट टीचर बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त अपनी खुद की प्रदर्शनी लगा सकते हैं। आजकल किसी भी इवेंट में भी क्ले मॉडलिंग का प्रयोग होता है ताकि उस स्थान को आकर्षक बनाया जा सके। इससे इतर मेट्रो स्टेशन की सजावट और कॉमनवेल्थ गेम्स में स्टेडियम की सजावट से लेकर खेल गाँव को सजाने में भी क्ले मॉडलिंग का खूब इस्तेमाल हुआ।

■ इस क्षेत्र में आप शुरुआती दौर में 15 से 20 हजार तक आसानी से कमा सकते हैं। उसके बाद यदि आपने इस क्षेत्र में मास्टर किया है तो आपकी कार्यकुशलता के अनुसार आपका वेतन बढ़ता चला जाता है।

जैमोलॉजी रत्नों में बनाएं उज्ज्वल भविष्य

रत्नों का बाजार भारत के कुल निर्यात का पांचवां हिस्सा है। इस बड़े बाजार से भारत को अच्छी खासी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है इसलिए इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए ट्रेनिंग के साथ ही तकनीकी ज्ञान होना नितांत आवश्यक है। इसके अलावा लोगों में पहले से ज्यादा रत्नों को धारण करने का चलन बढ़ा है। कई लोग ग्रहों को शांत करने, ग्रहों को अपने पक्ष में करने, व्यक्तिगत जीवन में आ रही बाधाओं से निपटने के लिए रत्न धारण करते हैं तो कुछ इसे आभूषण के तौर पर धारण करते हैं। रत्नों की खासियत के बारे में व्यापक जानकारी जैमोलॉजी के जरिए मिलती है। इसे हम यूं भी कह सकते हैं कि जैमोलॉजी के तहत रत्नों का अध्ययन किया जाता है।

गौरतलब है कि रत्नों को विलासिता, शान-शौकत की निशानी मानी जाती रही है। रत्नों को बादशाहत से जोड़कर भी देखा जाता रहा है, राजा-महाराज और बादशाह रत्नजड़ित आभूषण, मुकुट आदि धारण करते थे। पारंपरिक तौर पर रत्न जड़ित गहने बनाने का काम लोग पीढ़ियों से करते आ रहे हैं। केवल सुनार ही नहीं, उनके कारीगर भी यह काम सीखते और सिखाते आ रहे हैं। लेकिन आज इसके लिए पारिवारिक पृष्ठभूमि जरूरी नहीं है। इस काम के लिए आज ढेरों प्रशिक्षण केंद्र खुल गए हैं जो डिजाइन, निर्माण और बनावट की गहरी जानकारी देते हैं। इसके अलावा रत्नों की जांच परख के लिए अब तो अत्याधुनिक मशीनें भी आ गई है। फैशन और एसेसरीज के बढ़ते मार्केट ने जैमोलॉजी के क्षेत्र को बहुत विस्तार दिया है। हमारे देश में जयपुर तथा सूरत दुनिया के सबसे बड़े रत्न कटिंग सेंटर हैं। यहां लेटेस्ट डिजाइन और ट्रेंड्स के रत्न तराशे जाते हैं। भारतीय जैम एंड ज्वेलरी इंडस्ट्री तेजी के साथ उभरकर आई है। भारत में रत्न कटिंग करने वालों और कारीगरों को पूरी दुनिया में बहुत इज्जत से देखा जाता है।

वैश्विक जैम एंड ज्वेलरी मार्केट को बढ़ाने में भारतीयों का बड़ा योगदान रहा है। ब्रांडेड ज्वेलरी ने करियर के नए मौके सामने ला दिए हैं। ज्वेलरी निर्यात में भारत दुनिया के 70 फीसदी हिस्से का दावेदार है। पारंपरिक भारतीय रत्न जड़ित आभूषणों की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत मांग है। एक आंकलन के अनुसार भारत में कीमत के हिसाब से 60 फीसदी, वैल्यूम के हिसाब से 82 फीसदी और कट के हिसाब से 95 फीसदी हीरों की प्रोसेसिंग की जाती है। इसे देखते हुए कहा जा सकता है कि जैमोलॉजी के क्षेत्र में बेहतर कैरियर उपलब्ध है।

जैमोलजिस्ट्स के काम में रत्न की जांच, छंटाई और सही श्रेणी में बांटने का काम प्रमुखता से होता है। ये लोग रत्न निर्माताओं और डिजाइनर्स को उपरोक्त बातों की जानकारी प्रदान करते हैं। किसी व्यक्ति पर होने वाले रत्नों के असर के बारे में भी इनकी जानकारी अहम होती है। जैमोलजिस्ट्स में सूक्ष्म अवलोकन करने, गहराई से जांच करने और शुद्धता की प्रामाणिकता सिद्ध करने की क्षमता होनी चाहिए। इस विषय में पढ़ाई करने के लिए उच्चतम तकनीकी जानकारी के अलावा कटिंग, छांटने, कीमत और पहचान की जानकारी जरूरी है।

ज्वैलरी डिजाइनिंग के अलावा जैम कटिंग, जड़ाऊ जेवर बनाने, सुधारने तथा रत्न जड़ित घड़ियां, वस्त्र एवं एसेसरीज भी बनाई जाती है। इसके अलावा खुद डिजाइन तैयार करके बड़े ज्वेलर्स और कंपनियों को डिजाइन देने का काम भी बहुत मुनाफे का सौदा है। आभूषणों का बाजार बहुत बड़ा और बेहद प्रतियोगी है इसलिए काम शुरू करने से पहले सेल्स का अनुभव, मार्केटिंग की जानकारी तथा बिजनेस मैनेजमेंट के गुर सीखने जरूरी हैं। आज धोखाधड़ी के दौर में सिंथेटिक रत्न भी धड़ल्ले से ग्राहकों को बेचे जा रहे हैं इसलिए सही रत्न की पहचान के लिए सिर्फ भरोसा ही नहीं, साइंटिफिक तरीकों की जानकारी भी जैमोलजिस्ट्स को होनी जरूरी है। जैमोलॉजी कोर्स में दाखिले के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता बारहवीं उत्तीर्ण है। इसके साथ ही अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ होनी जरूरी है क्योंकि आपको देशी ही नहीं, विदेशी ग्राहकों और कंपनियों से भी तालमेल बैठाना होता है।

यदि आप घर से अपना काम शुरू करना चाहते हैं तो दो से तीन लाख रुपए का निवेश करना होगा लेकिन यह भी है कि आर्टिफिशियल ज्वेलरी के कारोबार में 100 फीसदी का मार्जिन भी मौजूद है।

संस्थान

■ इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ जैमोलॉजी, ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग, नई दिल्ली।
■ ज्वैलरी डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी इंस्टिट्यूट, ए-89, सेक्टर-2, नोएडा।
■ नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, गुलमोहर पार्क के पास, हौजखास, नई दिल्ली।
■ इंडियन जैमोलजिकल इंस्टिट्यूट, निर्मल टावर्स, 10वां माला, 26 बाराखंबा रोड, नई दिल्ली।
■ इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलजी, साउथ एक्सटेंशन पार्ट-1, नई दिल्ली।
■ इंडियन डायमंड इंस्टिट्यूट सुमुल डेयरी रोड, सूरत।

कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए एकाग्रता जरूरी

अक्सर काम करते वक्त ध्यान भटक जाता है। इससे कई लोग इस समस्या से परेशान है। लगातार काम करने के दौरान अथवा ज्यादा काम होने पर ध्यान भंग होने की स्थिति बन जाती है। मनौवैज्ञानिक और चिकित्सक भी बताते हैं कि जिनमें एकाग्रता की कमी होती है वे बहुत चिंतित, उदास, चिड़चिड़े और सहमे से रहते हैं। कुछ तो अपराध भावना या हीनभावना के शिकार भी हो जाते हैं। ऐसे लोगों में आत्मविश्वास की कमी, असुरक्षा की भावना, कुंठा, गुस्सा, चिड़चिड़ापन तथा घबराहट बढ़ जाती है। ध्यान भटकने से अक्सर गलतियां होने की संभावना रहती है। ऐसे कुछ उपाय हैं जिन्हें आप अपनाकर एकाग्रता बढ़ा सकते हैं।

■ एकाग्रता बढ़ाने के लिए मेडीटेशन और योग करें, इससे ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है।
■ एकाग्रता बढ़ाने के लिए किसी केंद्र बिंदु पर जितनी देर हो सके, ध्यान केंद्रित करें। धीरे-धीरे ध्यान केंद्रित करने का समय बढ़ाएं।
■ अपने कार्यों को टाले नहीं बल्कि योजनाबद्ध तरीके से और समय पर करें, इससे काम का अतिरिक्त बोझ भी नहीं पड़ेगा।
■ उद्देश्यों में कामयाब न होने पर भी नकारात्मक विचार मन में न लाए बल्कि कमियों को तलाशे और नई ऊर्जा के साथ लक्ष्य पाने में जुटे रहे।
■ सफलता प्राप्त होने पर स्वयं को सकारात्मक सोच से भरें, जिससे काम करने का उत्साह बना रहे।
■ अपनी काबलियत और कमजोरियों को पहचानने की कोशिश करें।
■ समय-समय पर आत्म अवलोकन करें।
■ एकाग्रता से काम करने के लिए माहौल को शांतिपूर्ण बनाए रखे।
■ काम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए खुद को नियंत्रित रखें ताकि आपका ध्यान केवल अपने निर्धारित काम के अलावा और कहीं नहीं जाए।
■ यदि काम करते समय ध्यान टीवी देखने या किसी मनोरंजन के साधन की ओर जाए तो पहले उसे पूरा करें, फिर काम करें। इससे ध्यान भटकेगा नहीं और आपको संतुष्टि भी मिलेगी।

एसिस्टेंट ग्रेड परीक्षा में संभावनाएं

केंद्र सरकार से जुड़े विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, स्वायत्तशासी संस्थाओं तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में हर साल एसिस्टेंट ग्रेड के पदों पर काफी बड़ी संख्या में युवाओं की भर्तियां की जाती हैं। इसी प्रकार की नियुक्तियां अर्ध सैन्य बलों और पुलिस संगठनों में भी होती हैं। यह संख्या प्रति वर्ष हजारों में होती है लेकिन यह निश्चित नहीं होती है। इसकी चयन प्रक्रिया में 20 से 25 वर्ष तक के ग्रेजुएट युवा शामिल हो सकते है।

प्रमुख रूप से स्टाफ सिलेक्शन कमीशन या कर्मचारी चयन आयोग द्वारा इस प्रकार की चयन परीक्षा का आयोजन केंद्र सरकार के अधिकांश मंत्रालयों और विभागों के लिए उपयुक्त प्रत्याशियों के चयन के लिए किया जाता है पर कई संस्थाएं और निकाय स्वयं भी ऐसी परीक्षाएं संचालित करते हैं।

कर्मचारी चयन आयोग द्वारा प्रति वर्ष एसिस्टेंट ग्रेड एग्जाम का संचालन किया जाता है। इसके जरिए रेल्वे बोर्ड सेक्रेटेरिएट सर्विस, सेंट्रल सेक्रेटेरिएट सर्विस, आर्म्ड फोर्सेस हेड क्वार्टर तथा भारत सरकार के अन्य विभागों में चयनित प्रत्याशियों को नियुक्त किया जाता है। परीक्षा के दो चरण होते हैं। पहले चरण में आब्जेक्टिव टाइप के प्रश्नों पर आधारित तीन घंटे की परीक्षा होती है इसमें चार विषयों की परीक्षा ली जाती है।

विषय- रीजनिंग एबिलिटी, जनरल अवेयरनेस अर्थमेटिक और लैंग्वेज (हिंदी या अंग्रेजी)। इनके 75-75 प्रश्न होते हैं। कुल 300 अंकों के ये सभी प्रश्न पत्र होते हैं। इसमें सफल उम्मीदवारों को ही मेन एग्जाम में शामिल होने की अनुमति मिल पाती है। प्रत्येक विषय के लिए अलग से टेस्ट पेपर दिया जाता है। प्रश्न अंग्रेजी और हिंदी दोनों ही भाषाओं में होते हैं। लैंग्वेज प्रश्न पत्र सिर्फ पास करने की जरूरत होती है। इसके अंक मेरिट बनाते समय जोड़े नहीं किए जाते हैं। बहुविकल्पी प्रश्न होते हैं जिनमें से एक उत्तर पर निशान लगाना होता है।

रीजनिंग एबिलिटी के प्रश्न पत्र में सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्न होते हैं। इसके लिए प्रैक्टिस गाइड्स, कंपीटिशन पर आधारित पत्रिकाओं तथा नेट पर उपलब्ध सामग्री का लाभ उठाया जा सकता है। जनरल अवेयरनेस के खंड में इतिहास, भूगोल, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मामलों, भारतीय अर्थव्यवस्था तथा सामान्य विज्ञान पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

अर्थमेटिक्स के पेपर में बुनियादी गणित से संबंधित प्रश्नों पर ज्यादा जोर होता है। प्रमुख भागों में अंकगणित, नंबर्स, स्टैटिस्टिक्स, ग्राफ तथा टाइम-डिस्टेंस आदि का नाम लिया जा सकता है। इस खंड में अपेक्षित सफलता पाने के लिए प्रैक्टिस ही एकमात्र विकल्प है।

भाषा (हिंदी/अंग्रेजी) के प्रश्न पत्र का स्तर क्वालीफाइंग टाइप का ही होता है। प्रत्याशी के भाषा के व्यावहारिक ज्ञान की परख करना मात्र ही इस प्रश्न पत्र का एकमात्र उद्देश्य होता है।

मुख्य परीक्षा

इसमें प्रतिभागियों की भाषा ज्ञान के अतिरिक्त स्वयं को व्यक्त कर पाने की क्षमता की भी जांच की जाती है। उत्तर विस्तृत तरीके से लिखने की बाध्यता होती है। इसी प्रकार का टेस्ट अंकगणित का होता है जिसमें एसिस्टेंट के कार्यों के अनुरूप गणितीय कैलकुलेशन कर पाने की क्षमता को परखा जाता है। इसमें भाषा और गणित पर आधारित दो प्रश्न पत्र होते हैं। इस परीक्षा में 200 अंकों का अंग्रेजी और 100 अंकों का गणित आधारित प्रश्न पत्र होता है।

■ भाषा - इसमें 50 अंकों का जनरल अंग्रेजी का एक खंड होता है जबकि शेष 150 अंकों के खंड में कम्युनिकेशन एवं लेखन कौशल पर आधारित प्रश्न शामिल किए जाते हैं।

■ अंकगणित - कुल सौ अंकों के इस दो घंटे की अवधि के प्रश्न पत्र में भी एलिमेंटरी गणित और सामान्य इस्तेमाल में आने वाले गणितीय अवधारणाओं से जुड़े प्रश्न पूछे जाते हैं।

ऐसे करें तैयारी

■ अंग्रेजी या हिंदी भाषा की तैयारी के लिए व्याकरण की तैयारी के अलावा रोजाना लिखने की आदत भी डालें।

■ जनरल अवेयरनेस के लिए अखबारों और करंट अफेयर्स पर आधारित पत्रिकाओं को पढ़ने से काफी लाभ मिलता है।

■ लॉजिकल रीजनिंग के लिए सैंपल टेस्ट पेपर्स जितने कर सकें उतना ही फायदा पेपर्स के समय मिलेगा।

■ गणित में आठवीं से दसवीं तक की एनसीईआरटी की किताबों का अभ्यास करने से काफी बुनियादी जानकारी मिल जाएगी।

■ शब्दों के अर्थ के साथ उनके इस्तेमाल का ज्ञान भी होना चाहिए।

■ कैलकुलेशंस के शार्टकट फार्मूलों को याद करके जाए, इससे समय की काफी बचत होगी।

■ कम समय में अधिक प्रश्नों को करने की बाध्यता को देखते हुए अपने टाइम मैनेजमेंट को दुरुस्त रखें।

पीएम मोदी के खिलाफ आपत्तिजनक लेख, संजय राउत के खिलाफ केस

यवतमाल । शिवसेना के मुखपत्र सामना में पीएम मोदी के खिलाफ आपत्तिजनक लेख के लिए शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। पार्टी के मुखपत्र सामना में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ कथित आपत्तिजनक लेख लिखने के आरोप में यवतमाल पुलिस ने शिवसेना (यूबीटी) नेता राउत के खिलाफ मामला दर्ज किया है। राउत के खिलाफ बीजेपी यवतमाल के संयोजक नितिन भुटाडा ने शिकायत दर्ज करा दी है। रिपोर्ट के मुताबिक, राउत अखबार सामना के कार्यकारी संपादक हैं। अपनी शिकायत में बीजेपी नेता ने दावा किया कि राउत ने 11 दिसंबर को पीएम मोदी के खिलाफ आपत्तिजनक लेख लिखा था। राउत के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 153 (ए) (विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देना), 505 (सार्वजनिक शरारत पैदा करने वाले बयान) (2) और 124 (ए) (नफरत या अवमानना ??का प्रयास) विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने और अन्य अपराधों के लिए उमरखेड़ पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया था। शिवसेना (यूबीटी) नेता ने कहा, मेरे खिलाफ मामला दर्ज हुआ है, क्योंकि मैंने प्रधानमंत्री के खिलाफ बोला था। देश में अभी भी लोकतंत्र है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने पूर्व सीएम उमर अब्दुल्ला को तलाक मामले में दिया झटका

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को तलाक मामले में झटका दिया। दिल्ली की अदालत ने नेशनल कॉन्फ्रेंस लीडर से अलग रह रहीं पत्नी पायल अब्दुल्ला से तलाक की मांग वाली याचिका खारिज की। हाईकोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि पारिवारिक अदालत की ओर से पारित आदेश में कोई खामी नहीं है और क्रूरता के लगाए गए आरोप भी साफ नहीं हैं। जस्टिस संजीव सचदेवा और जस्टिस विकास महाजन की बेंच ने कहा, फैमिली कोर्ट के आदेश में कोई खामी नहीं। क्रूरता के आरोप अस्पष्ट हैं। इसके पहले, दिल्ली हाईकोर्ट ने उमर को अंतरिम भरण-पोषण के रूप में पायल को हर महीने 1.5 लाख रुपये देने का निर्देश दिया था। साथ ही उन्हें अपने दोनों बेटों की पढ़ाई-लिखाई के लिए हर माह 60,000 हजार का भुगतान करने को कहा था। अदालत का फैसला पायल और दंपति के बेटों की ओर से दायर याचिकाओं पर आया था। इसमें निचली अदालत के 2018 के आदेश को चुनौती दी गई थी, जहां लड़कों के वयस्क होने तक क्रमश: 75,000 रुपये और 25,000 रुपये का अंतरिम गुजारा भत्ता देने का निर्देश था। उमर ने हाईकोर्ट में कहा था कि वह बच्चों के भरण-पोषण का अपना कर्तव्य निभा रहे हैं, मगर उनकी पत्नी अपनी वास्तविक वित्तीय स्थिति को छिपा रही हैं। इस पर अदालत ने कहा कि बेटे के वयस्क होने तक पिता को बच्चों के भरण-पोषण और शिक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं कर सकते। साथ ही पालन-पोषण के खर्च का बोझ केवल मां पर ही नहीं डाला जा सकता है।

अल नीनो के कारण भारत में इसबार सर्दी हुई कम

नई दिल्ली । साल 2023 भारत में मानसून उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा और इसका कारण अल नीनो को बताया जा रहा है। भारतीय मानूसन केवल भारत में होने वाली भौगोलिक प्रक्रिया ही नहीं है, बल्कि यह हिंद महासागर और यहां तक कि प्रशांत महासागर की गतिविधियों से भी प्रभावित होता है। इसके बाद प्रशांत महासागर में हर कुछ साल में दिखने में अल नीनो का प्रभाव मानसून को प्रभावित करे तब हैरान होने की बात नहीं लगती है। जहां भारत में सर्दियों ने दिसंबर के पहले सप्ताह तक भी जोर नहीं पकड़ा है, बताया जा रहा है कि इस साल ठंड की इस पूरी प्रक्रिया पर अल नीनो का प्रभाव होगा। भारत में सर्दी का मौसम बहुत कुछ हिमालय के प्रदेशों में बर्फबारी से प्रभावित होता है, इस पश्चिमी विक्षोभ या वेस्टर्न डिस्टर्बेंस बाधित भी करता है और सर्दियों को बढ़ाने में भी योगदान देता है। पश्चिम से चलने वाली हवाएं भारत के उत्तर और उत्तर पश्चिमी क्षेत्रों में बारिश का माहौल बनाती हैं, जिससे हिमालय में बर्फबारी होती है और उससे ठंडी हवाएं उत्तर भारत के मैदानी इलाकों को और अधिक ठंडा करने लगती हैं। अल नीनो प्रशांत महासागर में असामान्य रूप से गर्म पानी के जलवायु प्रभाव का नाम है। यह एक स्पेनिश भाषा का शब्द है जो दक्षिण अमेरिका के मछुआरों ने दिया है इसका मतलब छोटा लड़का होता है। इस प्रभाव की वजह से व्यापारिक पवनें कमजोर हो जाती हैं और यह गर्म पानी अमेरिकी महाद्वीपों के पश्चिमी किनारों की तरफ जाने लगता है। इससे प्रशांत महासागर में चलने वाले हवाएं दक्षिणी की ओर होने जाने लगती है। अल नीनो की वजह से बताया जा रहा है कि इस साल उत्तरी गोलार्द्ध में भीषण गर्मी पड़ी थी। लेकिन भारत में इसका असर नहीं दिखाई दिया क्योंकि इसने प्रभाव दिखाना ही करीब जुलाई के महीने में शुरू किया था जब भारत में मानसून का मौसम चल रहा था। इसकारण इसका असर भारत के मानसून पर तब पड़ा, लेकिन गर्मी पर नहीं पड़ा। पर यूरोप और उत्तरी अमेरिका में इसका असर जरूर दिखा। गौर करने वाली बात यह है कि जहां मौसम विभाग का कहना है कि सर्दी के बाकी मौसम में ना केवल न्यूनतम तापमान ज्यादा कम नहीं होगा, बल्कि ठंड का मौसम भी इस साल छोटा ही रहेगा। दिसंबर के दूसरे सप्ताह में जाकर ठंड का जोर पकड़ने के संकेत मिलना यहीं बताता है। अल नीनो का असर हर दो से सात साल में होता है। माना जाता है कि यह जलवायु परिवर्तन के कारण होता है। इसके अलावा एक और प्रभाव भी प्रशांत महासागर के इन्हीं इलाकों में होता है जिसे ला नीनो कहते हैं और यह अल नीनो के ठीक विपरीत होता है और भारत में इससे ठंड बढ़कर तीखी हो जाती है। लेकिन अल नीनो ला नीनो का असर की तुलना में ज्यादा बार देखने को मिलता है।

महुआ मोइत्रा को आधिकारिक बंगला खाली करने का निर्देश, 30 दिन के अंदर खाली करे

नई दिल्ली। तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा को कैश-फॉर-क्वेरी आरोपों पर लोकसभा से निष्कासित करने के कुछ दिनों बाद, संसद की आवास समिति ने आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय को पत्र लिखकर टीएमसी नेता को अपना आधिकारिक बंगला खाली करने का निर्देश आया हैं। जानकारी के मुताबिक महुआ को 30 दिन में सरकारी आवास खाली करने का नोटिस दिया गया है। मोइत्रा को 8 दिसंबर को लोकसभा से निष्कासित कर दिया गया था, जब सदन ने अपनी आचार समिति की रिपोर्ट को अपनाया था, जिसमें उन्हें संसद में प्रश्न पूछने के लिए एक कारोबारी से उपहार और अवैध संतुष्टि स्वीकार करने का दोषी ठहराया गया था। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे द्वारा दायर शिकायत पर शुरू की गई आचार समिति की जांच में मोइत्रा को अनैतिक आचरण और अपनी लोकसभा वेबसाइट लॉगिन क्रेडेंशियल अनधिकृत व्यक्तियों के साथ साझा करके सदन की अवमानना का दोषी पाया गया। पैनल ने कहा कि इस तरह के कृत्यों का राष्ट्रीय सुरक्षा पर अपरिवर्तनीय प्रभाव पड़ता है। निशिकांत दुबे ने मोइत्रा पर उपहार के बदले कारोबारी दर्शन हीरानंदानी के इशारे पर अडानी समूह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को निशाना बनाने के लिए लोकसभा में सवाल पूछने का आरोप लगाया। महुआ ने अपने निर्वाचन क्षेत्र कृष्णानगर सीट के लोगों के लिए एक संदेश देकर कहा कि वह कथित अन्याय के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखेंगी और इस लेकर उन्होंने अपनी प्रतिबद्धता भी जताई। पहली बार लोकसभा के लिए चुनी गईं मोइत्रा को शुक्रवार को सदन से निष्कासित कर दिया गया था। लोकसभा की आचार समिति ने उस रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया जिसमें मोइत्रा को 'पैसे लेकर सवाल पूछने' के मामले में 'अनैतिक एवं अशोभनीय आचरण' का जिम्मेदार माना गया था।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी के पास आया एक धमकी भर कॉल बेंगलुरु पुलिस की उड़ी नींद

बेंगलुरु । कर्नाटक के राज्यपाल का आवास एक गुमनाम कॉल के बाद अधिकारियों के रडार पर आ गया, जिसमें धमकी दी गई थी कि अंदर बम रखा हुआ है। हालाँकि, खोजबीन के बाद, पुलिस ने निष्कर्ष निकाला कि कॉल संभवत: एक धोखा थी। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के नियंत्रण कक्ष में फोन आया और दावा किया गया कि बम किसी भी समय फट सकता है, जिससे अधिकारी सकते में आ गए। बेंगलुरु पुलिस विभाग को तुरंत संपर्क कर साइट पर भेजा गया। पुलिस ने राज्यपाल के आधिकारिक आवास की तलाशी ली, लेकिन कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। अधिकारियों ने पता लगाया है कि कॉल बीदर जिले से की गई थी, जो पड़ोसी राज्य महाराष्ट्र के साथ सीमा साझा करता है। हालांकि, अपराधी का पता लगाने की कोशिश हो रही है। बेंगलुरु के पश्चिम डिवीजन के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) शेखर एच टेककन्नावर ने कहा कि एनआईए नियंत्रण कक्ष को आधी रात में एक गुमनाम कॉल मिली जिसके बाद बेंगलुरु पुलिस सतर्क हुई। काफी खोजबीन के बाद भी कुछ पता नहीं चला। हम मामले की जांच कर रहे हैं। अभी तक कोई गिरफ्तार नहीं हुई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, कर्नाटक के राज्यपाल थावर चंद गहलोत उस वक्त बेलगावी में थे और उन्हें कोई खतरा नहीं था। राजभवन के अधिकारी ने बताया कि जांच से पता चला कि कॉल बीदर से की गई थी।

पाक से नापाक संदेश-कश्मीर में तबाही मचा दो,

आतंकियों के निशाने पर आ गए भाजपा के दिग्गज नेता

नई दिल्ली (एजेंसी)। कश्मीर में कोई भी हलचल होती है तो धड़कने पाकिस्तान की बढ़ जाती हैं। फिर वही कायरना हरकतों पर उतर आता है। कश्मीर में चुनावी सुगबुगाहट से पहले ही आतंकी संगठन दहशहत में आ गए है। आतंकियों ने कश्मीर को दहलाने की धमकी दी है। इसके बाद भारतीय खुफिया एजेंसियां अलर्ट हो गई और उन्होनें सुरक्षा व्यवस्था को और सख्त कर दिया है।

जानकारी के मुताबिक जम्मू-कश्मीर के भाजपा नेताओं को आतंकी निशाना बना सकते हैं। इसके चलते उनकी सुरक्षा को लेकर बड़ा कदम उठाया जा सकता है। खुफिया दस्तावेजों के मुताबिक पाकिस्तान में बैठे आतंकवादियों के हैंडलर्स ने जम्मू कश्मीर में मौजूद आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा समेत तमाम आतंकवादी संगठनों को निर्देश दिया है कि वह आने वाले चुनाव के पहले कश्मीर में तबाही फैला दें। निर्देश के तहत उन्हें कहा गया है की विशेषकर वे कश्मीरी लीडर्स और कार्यकर्ता तथा अन्य लोग जो आने वाले चुनाव में भाग लेना चाहते हैं, उनको अपना निशाना बनाएं। पाकिस्तान में बैठे इन हैंडलर्स ने स्पष्ट कहा है की खास तौर पर भाजपा के लोगों को चुन-चुन कर निशाना बनाया जाए। पाकिस्तानी प्रशासन की सोच है कि यदि एक बार जम्मू कश्मीर में तबाही का मंजर बनेगा तो स्थानीय लोग और स्थानीय नेता आने वाले चुनाव का बायकॉट करेंगे।

दिलचस्प है कि आतंकवादी संगठन चुनाव में भाग लेने वाले कश्मीरी नेताओं को भी अपना निशाना बनाना चाहते हैं। जबकि उनमें से कुछ नेता उनके लिए जम्मू कश्मीर में खुलकर और छिपकर दोनों तरीकों से उनका साथ देने की कोशिश करते हैं। इसके साथ ही भाजपा के लोगों को इसलिए निशाना बनाने को कहा गया है। क्योंकि पाकिस्तान सरकार को लगता है कि यह राजनीतिक पार्टी जम्मू कश्मीर में चुनाव होने के लिए बड़े पैमाने पर अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं को जम्मू कश्मीर भेजेगी। खुफिया एजेंसियों के अलर्ट के बाद भारतीय सुरक्षा बलों ने इन आतंकवादियों का मुंह तोड़ जवाब देने के लिए कमर कस ली है। वहीं स्थानीय खुफिया एजेंसियों को कहा गया है कि वह आतंकवादियों के शरणदाताओं की पहचान करें, जिससे आतंकवादियों को छुपाने का मौका ना मिल सके।

मोदी सरकार सबसे झूठी : रघुराम राजन

नई दिल्ली। रिजर्व बैंक ऑफ़ इंडिया के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने एक किताब लिखी है। इस किताब का नाम ब्रेकिंग द मोस्ट है। यह बुक इन दिनों बड़ी चर्चा में है।पूर्व गवर्नर ने मोदी सरकार को सबसे झूठी सरकार,इस पुस्तक में बताया है। रघुराम राजन ने कोरोना की बीमारी में आंकड़ों को छुपाते हुए बहुत कम लोगों की मौत का आंकड़ा देने के लिए मोदी सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। रघुराम राजन का कहना है, कि भारत सरकार ने 5 लाख 60 हजार मौत होना बताया है। जबकि डब्ल्यूएचओ के अनुसार भारत में 50 लाख से अधिक लोंगो की मौत हुई है। रघुराम राजन ने कहा कि भारत सरकार द्वारा आंकड़ों में हेरा फेरी की जा रही है। वास्तविकता से उलट दिखाया जा रहा है। भारत सरकार ने समय रहते यदि अपनी आर्थिक पॉलिसी को नहीं बदला, तो भारत बहुत बड़े आर्थिक संकट में फंसने जा रहा है। उल्लेखनीय है प्रधानमंत्री के पद पर जब डॉक्टर मनमोहन सिंह थे।तब रघुराम राजन ने रिजर्व बैंक के गवर्नर का पद संभाला था। आर्थिक सुधारो को लेकर उन्होंने बहुत काम किया। मोदी सरकार के आने के बाद उनके और सरकार के बीच में मतभेद सामने आए। उसके बाद वह इस्तीफा देकर चले गए। राहुल गांधी का इंटरव्यू भी बाद में विवाद का विषय बना। रघुराम राजन ने जिस तरीके से किताब में आर्थिक स्थिति को लेकर खुलासा किए हैं। इससे यह किताब और रघुराम राजन दोनों ही चर्चाओं में आ गए हैं।

दिग्विजय सिंह ने केंद्र पर बोला बड़ा हमला- कहा

जम्मू-कश्मीर स्थानीय लोगों को दरकिनार कर निरंकुशता हावी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने केंद्र सरकार पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने सीधे तौर पर कहा कि केंद्र सरकार जम्मू कश्मीर में स्थानीय लोगों को नजरअंदाज कर रही है। वहां एक निरंकुश प्रशासन काम कर रहा है। संवेदनशील मामले को बहुत असंवेदनशील तरीके से संभाला जा रहा है और स्थानीय लोग पिछले चार वर्षों से प्रतिनिधित्व विहीन हैं। उन्होंने यह भी कहा कि स्थानीय लोगों की इच्छा को नजरअंदाज किया जा रहा है और सरकार राज्य के बाहर से लाए गए अधिकारियों के जरिए निरंकुश तरीके से काम कर रही है। सिंह ने यह बात राज्यसभा में जम्मू-कश्मीर से संबंधित दो विधेयकों पर बहस के दौरान कही।

जम्मू और कश्मीर आरक्षण (संशोधन) विधेयक, 2023 और जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक, 2023 पर बहस में भाग लेते हुए सिंह ने कहा कि वह विस्थापित लोगों के लिए आरक्षण के पक्ष में रहे हैं, लेकिन इस पर कोई स्पष्टता नहीं है। क्या वहां के स्थानीय लोगों के लिए मौजूदा आरक्षण को कम किया जाएगा। उन्होंने आगे आरोप लगाया कि जम्मू-कश्मीर में स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर नहीं मिल रहे हैं। सिंह ने पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की नजरबंदी का कारण भी जानना चाहा, जैसा कि उन्होंने दिन में दावा किया था। हालांकि, शाह ने तुरंत कहा कि वहां कोई भी नजरबंद नहीं है।शाह ने कहा, एल-जी ने सुबह ही इस पर स्पष्टीकरण दे दिया है। वह जहां चाहें जा सकती हैं। हम सुरक्षा भी प्रदान करेंगे।

इसके बाद सिंह ने फिर से जवाब में कुछ टिप्पणियां कीं, जिससे सत्ता पक्ष ने हंगामा खड़ा कर दिया। सदन के नेता पीयूष गोयल ने कहा कि यह गलत आरोप है। इसके तुरंत बाद सभापति जगदीप धनखड़ ने सिंह की टिप्पणियों को यह कहते हुए रिकार्ड से हटाने का निर्देश दिया कि यह व्यक्तिगत टिप्पणी और पूर्वाग्रहपूर्ण थी। कांग्रेस सांसद सैयद नसीर हुसैन ने कहा, नेहरू जी की कैबिनेट के फैसले के कारण ही जम्मू-कश्मीर हमारे देश में है। कांग्रेस सांसद रजनी पाटिल ने कहा, अमित शाह जी ने कहा था- जैसे ही जम्मू-कश्मीर में हालात सामान्य हो जाएंगे, हम वहां चुनाव कराएंगे और इसे राज्य का दर्जा देंगे। मैं उन्हें याद दिलाना चाहूंगी कि ऐसा हुए 4 साल हो गए हैं,.लेकिन आज तक न तो वहां हालात सामान्य हो पाए हैं और न ही उसे राज्य का दर्जा मिल सका है। उच्च सदन की मंजूरी के बाद दोनों विधेयक सोमवार शाम को संसद द्वारा पारित कर दिए गए।

सिंह ने कहा, (केंद्रीय गृह मंत्री) अमित शाह जी और पूरी भाजपा अपने-अपने तरीके से इतिहास को विकृत करने की कोशिश करती है। लेकिन आज अगर जम्मू-कश्मीर और विशेषकर कश्मीर घाटी हमारी है, तो इसका पूरा श्रेय पंडित (जवाहरलाल) नेहरू जी और शेख अब्दुल्ला जी को जाता है। उन?होंने कहा, जम्मू-कश्मीर का मुद्दा संवेदनशील है, लेकिन आज राज्य में निरंकुशता है और वहां के निवासियों से कोई सलाह नहीं ली जा रही है, उनकी भावनाओं की अनदेखी की जा रही है। कांग्रेस नेता ने कहा कि जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा अचानक छीन लिया गया और अब केंद्र सरकार इसे बहाल करने का प्रस्ताव दे रही है। उन्होंने यह भी कहा कि जम्मू-कश्मीर का मामला संवेदनशील है और हमें वहां के हालात को समझने की जरूरत है।

जब पीएम मोदी के साथ थे, तब नहीं की बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग: पीके

पटना (एजेंसी)। पूर्व चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने दरभंगा में अपनी जन सुराज यात्रा के दौरान विशेष राज्य के दर्जे की मांग को लेकर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधा है। पीके ने कहा कि जब नीतीश प्रधानमंत्री मोदी के साथ थे, तब उन्होंने विशेष राज्य का दर्जा देने के बारे में एक शब्द भी नहीं बोला। उन्होंने कहा कि जेडीयू नेता संसद में मोदी को महामानव बता रहे थे। तब नीतीश ने यह मुद्दा नहीं उठाया। हालाँकि, जैसे ही नीतीश महागठबंधन में शामिल हुए, उनके सुर बदले और अब वे विशेष राज्य का दर्जा मांग रहे हैं।

साथ ही प्रशांत किशोर ने भविष्यवाणी भी की है। उन्होंने कहा कि 2024 के बाद नीतिश कुमार की जदयू खत्म हो जाएगी। उन्होंने कहा कि नीतीश की राजनैतिक सियासत का यह आखिरी दौर है। उन्होंने कहा कि अब नीतीश कुमार को कौन पूछ रहा है। राज्य के मुख्यमंत्री हैं, इसकारण मीडिया में कभी-कभी आ जाते हैं। नीतीश ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के समक्ष राज्य को विशेष राज्य का दर्जा देने की अपनी पुरानी मांग फिर दोहराया। शाह की अध्यक्षता में यहां पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की 26वीं बैठक रविवार को पटना में हुई थी।

नीतीश ने कहा कि राज्य में सर्वसम्मति से कराए गए जाति आधारित गणना के आंकड़ों के आधार पर समाज के सभी कमजोर वर्गों के सामाजिक उत्थान के लिए आरक्षण में इनकी भागीदारी बढ़ाने का निर्णय लिया गया था जिसमें सभी भाजपा सहित विभिन्न पार्टियों की सहमति थी। उन्होंने कहा, राज्य में आरक्षण की सीमा 50 से बढ़ाकर 65 प्रतिशत कर दिया गया है। इसके लिए कानून पारित हो गया है। सामान्य वर्ग के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए पहले से ही 10 प्रतिशत आरक्षण उपलब्ध है। सभी को मिलाकर कुल आरक्षण 75 प्रतिशत हो गया है।

फातिमा की पोस्टिंग सियाचिन ग्लेशियर पर, रचा इतिहास

-15 हजार फीट की ऊंचाई पर तैनात होने वाली पहली मेडिकल ऑफिसर बनीं फातिमा वसीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। सियाचिन योद्धाओं की कैप्टन फातिमा वसीम की सियाचिन ग्लेशियर पर पोस्टिंग की गई है। एक ऑपरेशनल पोस्ट पर तैनात होने वाली पहली महिला चिकित्सा अधिकारी बनकर उन्होंने एक इतिहास रचने जैसा काम भी कर दिया है।

भारतीय सेना की फायर एंड फ्यूरी कोर ने कैप्टन फातिमा वसीम को इंगित करते हुए सोशल मीडिया एक पोस्ट किया है। इसमें लिखा है, कि उन्हें सियाचिन बैटल स्कूल में कठोर प्रशिक्षण के बाद 15 हजार, 200 फीट की ऊंचाई पर एक पद पर शामिल किया गया था, जो उनकी अदम्य भावना और उच्च प्रेरणा को दर्शाता है। इसके साथ ही कैप्टन फातिमा की उपलब्धि को रेखांकित करने और इसका जश्न मनाने के लिए पोस्ट में एक वीडियो भी साझा किया गया है। जानकारी अनुसार फायर एंड फ्यूरी कॉर्प्स को आधिकारिक तौर पर 14वां कॉर्प्स कहते हैं, जिसका हेडक्वार्टर लेह में स्थित है। इनकी तैनाती चीन-पाकिस्तान बॉर्डर पर होती है और साथ ही ये सियाचिन ग्लेशियर की रक्षा करते हैं।

कैप्टन गीतिका रहीं स्नो लेपर्ड ब्रिगेड की पहली मेडिकल ऑफिसर

मौजूदा माह के प्रारंभ में, सियाचिन बैटल स्कूल में इंडक्शन ट्रेनिंग सफलतापूर्वक पूरी करने के बाद, स्नो लेपर्ड ब्रिगेड की कैप्टन गीतिका कौल दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र सियाचिन में तैनात होने वाली भारतीय सेना की पहली महिला चिकित्सा अधिकारी बनीं। जानकारी अनुसार 5 दिसंबर को स्नो लेपर्ड ब्रिगेड की कैप्टन गीतिका कौल की पोस्टिंग पहली महिला मेडिकल ऑफिसर के तौर पर की गई थीं। उन्हें सियाचिन की बैटलफील्ड पर तैनात किया गया। कैप्टेन गीतिका ने अपनी तैनाती को लेकर सेना के प्रति आभार भी जताया था।

कांग्रेस नेता शशि थरूर का बयान, इंडिया गठबंधन में पैदा कर सकता रार

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान की कार का घेराव कर उस पर हमला करने के मामले में पूर्व केंद्रीय मंत्री और कांग्रेस नेता शशि थरूर की टिप्पणी इंडिया गठबंधन में तनाव बढ़ा सकती है। आरिफ मोहम्मद खान ने घटना को लेकर सीएम पिनराई विजयन पर हमला बोलकर कहा था कि मुझे मारने के लिए इन लोगों को भेजा गया था। अब थरूर ने टिप्पणी करके गवर्नर खान की बात का समर्थन कर कहा कि उनकी बात सही है और उनके डर को समझा जा सकता है। अब कांग्रेस नेता थरुर की यह टिप्पणी इंडिया गठबंधन के अहम घटक सीपीएम को चुभ सकती है।

थरूर ने कहा, एसएफआई के गुंडों ने गवर्नर खान की कार को रोक कर और उस पर हमला कर अपमानजनक व्यवहार किया। उनका डर पूरी तरह से

समझा जा सकता है। कम्युनिस्ट शासन में पुलिस कानून व्यवस्था को बर्बाद करने की एजेंट बनी हुई है। पुलिस ने गवर्नर पर हमले की परमिशन दी। इसके अलावा सीएम के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे छात्रों से बदसलूकी की गई। यह शर्मनाक है। इस तरह कम्युनिस्ट छात्र संगठन के लोगों को गुंडा बताने से सीपीएम भड़क सकती है।

दरअसल सोमवार को एसएफआई के सदस्यों ने गवर्नर की कार का पीछा कर नारेबाजी की थी। उनकी कार पर भी हमले की कोशिश हुई थी। यह तब हुआ, जब गवर्नर आरिफ मोहम्मद खान तिरुअनंतपुरम एयरपोर्ट जा रहे थे, जहां से उन्हें दिल्ली आना था। इस लेकर आरिफ मोहम्मद खान भड़क गए थे। उन्होंने सीधे सीएम विजयन पर हमला बोल कर कहा था कि उन्हें नुकसान पहुंचाने के लिए गुंडों को भेजा गया था। गवर्नर ने कहा, क्या यह संभव है कि मुख्यमंत्री का कार्यक्रम हो और वहां प्रदर्शनकारियों से भरी हुई कारों को परमिशन दी जाए? क्या पुलिस किसी को सीएम की कार के पास आने देगी? यहां प्रदर्शनकारियों की कारें खड़ी थीं और पुलिस उन्हें बिठा देती है और फिर वे भाग लेते हैं।

देश के वास्तविक मुद्दों से ध्यान भटकाने नेहरु पर आ जाती हैं भाजपा : राहुल गांधी

नई दिल्ली । कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भाजपा पर पलटवार करते हुए कहा कि वे देश के वास्तविक मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बारे में बात करते रहते हैं। राहुल गांधी ने फिर जाति आधारित जनगणना की मांग कर मोदी सरकार पर इस पर चर्चा नहीं करने का आरोप लगाया। राहुल गांधी ने कहा, ये सब ध्यान भटकाने वाली रणनीति है। मूल मुद्दा जाति आधारित जनगणना है और लोगों का पैसा किसे मिल रहा है? वे इस मुद्दे पर चर्चा नहीं करना चाहते हैं, वे इससे दूर भागते हैं। जब उन्हें बताया गया कि भाजपा ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के रूप में एक ओबीसी नेता की घोषणा की है, तब उन्होंने कहा, छत्तीसगढ़ में हमारा मुख्यमंत्री भी ओबीसी से था, अब उन्होंने भी ओबीसी मुख्यमंत्री की घोषणा की है। लेकिन सवाल यह है कि सरकारी व्यवस्था में कितने ओबीसी हैं? उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी ओबीसी वर्ग से हैं, लेकिन केंद्र सरकार को 90 लोग चला रहे हैं और उनमें से केवल तीन लोग ओबीसी वर्ग से हैं। राहुल गांधी ने कहा, मेरा सवाल संस्थागत व्यवस्था में ओबीसी, दलितों और आदिवासियों की भागीदारी के बारे में है। वे हमें इस मुद्दे से भटकाने के लिए जवाहरलाल नेहरू और अन्य के बारे में बात करते हैं।

एमपी की राजनीति का यूपी में असर, यादवों को लुभाने की कोशिश

-मोहन यादव को सीएम बनाकर ओबीसी की राजनीति में सपा, आरजेडी से आगे निकली भाजपा

नई दिल्ली (एजेंसी)। मप्र में भाजपा ने मोहन यादव को सीएम बनाकर समूची यादव बिरादरी को अपनी ओर खींचा है। मप्र की राजनीति का असर अब यूपी में भी पहुंच गया है, जहां भाजपा ओबीसी को लेकर सपा और आरजेडी से भी आगे निकल गई है। भाजपा ने मोहन यादव को सूबे की कमान सौंपने का ऐलान कर दिया है। यह पूरा घटनाक्रम मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में चला, लेकिन असर यूपी, बिहार, हरियाणा और राजस्थान तक दिख रहा है। मोहन यादव को सीएम बनाकर भाजपा ने एक ऐसा दांव चल दिया है, जिसकी काट करना सपा, आरजेडी और कांग्रेस जैसे दलों के लिए मुश्किल होगा। भाजपा पहले भी उमा भारती, कल्याण सिंह, शिवराज सिंह चौहान जैसे ओबीसी मुख्यमंत्री दिए हैं, लेकिन अब तक उसकी सियासी कोशिश गैर-यादव ओबीसी को एकजुट करने तक रही है। बता दें ?कि यूपी में करीब 10 फीसदी और बिहार में 14 पर्सेंट यादव बिरादरी को भी भाजपा लुभाने की कोशिश में है। इसी के तहत उसने मोहन यादव को मध्य प्रदेश का सीएम बनाया है। हरियाणा और राजस्थान में भी यादव समाज की अच्छी संख्या है।

इस तरह भोपाल में हुए फैसले का असर 4 राज्यों में 2024 में देखने को मिल सकता है। भाजपा इससे यह संदेश देने का प्रयास करेगी कि उसने ओबीसी के नेताओं को आगे बढ़ाया है और वह यादवों को भी महत्व देती रही है। ऐसा कहने के लिए उसके पास पर्याप्त आधार भी मौजूद हैं। दरअसल भाजपा ने मध्य प्रदेश में मोहन यादव को सीएम बनाया है तो केंद्र सरकार में उसने 4 मंत्री भी बनाए हैं। राजस्थान से आने वाले भूपेंद्र यादव, हरियाणा के राव इंद्रजीत सिंह, बिहार के नित्यानंद राय और झारखंड की अन्नपूर्णा देवी यादव ही हैं। इसके अलावा संसदीय बोर्ड में सुधा यादव और पिछड़ा वर्ग आयोग के चेयरमैन हंसराज अहीर भी इसी समाज से आते हैं। भूपेंद्र यादव को तो केंद्रीय चुनाव समिति में भी जगह दी गई है। भाजपा ने दूसरी बार मप्र में यादव सीएम बनाया है। इससे पहले बाबूलाल गौर सीएम रह चुके हैं।

पुलिस स्टेशन पर फिदायिन हमला, तीन जवानों की मौत, 10 घायल

-पाकिस्तान में हुआ बड़ा आतंकी हमला

करांच। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के एक पुलिस स्टेशन पर आतंकियों के सुसाइट अटैक में तीन जवानों की मौत हो गई है। मिली जानकारी के अनुसार डेरा इस्माइल खान जिले में एक स्थानीय पुलिस स्टेशन पर आतंकवादियों के एक समूह ने आत्मघाती हमला कर दिया। जिसमें सुरक्षा बलों के तीन जवान मारे गए हैं, जबकि 10 घायल हो गए हैं। इस आत्मघाती हमले की जिम्मेदारी तहरीक-ए-जिहाद पाकिस्तान नाम के आतंकवादी संगठन ने ली है। बतो दें कि बीते नवंबर के महीने में भी पाकिस्तान के मियांवली के एयरबेस पर फिदायीन हमला हुआ था। आत्मघाती हमलावरों सहित भारी हथियारों से लैस 9 आतंकी पंजाब के मियांवली स्थित पाकिस्तान वायु सेना के अड्डे में घुस गए थे। दोनों तरफ से जबरदस्त फायरिंग हुई, जिसमें एयरबेस के अंदर आग की भारी लपटें नजर आ रही हैं। बाद में सेना ने ऑपरेशन चलाकर सभी 9 आतंकियों को ढेर कर दिया। तहरीक-ए-जिहाद पाकिस्तान (टीजेपी) के प्रवक्ता मुल्ला मुहम्मद कासिम ने मियांवली के एयरबेस पर हुए हमले की जिम्मेदारी ली है और दावा किया है कई आत्मघाती हमलावर भी इसमें शामिल हैं। हालांकि स्थानीय निवासियों ने हमले की पुष्टि करते हुए सोशल मीडिया पर वीडियो फुटेज पोस्ट किए हैं। आतंकवादी समूह ने यह भी दावा किया है कि उसने बेस पर मौजूद एक टैंक को भी नष्ट कर दिया है। गौरतलब है कि मियांवली वही एयरबेस है जहां इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद उनकी पार्टी के समर्थकों ने हमला कर दिया था। इतना ही नहीं, प्रदर्शनकारियों ने एयरबेस के बाहर एक विमान के ढांचे को आग भी लगा दी थी। इससे पहले दर में सुरक्षा बलों को ले जा रहे दो वाहनों पर भी आतंकवादी हमला हुआ था जिसमें कम से कम 14 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए थे।

कोविड से लोगों की मौत पर ऋषि सुनक ने मांगी माफी

लंदन। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने कोविड के दौरान हुई मौतों को लेकर माफी मांगी है। उन्होंने सोमवार को उन परिवारों से माफी मांगी, जिन्होंने कोविड-19 महामारी में अपने प्रियजनों को खो दिया। इसी के साथ उन्होंने इस सप्ताह शुरू हुई सार्वजनिक जांच में अपनी ओर से सबूत भी पेश किए। इसे अवैध प्रवासियों को निर्वासित करने की उनकी रवांडा नीति पर संसद में होने वाले मतदान में संभावित विद्रोह को रोकने की कोशिश के तौर पर भी देखा जा रहा है। ब्रिटिश भारतीय नेता सुनक ने कहा कि उन्हें लोगों के जान गंवाने पर गहरा दुख है। ऋषि सुनक ने इस बात पर जोर दिया कि वह रचनात्मक स्पष्टवादिता की भावना से कोविड जांच के लिए अपने साक्ष्य देना चाहते थे ताकि जब 2020-21 में वह चांसलर थे तब उससे सबक सीखा जा सके। गौरतलब है ?कि कई बिंदुओं पर उन्होंने उस समय प्रधानमंत्री के रूप में बोरिस जॉनसन के निर्णय लेने के दबाव का भी बचाव किया, और कहा कि पहली कोविड लॉकडाउन अवधि के चरम के दौरान वह अपनी पत्नी अक्षता मूर्ति से भी अधिक अपने पूर्व 'बॉस' से मिले थे। ऋषि सुनक ने 'ईट आउट टू हेल्प आउट' योजना का भी मजबूती से बचाव किया जो अगस्त 2020 में ब्रिटेन के आतिथ्य उद्योग को बढ़ावा देने के लिए उनकी ओर से शुरू की गई थी। हालांकि उस समय कोरोना वायरस की दूसरी लहर थी और इसके प्रभाव को लेकर उनकी काफी आलोचना भी हुई थी।

संबंध गहरे करने चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग करेंगे वियतनाम की यात्रा

बैंकॉक। चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग वियतनाम की यात्रा करने जा रहे हैं। मिली जानकरी के अनुसार अमेरिका और जापान के साथ राजनयिक संबंध गहरे कर रहे वियतनाम के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए चिनफिंग अपने पड़ोसी देश की यात्रा करेंगे। यह 2017 के बाद से वियतनाम की उनकी पहली यात्रा होगी। वियतनाम के विदेश मंत्रालय ने बताया कि इस यात्रा के दौरान शी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव गुयेन फु ट्रोंग, राष्ट्रपति वो वान थुओंग और प्रधानमंत्री फाम मिन्ह चिन्ह से मुलाकात करेंगे। सिंगापुर में आईएसईएएस-यूसोफ इशाक इंस्टीट्यूट में कार्यरत गुयेन खाक गियांग ने कहा कि 'यह पश्चिम के साथ हनोई के बढ़ते संबंधों पर बीजिंग की चिंताओं को दर्शाता है। उसे चिंता है कि वियतनाम चीन विरोधी गठबंधन में शामिल हो सकता है।' गौरतलब है कि दक्षिण पूर्व एशिया में सुरक्षा और अर्थव्यवस्था के लिहाज से वियतनाम की रणनीतिक भूमिका बढ़ती जा रही है। वियतनाम वैचारिक रूप से चीन के करीब है। इस पर चीन से मजबूत संबंध रखने वाली कम्युनिस्ट पार्टी का शासन है लेकिन हाल के महीनों में वियतनाम ने पश्चिमी देशों के साथ निकट संबंधों का संकेत दिया है। हालांकि अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने अमेरिका को चीन के समान राजनयिक दर्जा दिए जाने को चिह्नित करने के लिए सितंबर में वियतनाम का दौरा किया था। इसके अलावा जापान और वियतनाम ने 'स्वतंत्र और मुक्त हिंद प्रशांत' का जिक्र करते हुए नवंबर में अपने आर्थिक और सुरक्षा संबंधों को मजबूत किया तथा जापान को भी चीन और अमेरिका के समान राजनयिक दर्जा दिया गया।

कतर हमेशा के गाजा के साथ रहेगा और सहयोग करेगा

दोहा। इजरायल द्वारा गाजा पर की गई ताबड़तोड़ बमबारी से वहां के नागरिकों के सामने कई तरह की चुनौती खड़ी हो गई हैं। न तो रहने के लिए घर बचा है और न ही भोजन,पानी की कोई व्यवत्था है। ऐसे में उनका सहयोग करने के लिए कतर ने भरोसा दिलाते हुए कहा है कि गाजा का सहयोग कतर ने पहले भी किया और आगे भी करता रहेगा। कतर के विदेश मंत्री मोहम्मद बिन अब्दुलअजीज अल-खुलैफी ने कहा कि कतर गाजा को सहयोग जारी रखेगा, जैसा कि वह वर्षों से करता आ रहा है। अब्दुलअजीज अल-खुलैफी ने कहा, हम अपना जनादेश नहीं बदलने जा रहे हैं। हमारा जनादेश फिलिस्तीन के हमारे भाइयों और बहनों के लिए हमारी निरंतर सहायता और समर्थन है। हम इसे व्यवस्थित रूप से करना जारी रखेंगे जैसा हमने पहले किया था।कतर के विदेश मंत्री की टिप्पणी खाड़ी देश द्वारा हमास को वर्षों से किए जा रहे भुगतान को लेकर इजराइल में बढ़े गुस्से के खिलाफ आई है। एक डील के तहत क़तर हर महीने 15 मिलियन डॉलर की नकद मदद गाजा को करता है। नकद मदद से गाजा के सिविल सेवकों को भुगतान करने में मदद मिलती है। रिपोर्ट के अनुसार, 2018 की तस्वीरों में कर्मचारी 100 डॉलर के बिल प्राप्त करने के लिए कतार में खड़े दिख रहे हैं।

इंग्लैंड में नाबालिग ने किया सिख पर जानलेवा हमला,गिरफ्तार

लंदन। लैंगली मेमोरियल पार्क से गुजर रहे इंद्रजीत सिंह पर लड़कों के एक समूह ने हमला किया। आरोपियों में से एक ने पीड़ित की दाढ़ी खींचने की कोशिश की और फिर सभी लड़कों ने उसे घेर लिया, उसे लात मारी और जमीन पर गिरा दिया। इस हमले में इंद्रजीत सिंह की तीन पसलियां टूट गईं और साथ ही उनके हाथ में भी सूजन आ गई है। पीड़ित को हमले के बाद इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया और तब से छुट्टी दे दी गई है। उनकी स्थानीय गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा ने भी जानकारी रखने वाले किसी भी व्यक्ति से हेट क्राइम की जांच में पुलिस की सहायता करने की अपील की है। दक्षिण-पूर्व इंग्लैंड के स्लो में एक ग्रुप के हमले में 50 वर्षीय एक सिख व्यक्ति घायल हो गया था। वहीं यूके पुलिस ने एक 14 वर्षीय लड़के को गिरफ्तार कर लिया है। टेम्स वैली पुलिस ने कहा कि युवक को पिछले हफ्ते गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने कहा कि मामले की जांच की जा रही और 21 नवंबर को हुए हमले से जुड़ी किसी भी जानकारी के लिए अपील भी की।स्लो पुलिस स्टेशन में तैनात डिटेक्टिव कॉन्स्टेबल हॉली बैक्सटर ने कहा कि हम ऑनलाइन या 101 पर कॉल करके रिपोर्ट करने के लिए इस मामले से जुड़ी जानकारी रखने वाले किसी भी व्यक्ति की तलाश कर रहे हैं।

बुडापेस्ट, हंगरी में क्रिसमस मनाने और चैरिटी का समर्थन करने के लिए लोग 20वीं सांता स्पीडो रन में भाग लेते हुए।

डोनाल्ड टस्क बने पोलैंड के नए प्रधानमंत्री

वारसॉ। सेंट्रिस्ट पार्टी नेता डोनाल्ड टस्क को संसद में मतदान के बाद करीब एक दशक बाद फिर से पोलैंड के प्रधानमंत्री बने। यूरोपीय संघ के पूर्व नेता टस्क ने 2014 से 2019 तक यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया था। वह 2007 से 2014 तक पोलैंड के प्रधानमंत्री थे। सत्ता परिवर्तन को मध्य यूरोपीय राष्ट्र के 3.8 करोड़ नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि 'लॉ एंड जस्टिस पार्टी' के खिलाफ लोगों के सामूहिक विरोध ने एक ऐसी सरकार को बदलने के लिए रिकॉर्ड मतदान किया, जो यहां के लोकतांत्रिक मानदंडों को नष्ट कर रही थी। लॉ एंड जस्टिस पार्टी 2015 से पोलैंड की सत्ता पर काबिज थी। पार्टी पर आरोप था कि इसने अदालतों और न्यायिक निकायों पर अपनी शक्ति बढ़ा दी है।

यूरोपीय संघ और अन्य लोगों ने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ दल देश की न्यायिक स्वतंत्रता को नष्ट कर रहा है। संसद के 460 सीटों वाले निचले सदन में मतदान के दौरान टस्क के समर्थन में 248 वोट पड़े तथा उनके विरोध में 201 सांसदों ने वोट किया। जीत के बाद टस्क ने कहा, धन्यवाद पोलैंड, यह वास्तव में एक अद्भुत दिन है। उन्होंने कहा, न केवल मेरे लिए, बल्कि उन सभी के लिए जो इन कई वर्षों में गहराई से विश्वास करते थे... कि चीजें बेहतर होगी। टस्क, मंगलवार को संसद में अपना मंत्रिमंडल प्रस्तुत करने वाले हैं, तथा उन्हें नई सरकार के लिए विश्वास मत हासिल करना है, जिसके बाद राष्ट्रपति आंद्रेज डूडा द्वारा उन्हें बुधवार सुबह शपथ दिलाया जा सकता है।

हिजबुल्लाह ईरान समर्थित है फिर भी इजराइल उससे समझौता करने को तैयार

तेल अवीव (एजेंसी)। दुनिया को पता है कि ईरान और इजराइल एक दूसरे को फूटी आंख नहीं सुहाते हैं। इसके बाद भी इजराइल ऐसे संगठन से समझौता करने को तैयार होता दिखाई दे रहा है जो ईरान का कट्टर समर्थक है। इस बात के संकेत खुद इजराइल के रक्षा मंत्री योव गैलेंट ने दिए हैं। गैलेंट ने कहा कि इजराइल हिजबुल्लाह के साथ भी समझौते के लिए तैयार है। हालांकि इसके साथ गैलेंट ने एक अगर भी जोड़ दिया। डिफेंस मिनिस्टर ने कहा कि समझौता तभी होगा जब लेबनान से लगे सीमा को सेफ जोन बनाया जाए और दूसरी सुरक्षा की गारंटी भी दी जाए। इजराइली मंत्री ने समझौते को लेकर ज्यादा जानकारी देने से हालांकि फिलहाल मना कर दिया।हिजबुल्ला को ईरान का समर्थक माना जाता है और ईरान-इजराइल के बीच संबंध कितने तल्ख हैं, ये बात किसी से छुपी नहीं है। एक अन्य बयान में इजराइल के मंत्री बेनी गेंट्ज ने कहा है कि उन्होंने हिजबुल्ला को लेकर एक बड़े अमेरिकी राजनयिक से बात की है। बेनी गेंट्ज ने अमेरिकी राजनयिक एंटनी ब्लिंकेन से कहा है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लेबनान की सरकार हिजबुल्ला पर दबाव बनाए और वह इजराइल पर होने वाले हिजबुल्ला के हमलों को रोके। इजराइल का कहना है कि उसके उत्तरी क्षेत्र की आबादी हिजबुल्ला के हमलों के साये में जी रही है। बेनी गेंट्ज ने अमेरिकी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट से हिजबुल्ला पर लगाम लगाने की मांग की है।

वहीं दूसरी तरफ लेबनान को लेकर अमेरिकी रुख पर भी पिछले दिनों बड़ी अजीबोगरीब स्थिति रही। हुआ ये कि पिछले हफ्ते अमेरिका ने कहा दिया कि वह इजरायली हमलों में लेबनानी फोर्स के एक सैनिक के मारे जाने और कुछ के घायल होने की खबरों से चिंतित है। फिर इजराइली को इस पर बयान जारी करना पड़ा। इसके अलावा लेबनान को लेकर एक अमरिकी अधिकारी ने कह दिया कि लेबनान की फोर्स न सिर्फ लेबनान के लिए बल्कि पूरे इलाके के लिए जरूरी है। अमेरिका ने लेबनान और उसके अधिकारियों को भी साफ तौर पर कह दिया है कि उसे इजराइल के खिलाफ हमलों का लांचपैड नहीं बनना चाहिए।

इजरायली सेना और हिजबुल्लाह के बीच सीमा के आस पास के इलाकों में रह-रह कर झड़पें होती रहती हैं। कल हाल ही में इजराइली आर्मी और हिजबुल्ला के बीच गोलीबारी हुई। इजराइली बमबारी में सोमवार को दक्षिण लेबनान के एक स्थानीय अधिकारी की मौत हो गई। 7 अक्टूबर को इजराइल-हमास युद्ध शुरू होने के बाद से ही लेबनान और इजराइल के सीमा पर गोलीबारी तेज हो गई है। लगातार इस तरह की आशंका है कि कहीं ये संघर्ष गाजा की तरह भयावह न हो जाए। एक रिपोर्ट के मुताबिक अक्टूबर के बाद से जारी संघर्ष में कम से कम 120 लोगों की मौत हुई है। ज्यादातर मरने वाले हिजबुल्लाह के लड़ाके हैं। वहीं करीब 17 नागरिकों की भी जान गई है। वहीं इजराइल का कहना है कि लेबनान से सटे उत्तरी इजराइल में उसके छह सैनिक जबकि चार नागरिकों की जानें गईं है।

बाइडेन और नेतन्याहू के बीच मतभेद, यहूदी हनुक्का उत्सव में किया खुलासा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के बीच मतभेद उभरकर सामने आ रहे है। ये बात खुद बाइडेन ने स्वीकार की। उन्होंने नेतन्याहू के साथ अपने जटिल संबंधों की ओर इशारा करते हुए कहा कि पीएम एक मुश्किल स्थिति में हैं और दोनों के बीच वर्षों से और वर्तमान में मतभेद हैं। दरअसल बाइडेन यहां यहूदी हनुक्का उत्सव के लिए व्हाइट हाउस के एक स्वागत समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने नेतन्याहू के साथ अपने दशकों पुराने संबंधों को भी याद किया। उन्होंने नेतन्याहू का उपनाम लेते हुए कहा, मेरा आपके प्रति स्नेह है। लेकिन मैं तुम्हारी एक बड़ी बात से सहमत नहीं हूं जो तुम्हें कहना पड़ी। बाइडेन ने आगे कहा कि आज भी लगभग वैसा ही है। इजरायल एक मुश्किल स्थिति में है और कुछ इजरायली नेतृत्व के साथ मेरे मतभेद हैं। उन्होंने इस बारे में विस्तार से नहीं बताया कि दोनों के बीच क्या मतभेद हैं। हालांकि हाल के हफ्तों में उन्होंने हमास के खिलाफ मौजूदा युद्ध और फिलिस्तीनियों के साथ व्यवहार जैसे मुद्दों को उठाया है और आपत्ति जताई है। बाइडेन ने व्हाइट हाउस में छुट्टियां मना रहे यहूदी लोगों से कहा कि इजरायली नेतृत्व के साथ मतभेदों को छोड़कर स्वतंत्र यहूदी राज्य और इजरायल की सुरक्षा के प्रति मेरी प्रतिबद्धता अटल है।

उन्होंने आगे कहा कि दोस्तों, अगर इजराइल नहीं होता तो दुनिया में कोई भी यहूदी सुरक्षित नहीं होता। जब तक हमास को बाहर नहीं कर दिया जाता, तब तक इजराइल को सहायता जारी रहेगी, लेकिन चेतावनी दी कि इजराइल की सुरक्षा के लिए जनता की राय गंभीर तरीकों से बदल सकती है। बाइडेन ने कहा, हमें सावधान रहना होगा। उन्हें सावधान रहना होगा। पूरी दुनिया की जनमत रातों-रात बदल सकती है। हम ऐसा नहीं होने दे सकते। बाइडेन ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका गाजा में अभी भी बंधकों को मुक्त कराने, फिलिस्तीनियों को मानवीय सहायता में तेजी लाने और नागरिक जीवन की रक्षा करने की जरूरत पर काम करना जारी रखेगा। उन्होंने कहा, यहूदी समुदाय के प्रति जुड़ाव निर्विवाद है।

पुतिन के विरोधी एलेक्सी नवलनी जेल से हुए लापता, सूची से नाम भी गायब

मास्को (एजेंसी)। राष्ट्रपति पुतिन के धुर विरोधी एलेक्सी नवलनी के जेल से लापता होने के समाचार मिल रहे हैं। उनके प्रवक्ता ने बताया कि जेल प्रशासन ने वकीलों को उनसे नहीं मिलने दिया और कहा कि वह जेल में नहीं हैं। इसके साथ ही जेल की सूची से भी उनका नाम हटा दिया गया है।

गौरतलब है कि पुतिन के मुखर आलोचक को पहले भी जान से मारने की कोशिश हो चुकी है। विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी के लापता होने की खबर ने सकते में डाल दिया है। एलेक्सी के प्रवक्ता के मुताबिक, उनके वकीलों ने करीब एक सप्ताह से उनकी आवाज नहीं सुनी है और कैदियों की लिस्ट से भी उनका नाम गायब है। मॉस्को में कैद एलेक्सी को चरमपंथी समुदाय बनाने और उन्हें पोषित करने समेत अन्य अपराधों में दोषी पाए जाने के बाद इसी साल अगस्त में 19 साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। नवलनी के प्रवक्ता ने आरोप लगाया कि बार-बार प्रयास करने के बावजूद वकील जेल में बंद नेता से नहीं मिल पाए और उन्हें सूचित किया गया है कि वह जेल में नहीं हैं। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर आरोप लगाया कि कैदियों की सूची में एलेक्सी नवलनी का नाम अब नहीं है।

हालांकि वकीलों ने आईके-6 और आईके-7 में जाने की कोशिश की, जहां वह पहले कैद थे, लेकिन उन्हें बताया गया कि वो अब वहां नहीं हैं और उन्हें नहीं पता कि इस समय एलेक्सी कहां हैं। यारमिश ने एक्स पर लिखा, उन्हें आईके-6 और आईके-7 ने कोई जवाब नहीं दिया। नवलनी बीते छह दिनों से लापता थे। उन्होंने कहा कि प्रशासन ने ये भी नहीं बताया कि उन्हें कहां ट्रांसफर किया गया था। मीडिया में आई खबर के हवाले से कहा गया कि जेल में बंद रूसी नेता को गंभीर स्वास्थ्य संबंधी घटना का सामना करना पड़ा है। बता दें कि एलेक्सी नवलनी पहले ही धोखाधड़ी और अन्य आरोपों को लेकर 11.5 साल की सजा काट रहे थे, जिन्हें उन्होंने निराधार बताया था। उन्हें आखिरी बार आईके-6 पीनल कॉलोनी में कैद किया गया था।

कोविड का रुप निकला चीन का नया वायरस

बीजिंग (एजेंसी)। चीन का नया वायरस पहले ही यूरोप में दस्तक दे चुका है। डेनमार्क और नीदरलैंड में लगातार मामले बढ़ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कहा है कि वह स्थिति पर नजर रख रहा है और उसने चीन से और ज्यादा जानकारी मुहैया कराने के लिए कहा है। मिरर ने यूके मेडिकल साइंस और चेस्टर मेडिकल स्कूल के प्रोग्राम लीड डॉक्टर गैरेथ नी के हवाले से लिखा है कि यह स्थिति कोविड-19 जैसी कोई नई बीमारी नहीं है बल्कि यह एक और कोविड वायरस हो सकता है।

चीन में पिछले कुछ दिनों से एक और वायरस ने हंगामा मचा कर रख दिया है। यूके के एक टॉप डॉक्टर ने कहा हे कि चीन में फैल रही निमोनिया की रहस्यमय लहर कोविड का ही एक स्वरूप है। लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि यह कोई नया वायरस नहीं है और फिलहाल घबराने की कोई जरूरत नहीं है। हाल के कुछ हफ्तों में देश के अस्पताल बीमार बच्चों से भर गए हैं। ऐसी आशंकाएं हैं कि यह बीमारी चीन की सीमा के बाहर फैल सकती है, जो कोरोनोवायरस महामारी के शुरुआती दिनों की याद दिलाती है। कई जगहें ऐसी भी रिपोर्ट्स हैं कि भारत जैसे आसपास के देश इस बीमारी से निपटने की तैयारी कर रहे हैं।विशेषज्ञों के मुताबिक यह सच लगता है कि चीन में खासतौर पर बच्चों में सांस से जुड़ी बीमारियों में इजाफा हो रहा है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि यह कोई नई बीमारी नहीं है, जैसे कि कोविड-19 थी। यह केवल उन बीमारियों में इजाफा है जिनके बारे में लोग पहले से ही जानते हैं। यानी एक और कोविड वायरस SARS-CoV2, इन्फ्लूएंजा, बैक्टीरिया जो निमोनिया और सिंकाइटियल वायरस का कारण बनता है। चीन के बाद डेनमार्क और नीदरलैंड बच्चों में निमोनिया के प्रकोप की रिपोर्ट करने वाले नए देशों में शामिल हो गए हैं। इनफेक्शन डिजीज न्यूज ब्लॉग एवियन फ्लू डायरी पर एक पोस्ट से पता चला है कि माइकोप्लाज्मा निमोनिया संक्रमण महामारी के स्तर तक पहुंच गया है।

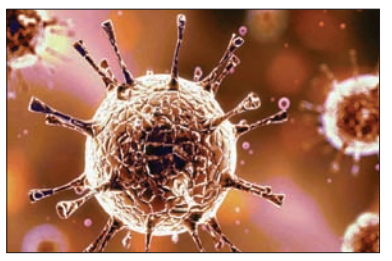

डेनमार्क के स्टेटेंस सीरम इंस्टीट्यूट ने तो इसे महामारी बता डाला है। इसमें वृद्धि नीदरलैंड ने अगस्त के बाद से बच्चों और युवाओं में निमोनिया के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। नीदरलैंड इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ सर्विसेज रिसर्च (एनआईवीईएल) के अनुसार, पिछले सप्ताह 5 से 14 वर्ष की आयु के प्रत्येक एक लाख बच्चों में से 103 को निमोनिया का सामना करना पड़ा। 26 नवंबर को चीन के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा था कि देश में सांस संबंधी बीमारियों में इजाफा फ्लू और बाकी ज्ञात रोगाणुओं के कारण हुई है, न कि किसी नये वायरस के कारण। चीन में सांस से संबंधी बीमारियों ने डब्ल्यूएचओ का ध्यान आकर्षित किया है।

अमेरिका में राष्ट्रपति का चुनाव लड़ रहे भारतीय मूल के रामास्वामी को जान से मारने की धमकी

कॉनकॉर्ड,अमेरिक। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ रहे भारतीय मूल के उम्मीदवार विवेक रामास्वामी को जान से मारने की धमकी मिली है। धमकाने वाले ने कहा है कि उनकी सिर में गोली मारकर हत्या करेंगे। हालांकि इस मामले को गंभीरता से लिया गया है और पुलिस मामले की जांच कर रही है। एफबीआई एजेंट के अनुसार अभियान कर्मचारियों को आरोपियों की तरफ से दो धमकी भरे मैसेज मिले थे। एक में ने उम्मीदवार विवेक रामास्वामी को सिर में गोली मारने की धमकी दी गई थी तो दूसरे मैसेज में कार्यक्रम के दौरान सभी उपस्थित लोगों को भी मौत के घाट उतारने की धमकी दी गई थी। रिपोर्ट के अनुसार संघीय अभियोजकों ने कहा कि न्यू हैम्पशायर के एक व्यक्ति पर सोमवार राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को जान से मारने की धमकी देने वाले मैसेज भेजने का आरोप लगाया गया है। वहीं, अमेरिकी अटॉर्नी कार्यालय ने राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का नाम नहीं बताया। हालांकि, रिपब्लिकन उम्मीदवार विवेक रामास्वामी के प्रवक्ता ने सोमवार को कहा कि वह धमकी भरा मैसेज हमारे चुनावी कार्यक्रम के अंतर्गत ही था। डोवर शहर का रहने वाला 30 वर्षीय टायलर एंडरसन को गिरफ्तार किया गया और उन पर अंतरराज्यीय वाणिज्य का उपयोग करके धमकी भरे मैसेज भेजने का आरोप लगाया गया।

फ्रांस सरकार बंद करने जा रहीं देश का सबसे बड़ा मुस्लिम स्कूल

पेरिस (एजेंसी)। फ्रांस का सबसे बड़ा मुस्लिम स्कूल जिसमें 8 सौ छात्र पढ़ाई कर रहे हैं उसे फ्रांस सरकार बंद करने जा रही है। यहां पढ़ने वाले छात्र फ्रांसीसी पाठ्यक्रम की पढ़ाई के साथ धार्मिक क्लासेस भी लेते हैं। हालांकि आंतरिक मंत्रालय के स्थानीय कार्यालय का कहना है कि एवरोज स्कूल प्रशासनिक और वित्तीय कमियों से जूझ रहा था। स्कूल में पढ़ाई भी फ्रांसीसी रिपब्लिकन मूल्यों के मुताबिक नहीं हो रही थी। वहीं एवरोज स्कूल के प्रिंसिपल एरिक डुफोर का कहना है कि अनुबंध खत्म करने को लेकर फिलहाल कार्यालय से उनके पास कोई नोटिस नहीं आया है न ही कोई जानकारी मिली है। प्रिंसिपल ने कहा कि अगर ऐसा होता है तो स्कूल प्रशासन कोर्ट में मामले के खिलाफ कोर्ट का रुख कर इसे चुनौती देगा। उन्होंने कहा कि एवरोज स्कूल रिपब्लिकन मूल्यों के आधार पर दूसरे स्कूलों के मुकाबले ज्यादा बेहतर काम करता है।

हालांकि प्रिंसिपल एरिक ने ये भी कहा कि पिछले महीने नवंबर में हुई एक शिक्षा समिति की बैठक के दौरान उन्हें अहसास हो गया था कि फ्रांस एवरोज स्कूल के साथ अपना कॉन्ट्रेक्ट खत्म कर सकता है। उन्होंने कहा कि वित्तीय मदद के बिना स्कूल चलाना मुश्किल बेहद मुश्किल होगा। स्कूल को अपनी जरूरतों को पूरा करने में काफी परेशानी होगी। ऐसे में उन्हें बच्चों की फीस बढ़ानी होगी जिसका असर सीधा उनके परिवार पर पड़ेगा। बताया जा रहा है कि

फ्रांस अपने सबसे बड़े मुस्लिम हाई स्कूल के साथ अनुबंध समाप्त करने जा रहा है। फ्रांस ने ये फैसला प्रशासनिक विफलताओं और संदिग्ध शिक्षा की नीतियों के आधार पर लिया है, जिसके तहत अब निजी एवरोज मुस्लिम हाई स्कूल को मिलने वाली वित्तीय मदद देना बंद कर दी जाएगी।कुछ समूहों का कहना है कि फ्रांस सरकार का ये फैसला मुसलमानों पर व्यापक कार्रवाई है। एवरोज स्कूल फ्रांस में 2003 से उत्तरी शहर लिले में है। ये यहां का पहला मुस्लिम हाई स्कूल है, जिसमें करीब 800 से ज्यादा छात्र पढ़ते हैं। स्कूल के साथ राज्य का 2008 से अनुबंध है। यहां पढ़ने वाले सभी छात्र फ्रांसीसी पाठ्यक्रम का पालन करते हैं, इसके साथ ही धार्मिक क्लासेस भी लेते हैं। हालांकि आंतरिक मंत्रालय के स्थानीय कार्यालय का कहना है कि एवरोज स्कूल प्रशासनिक और वित्तीय कमियों से जूझ रहा था। स्कूल में पढ़ाई भी फ्रांसीसी रिपब्लिकन मूल्यों के मुताबिक नहीं हो रही थी। वहीं कार्यालय ने अनुबंध खत्म करने के बारे में ज्यादा जानकारी देने से इनकार कर दिया।

खेलो इंडिया पैरा गेम्स : प्रधानमंत्री मोदी ने एथलीटों को शुभकामनाएं दीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को पहले खेलो इंडिया पैरा खेलों में भाग लेने वाले सभी एथलीटों को शुभकामनाएं दीं और इस अवसर को ''समावेश और सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम'' बताया। मोदी ने 'एक्स' पर कहा, ''पहले खेलो इंडिया पैरा खेल शुरू होने पर, भाग लेने वाले सभी एथलीटों को मेरी शुभकामनाएं। यह समावेश और सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।''

खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि भारत 2030 में होने वाले एशियाई पैरा खेलों में 200 पदक जीतने का लक्ष्य बना सकता है जो हाल में चीन में खेले गए खेलों से लगभग दोगुना होगा। भारत ने हांगझोउ पैरा एशियाई खेलों में 29 स्वर्ण पदक सहित 111 पदक जीते थे। अगले एशियाई पैरा खेल 2026 में जापान के आइची नागोया में खेले जाएंगे।

ठाकुर ने पहले खेलो इंडिया पैरा खेलों के उद्घाटन के अवसर पर कहा, ''अगर हम 2022 के एशियाई पैरा खेलों में 111 पदक जीत सकते हैं तो हम 2030 के एशियाई पैरा खेलों में 200 पदक के लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।'' उन्होंने कहा,''पहले खेलो इंडिया पैरा खेल देश के खेल पारिस्थितिकी तंत्र में नए आंदोलन की शुरुआत कर रहा है। यह सभी खिलाड़ियों को समान अवसर देने की दिशा में एक नया कदम है।''

खेलो इंडिया पैरा खेलों में 32 राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और सेना खेल बोर्ड के 1400 से अधिक खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। इन खेलों का आयोजन 10 से 17 दिसंबर के बीच तीन स्थलों, इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम और कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में किया जाएगा। खिलाड़ी सात खेल एथलेटिक्स, निशानेबाजी, तीरंदाजी, फुटबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस और भारोत्तोलन में 276 स्वर्ण पदक के लिए अपना भाग्य आजमाएंगे। इन खेलों में शीतल देवी, भावना पटेल और प्रमोद भगत जैसे अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भी भाग ले रहे हैं। इन खेलों में भाग ले रहे खिलाड़ियों के लिए नरेंद्र मोदी ने भी विशेष संदेश भेजा था।

अश्विनी और तनीषा की जोड़ी

बीडब्ल्यूएफ रैंकिंग में 24वें स्थान पर

दुबई (एजेंसी)। पिछले दो सप्ताह से शानदार प्रदर्शन कर रही भारतीय महिला बैडमिंटन युगल टीम अश्विनी पोनप्पा और तनीषा क्रास्टो ताजा बीडब्ल्यूएफ रैंकिंग में चार पायदान चढकर 24वें स्थान पर पहुंच गई। 34 वर्ष की अश्विनी और 20 वर्ष की तनीषा ने इस साल जनवरी में साथ खेलना शुरू किया था।

दोनों ने रविवार को गुवाहाटी मास्टर्स में चीनी ताइपै की सुंग शुओ युन और यू चियेन हुइ को सीधे गेम में हराकर दूसरा सुपर 100 खिताब और तीसरा महिला युगल खिताब जीता। दोनों लखनऊ में सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय सुपर 300 टूर्नामेंट में उपविजेता रही थी। अब उनके 16 टूर्नामेंटों में 44590 अंक हैं। भारत की ही गायत्री गोपीचंद और त्रिसा जॉली 19 टूर्नामेंटों में 49435 अंक के साथ 19वें स्थान पर है।

लक्ष्य सेन पिछले दो सप्ताह से नहीं खेलने के बावजूद एक पायदान चढकर 17वें स्थान पर हैं। एशियाई खेलों के चैम्पियन सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी दूसरे नंबर पर हैं। एच एस प्रणय एकल रैंकिंग में आठवें और पी वी सिंधू 12वें स्थान पर हैं जबकि किदाम्बी श्रीकांत 24वें स्थान पर हैं।

गौतम गंभीर ने माना, रोहित भारत के लिए बेहतर कप्तान, टीम को उनकी जरुरत

-श्रीसंत विवाद पर कुछ नहीं कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम ने वनडे वर्ल्ड कप 2023 में धमाकेदार प्रदर्शन किया था। रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम ने शुरुआती सभी 10 मैच जीते थे, लेकिन फाइनल मुकाबले में पैट कमिंस की कप्तानी वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम ने भारत को 6 विकेट से हराकर खिताब जीत लिया था।अब भारतीय टीम साउथ अफ्रीका दौरे पर तीन टी20, 3 वनडे और दो टेस्ट मैचों की सीरीज खेल रही है। इसके लिए टी20 में सूर्या और वनडे में केएल राहुल को कप्तानी सौंपी है। जबकि टेस्ट में रोहित ही कमान संभाल रहे हैं। अगले साल जून 2024 में टीम को टी20 वर्ल्ड कप भी खेलना है। इसके बाद फिर रोहित को कप्तानी सौंपने की मांग उठने लगी है।

फैंस सहित कई दिग्गजों ने इसकी पैरवी की है। इस बीच पूर्व भारतीय क्रिकेटर गौतम गंभीर ने भी इस लेकर अहम बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि यदि रोहित अच्छे फॉर्म में हैं और शानदार बल्लेबाजी कर रहे हैं, तब मेरा मानना है कि उन्हें कप्तानी सौंप देनी जानी चाहिए। गौतम गंभीर ने कहा, कप्तानी कोई बड़ी बात नहीं है। मुझे नहीं लगता कि रोहित बुरा कप्तान है। आपने वर्ल्ड कप में दबदबा बनाए रखा था। सिर्फ एक खराब मैच के कारण आप उस बुरा कप्तान नहीं कहा जा सकता हैं। मेरा मानना है कि उन्हें कप्तानी सौंपी जानी चाहिए। गंभीर ने कहा, कप्तानी जरूरी नहीं है, लेकिन टीम जरूरी है।

आपको टीम में अच्छा प्रदर्शन करने वाले प्लेयर को चुनना होगा, चाहे वहां रोहित, हार्दिक या सूर्या जो भी अच्छा प्रदर्शन कर रहा हो,उस कप्तान होना चाहिए। टी20 में कप्तानी नहीं फॉर्म काफी अहम है। श्रीसंत के सवाल के जवाब में गंभीर ने कहा, मामले में कुछ कहने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। मैं यहां अच्छे काम के लिए आया हूं।

अंडर19 एशिया कप

भारत ने नेपाल को 10 विकेट से रौंदा, राज लिंबानी ने झटके 7 विकेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंडर19 एशिया कप के अपने दूसरे मैच में भारतीय क्रिकेट टीम का सामना नेपाल से हुआ। जहां भारत ने नेपाल को 10 विकेट से मात दे दी है। बता दें कि, इस मुकाबले में भारत ने पहले टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया। जिसके बाद भारत के गेंदबाजों के सामने नेपाल के बल्लेबाजों ने घुटने टेक दिए। जिसके बाद मात्र 52 रन पर पूरी टीम ऑल-आउट हो गई। वहीं भारतीय टीम की तरफ से 7.1 ओवर में ही बिना किसी नुकसान के लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लिया गया। भारत की ओर से राज लिंबानी ने 7 विकेट झटके।

53 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारतीय टीम के सलामी बल्लेबाजों ने दमदार प्रदर्शन किया। भारतीय टीम ने 257 गेंद शेष रहते ये मुकाबला अपने नाम किया। अर्शिन कुलकर्णी ने 30 गेंद में 43 रन बनाए। आदर्श ने 13 गेंद में 13 रन बनाए।

इससे पहले भारत ने इस मैच में टॉस जीतकर बॉलिंग करने का फैसला लिया है। राज लिम्बनी की

कहर बरपाती गेंदबाजी के दम पर भारत ने नेपाल को मात्र 52 रनों पर समेट दिया। राज ने 9.1 ओवर में 13 रन खर्च कर 7 विकेट चटकाए, वहीं उनके अलावा आराध्य को दो और अर्शिन को एक विकेट मिला। हैरानी वाली बात यह रही कि नेपाल का एक भी बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा नहीं छू पाया।

वनडे टीम में चहल की हुई वापसी संजय मांजरेकर ने जताई हैरानी

नई दिल्ली । स्टार लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल की दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ श्रृंखला में खेलने के लिए वापसी हो गई है। हालां?कि उनके टी20आई श्रृंखला में शामिल होने की उम्मीद थी, लेकिन सभी को आश्चर्य हुआ क्योंकि 33 वर्षीय खिलाड़ी वनडे सेट-अप में वापस आ गए हैं। इससे उन्हें अच्छा प्रदर्शन करने और आगामी टी20 विश्व कप के लिए योजना में शामिल होने का अवसर भी मिलता है। इस संबन्ध में बोलते हुए पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने बताया कि वह चहल को टी20आई गेंदबाज मानते हैं और उनसे वनडे प्रारूप में खेलने की उम्मीद नहीं कर रहे थे। संजय मांजरेकर ने कहा ?कि मुझे यह पसंद है। फिर से यह कार्यभार प्रबंधन है, लेकिन मैं इस तथ्य से उत्साहित हूं कि दीपक चाहर वापस आ गए हैं क्योंकि मैं उन्हें एक क्रिकेटर के रूप में खूब पसंद करता हूं। मांजरेकर ने कहा ?कि आवेश खान को एक और मौका मिला है। मेरा मानना है कि मुकेश कुमार एक मजबूत और भरोसेमंद गेंदबाज हैं, वह आ गए हैं। चहल एक आश्चर्यजनक समावेश है। मैंने सोचा था कि टी20 क्रिकेट के लिए चहल आपके लिए अधिक उपयुक्त गेंदबाज हैं, लेकिन वहां उन्हें बिश्नोई जैसा कोई मिल गया है।

दिल्ली कैपिटल्स ने आईपीएल 2024 के लिए ऋषभ पंत को बनाया कप्तान

नई दिल्ली । दिल्ली कैपिटल्स ने आईपीएल 2024 के लिए ऋषभ पंत को कप्तान बनाया है। मिली जानकारी के अनुसार इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के आगामी सीजन के लिए ऋषभ पंत एक बार फिर से दिल्ली कैपिटल्स की कप्तानी करते हुए नजर आएंगे। हालांकि पहले खबर थी कि ऋषभ पंत को इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर इस्तेमाल किया जाएगा लेकिन जल्द ही पंत बतौर कप्तान वापसी कर रहे हैं। अगर मैच के दौरान जरूरत पड़ी तो उनके लिए इंपेक्ट प्लेयर का नियम इस्तेमाल किया जाएगा। गौरतलब है कि पिछले साल दिल्ली से रूड़की जाते समय पंत एक गंभीर कार दुर्घटना का शिकार हो गए थे और 2023 विश्व कप में हिस्सा नहीं ले पाए। हालांकि वह अपने स्वास्थ्य की रिकवरी में कर रहे हैं और पूरी फिटनेस हासिल करने की को?शिश में हैं। इम्पैक्ट प्लेयर नियम के अनुसार मैच के दौरान कोई भी फ्रेंचाइजी टॉस के दौरान शुरुआती एकादश के साथ नामित पांच स्थानापन्न खिलाड़ियों में से किसी एक को अंतिम एकादश में शामिल कर सकती है। दिल्ली कैपिटल्स ने आईपीएल 2024 रिटेंशन डे पर ऋषभ पंत, डेविड वार्नर, पृथ्वी शॉ, अक्षर पटेल और मिशेल मार्श को रिटेन किया है। फ्रेंचाइजी ने रोवमैन पॉवेल, सरफराज खान और मुस्तफिजुर रहमान समेत 11 खिलाड़ियों को रिलीज कर दिया है।

2019 के बाद पुरूष क्रिकेट से अधिक हुई महिला क्रिकेट की प्रगति : गांगुली

नई दिल्ली । भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कहा है कि भारत में महिला क्रिकेट ने 2019 के बाद से पुरूष क्रिकेट की तुलना में अधिक प्रगति की है। गांगुली ने कहा कि भारत में 2019 के बाद से महिला क्रिकेट ने काफी प्रगति की है, पुरूष क्रिकेट से भी अधिक प्रगति हुई है। पुरूष क्रिकेट हमेशा से अच्छी स्थिति में था। उन्होंने कहा कि महिला क्रिकेट ने जहां से यहां तक का सफर तय किया है, वह काबिले तारीफ है। एशिया कप जीतना, विश्व कप में प्रदर्शन और राष्ट्रमंडल खेल में उपविजेता रहना। उन्होंने कहा कि हरमनप्रीत, स्मृति, रिचा, जेमिमा, शेफाली, सभी की प्रगति प्रभावी रही है। सौरभ गांगुली ने कहा कि जब झूलन गोस्वामी ने संन्यास लिया तो लगा कि अगली तेज गेंदबाज कहां से आएगी लेकिन पिछले तीन साल में रेणुका ठाकुर आई। महिला क्रिकेट के लिये यह बहुत अच्छी बात रही। दिल्ली कैपिटल्स के क्रिकेट निदेशक सौरव गांगुली ने कहा कि हाल ही में महिला प्रीमियर लीग की नीलामी के दौरान भारत की प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को टीमों द्वारा चुने जाने से उन्हें काफी अच्छा लगा है।

एशियाई चैम्पियनशिप में नहीं खेल पाएंगी मीराबाई चानू, एशियाई खेलों के दौरान लगी थी चोट

नई दिल्ली (एजेंसी)। चोटिल मीराबाई चानू की वापसी में और विलंब होगा क्योंकि ओलंपिक रजत पदक विजेता यह भारोत्तालक अगले साल फरवरी में होने वाली एशियाई चैम्पियनशिप में नहीं खेल पाएंगी। पूर्व विश्व चैम्पियन चानू अब भी अक्टूबर में एशियाई खेलों के दौरान लगी 'हिप टेंडिनाईटिस' चोट से उबर रही हैं। 49 किग्रा वजन वर्ग में हिस्सा लेने वाली चानू ने आईडब्ल्यूएफ ग्रां प्री दो में भी कोई वजन नहीं उठाया।

उम्मीद थी कि वह उज्बेकिस्तान के ताशकंद में तीन से 10 फरवरी तक होने वाली एशियाई चैम्पियनशिप तक फिट हो जाएंगी। लेकिन चानू ने कहा, 'मैं इस बार एशियाई चैम्पियनशिप में हिस्सा नहीं लूंगी। बल्कि मैं विश्व कप में शिरकत करूंगी।' पेरिस ओलंपिक क्वालीफिकेशन नियमों के अनुसार एक भारोत्तोलक को 2023 विश्व चैम्पियनशिप और 2024 विश्व कप (थाईलैंड के फुकेट में 31 मार्च से

11 अप्रैल तक) में हिस्सा लेना अनिवार्य है। इन दोनों टूर्नामेंट के अलावा एक भारोत्तोलक को 2022 विश्व चैम्पियनशिप, 2023 और 2024 महाद्वीपीय चैम्पियनशिप, 2023 ग्रां प्री एक और 2023 ग्रां प्री दो में से किसी तीन में हिस्सा लेना जरूरी है। पटियाला में 'रिहैबिलिटेशन' प्रक्रिया से गुजर रही चानू की योजना फरवरी में अमेरिका जाकर डाक्टर आरोन होर्शिंग के साथ काम करने की भी है जिनसे वह 2020 से सलाह ले रही हैं। चानू ने कहा, 'चोट के कारण मैंने विदेश की यात्रा नहीं की। लेकिन उम्मीद है कि फरवरी में अपने फिजियोथेरेपिस्ट के पास मांसपेशियों की मजबूती और कुछ 'हाई परफोरमेंस' ट्रेनिंग के लिए अमेरिका की यात्रा करूं।'

उन्होंने कहा, 'वह मेरी काफी मदद करते हैं जिससे मेरा प्रदर्शन बेहतर भी होता है। विदेशी कोच की जरूरत नहीं है। एक अच्छा फिजियोथेरेपिस्ट आपको अच्छी ट्रेनिंग में मदद कर सकता है। 'एशियाई चैम्पियनशिप में नहीं खेलने से चानू की क्वालीफिकेशन पर कोई असर नहीं पड़ेगा। वह इस समय ओलंपिक क्वालीफिकेशन रैंकिंग में दूसरे स्थान पर हैं। उन्होंने कहा, 'मैं अब भी पटियाला में ही रिहैबिलिटेशन कर रही हूं। लेकिन मैं इस बार अपने पदक का रंग बदलने के लिए सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश रही हूं।'

सउदी अरब में दो मैच खेलेगी इंटर मियामी, एक फरवरी को मेस्सी और रोनाल्डो की टक्कर

फोर्ट लॉडरडेल (अमेरिका)। दुनिया भर के फुटबाल प्रेमियों को जिस मुकाबले का इंतजार था, वह एक फरवरी को सउदी अरब में होगा जब लियोनेल मेस्सी और क्रिस्टियानो रोनाल्डो की टीमें आमने-सामने होंगी। मेस्सी की टीम इंटर मियामी ने सोमवार को पुष्टि की कि वह सउदी अरब में रियाद सीजन कप खेलेगी। उसका सामना अल हिलाल से 29 जनवरी को और रोनाल्डो की टीम अल नासर से एक फरवरी को होगा। सउदी प्रो लीग में ये दोनों क्लब शीर्ष पर हैं और रोनाल्डो लीग में सर्वाधिक गोल कर चुके हैं। इंटर मियामी के खेल निदेशक क्रिस हेंडरसन ने कहा, 'इन मैचों से हमें नये सत्र की तैयारी में मदद मिलेगी । अल हिलाल और अल नासर जैसी मजबूत टीमों के खिलाफ हमें खुद को आजमाने का मौका मिलेगा।' मेस्सी और रोनाल्डो क्लब और अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में 35 बार आमने सामने रहे हैं जिनमें से मेस्सी की टीम ने 16 और रोनाल्डो की टीम ने 10 मैच जीते हैं जबकि नौ मैच ड्रॉ रहे। इन मैचों में मेस्सी ने 21 गोल किए और 12 में सहायक रहे जबकि रोनाल्डो ने 20 गोल किए और एक में सहायक रहे। मेस्सी ने मई में सउदी अरब पर्यटन के प्रचार के लिए एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया था जिसकी वजह से उनकी पूर्व टीम पेरिस सेंट जर्मेन ने उन्हें निलंबित कर दिया था। मेस्सी और रोनाल्डो क्रमशः बार्सीलोना और रीयाल मैड्रिड के लिये भी कई बार एक दूसरे के खिलाफ खेल चुके हैं।

रिंकू सिंह से युवी बनने की उम्मीद कर रहे पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के महान पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर का मानना है कि रिंकू के अपनी क्षमताओं पर विश्वास ने उन्हें बाकियों से अलग दिखने में मदद की है। अगस्त में आयरलैंड के खिलाफ पदार्पण के बाद से युवा बल्लेबाज ने टी20आई में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। इंडियन प्रीमियर लीग के दौरान अंतिम ओवर में लगातार पांच छक्के लगाने के बाद रिंकू ने सुर्खियां बटोरी जिससे कोलकाता नाइट राइडर्स ने अहमदाबाद में गुजरात टाइटंस के खिलाफ यादगार जीत दर्ज की। भारत के महान पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने कहा कि रिंकू के अपनी क्षमताओं पर विश्वास ने उन्हें बाकियों से अलग दिखने में मदद की है।

गावस्कर ने कहा, पिछले 2-3 साल, फिर यहां

आईपीएल में, जब उन्हें आखिरकार मौका मिला तब वह कई टीमों से अंदर-बाहर होते रहे और जिस तरह से उन्होंने इस भुनाया (वह अद्भुत था)। रिंकू ने छह टी20 पारियां खेलकर 60 की औसत और 187.50 की स्ट्राइक रेट से 180 रन बनाए हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज के दौरान वह भारत के लिए अहम खिलाड़ी साबित होने वाले हैं। गावस्कर ने उल्लेख किया कि भारतीय प्रशंसक दक्षिणपूर्वी की क्षमताओं की तुलना युवराज सिंह से कर रहे हैं, जो सफेद गेंद वाले क्रिकेट में भारत के महानतम मैच विजेताओं में से एक हैं। भारत के पूर्व कप्तान ने कहा कि युवराज ने देश के लिए जो किया अगर रिंकू उसका एक अंश भी अनुकरण कर सके, तब यह एक अभूतपूर्व उपलब्धि होगी। गावस्कर ने कहा, और अब वह भारत की टीम का हिस्सा है। अब उनसे बहुत सारी उम्मीदें हैं। वे अब उनसे दूसरे युवराज सिंह बनने की उम्मीद कर रहे हैं। गावस्कर ने कहा, इसलिए युवराज ने भारतीय क्रिकेट के लिए जो किया अगर आप उसका एक अंश भी कर सकते हैं, तब उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया होगा।

Birthday Special: युवराज सिंह ने किया खुलासा, क्यों नहीं बन पाए कभी कप्तान?

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम के दिग्गज खिलाड़ी रह चुके युवराज सिंह आज अपना 42वां जन्मदिन मना रहे हैं। युवी की गिनती दुनिया के बेहतरीन ऑलराउंडर्स में होती है। वही 2 वर्ल्ड कप चैंपियन टीम का हिस्सा रह चुके हैं। भारतीय क्रिकेट इतिहास में युवराज सिंह का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा। उन्होंने कई बार टीम के लिए बेहतरीन पारियां खेली हैं। बता दें कि, युवराज टीम इंडिया में कप्तानी के दावेदार थे लेकिन उनका ये सपना महज सपना बनकर ही रह गया। इसका खुलासा उन्होंने खुद किया कि आखिर वो क्यों कभी कप्तान नहीं बन पाए।

2011 वनडे वर्ल्ड कप और 2007 टी20 वर्ल्ड कप चैंपियन टीम का हिस्सा रहे युवराज सिंह जैसा सीनियर खिलाड़ी टीम में होने के बावजूद एमएस धोनी को कप्तानी सौंपी गई थी। उस टीम में सचिन तेंदुलकर, वीवीएस लक्ष्मण, राहुल द्रविड़, सौरव गांगुली और वीरेंद्र सहवाग जैसे सीनियर खिलाड़ी मौजूद थे। युवी ने स्पोर्ट्स 18 चैनल पर संजय मांजरेकर के साथ बातचीत में कहा कि, आखिर क्यों धोनी को तब कप्तानी दी गई और उन्हें क्यों नहीं मिली। युवी ने बताया कि सचिन तेंदुलकर और ग्रेग चैपल के कारण उन्हें टीम इंडिया की कप्तानी नहीं मिली।

मुझे अपने साथियों संग खड़ा रहने की सजा मिली

बता दें कि, युवराज ने कहा कि, मुझे अपने साथियों संग खड़ा रहने की सजा मिली। बोर्ड के कई अधिकारियों ने भी मुझे तवज्जों नहीं दी। मुझे लगता है कि मैं जिसके लिए खड़ा था, वह स्टैंड मेरा साफ था। अगर फिर मुझे ऐसा करना पड़े तो मैं करुंगा, खड़ा रहूंगा, मुझे अपने फैसले पर कोई पछतावा नहीं है।

युवी ने इस इंटरव्यू में खुलासा किया है कि उनका सपना कप्तान बनने का था लेकिन वह पूरा नहीं हो सका। संजय मांजरेकर ने जब युवी से पूछा कि क्या आपकी इच्छा नहीं थी कि आप कप्तान बने?

मेरा भी सपना कप्तान बनने का था

इस पर युवी ने कहा कि मेरा भी सपना कप्तान बनने का था। मुझे लगता था कि मैं भी कप्तान बनूंगा, लेकिन जब ग्रेग चैपल विवाद हुआ, तब मेरे पास 2 विकल्प थे। पहला ये कि मैं ग्रेग चैपल का साथ दूं या दूसरा अपने साथियों के साथ खड़ा रहूं। इस दौरान मैंने अपने साथियों के साथ खड़ा रहना मुनासिब समझा। भारतीय बोर्ड के कई अधिकारियों को मेरा ये फैसला अच्छा नहीं लगा।

युवराज ने आगे कहा कि इसके बाद उनसे अचानक उप कप्तानी छीन ली गई। युवी ने बताया कि उस समय वीरेंद्र सहवाग टीम में नहीं थे और माही को 2007 टी20 वर्ल्ड कप में कप्तान बना दिया। मुझे ऐसा लगता हैकि उस वक्त जो फैसला मैंने लिया वह मेरे खिलाफ गया। युवी ने कहा कि वीरेंद्र सहवाग सीनियर थे लेकिन वह इंग्लैंड दौरे पर नहीं थे। जब राहुल द्रविड़ वनडे के कप्तान थे तब मैं उप कप्तान था। तब मैं कप्तानी मिलने की उम्मीदें पालने लगा था। लेकिन मैं फिर कहूंगा कि मुझे उस फैसले पर कोई पछतावा नहीं है।

केट क्रॉस के आने से आरसीबी की गेंदबाजी में आएगी धार : स्मृति मंधाना

मुंबई । रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की कप्तान स्मृति मंधाना ने उम्मीद जाहिर कि इंग्लैंड की अनुभवी तेज गेंदबाज केट क्रॉस के टीम में आने से महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 2024 के दूसरे सत्र में गेंदबाजी में पैनापन आएगा और वह खासकर पावरप्ले में रेणुका सिंह की मदद करने में सफल रहेंगी। रॉयल चैलेंजर्स ने नीलामी में क्रॉस को 30 लाख रुपये में खरीदा।

32 साल की खिलाड़ी को फ्रेंचाइजी क्रिकेट का अच्छा अनुभव है। वह ब्रिस्बेन हीट और मैनचेस्टर ओरिजनल्स जैसी टीमों का प्रतिनिधित्व कर चुकी है। मंधाना ने कहा, 'हमारे पास अब केट क्रॉस है। मुझे लगता है कि वह पावरप्ले में (तेज गेंदबाज) रेणुका को अच्छी तरह से मदद करेगी। इस नीलामी में आरसीबी का ध्यान विशेषज्ञ बल्लेबाजों की तुलना में अधिक गेंदबाजों और हरफनमौला खिलाड़ियों को टीम में शामिल करने पर था। मंधाना ने कहा कि टीम ने इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर नीलामी में भाग लिया था। आरसीबी ने क्रॉस के अलावा एकता बिष्ट (बाएं हाथ की स्पिनर), जॉर्जिया वेयरहैम (लेग स्पिनर), सब्बिनेनी मेघना (हरफनमौला), सिमरन बहादुर (मध्यम तेज गेंदबाज), सोफी मोलिनेक्स (बाएं हाथ की स्पिनर) और शुभा सतीश (हरफनमौला) को टीम में शामिल किया। मंधाना ने कहा, मोलिनेक्स और वेयरहैम की मौजूदगी से गेंदबाजी बहुत अनुभवी दिखती है। हमारे पास श्रेयंका, सोफी डिवाइन और एलिसे पेरी जैसे खिलाड़ी भी हैं। डब्ल्यूपीएल के शुरुआती सत्र में आरसीबी का प्रदर्शन खराब रहा और वह पांच टीमों की लीग में चौथे स्थान पर रही।

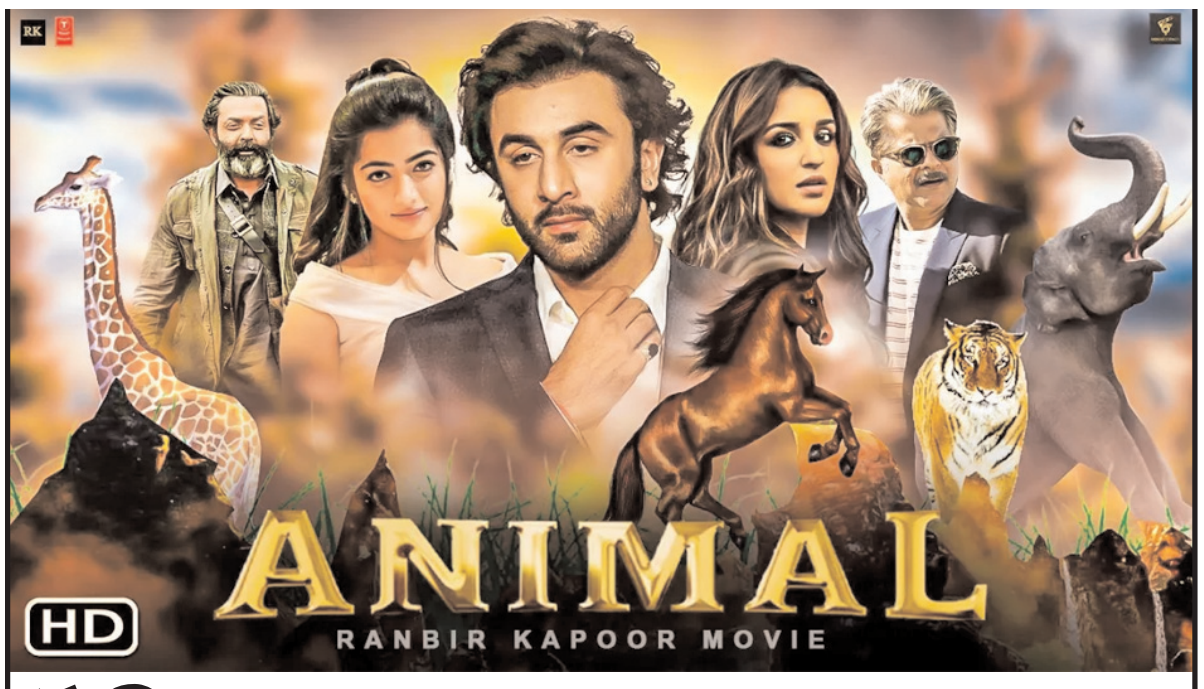

वैश्विक स्तर पर 650 करोड़ के पार हुई एनिमल

रणबीर कपूर की एनिमल घरेलू बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त कारोबार कर रही है। प्रदर्शन के 9 दिनों में इस फिल्म ने 413 करोड़ की भारी कमाई अपने खाते में जोड़ ली है। उम्मीद की जा रही है कि यह फिल्म आगामी सप्ताह बॉक्स ऑफिस पर 500 करोड़ के आंकड़ें को छूने में सफल हो जाएगी। इस सप्ताह भी उसके सामने कोई बड़ी फिल्म नहीं है। 21 दिसम्बर को सालार और डंकी जरूर सफलता के हवाई घोड़े पर सवार एनिमल को रोकने में सफल होंगी। देश में नहीं बल्कि विदेशों में भी एनिमल का डंका बज रहा है। रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल की रिलीज को एक हफ्ते से ज्यादा हो चुका है. अब मूवी ने 650 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर लिया है। बहुत जल्द ये 700 करोड़ क्लब में शामिल हो जाएगी। लेटेस्ट जानकारी के मुताबिक, 9 दिनों में रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल ने दुनियाभर में 660.89 करोड़ रुपये का शानदार बिजनेस कर लिया है।

500 करोड़ क्लब की ओर बढ़ी रणबीर कपूर की फिल्म

घरेलू बॉक्स ऑफिस पर भी एनिमल छप्परफाड़ कमाई कर रही है। सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार, एनिमल भारत में 413.38 करोड़ रुपये की कमाई कर चुकी है। 9वें दिन एनिमल ने जवान और गदर 2 को बॉक्स ऑफिस पर धूल चटा दी है और दूसरे शनिवार को सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई है। ट्रेड पंडितों का मानना है कि रणबीर कपूर की एनिमल बहुत जल्द 500 के आंकड़े को छू लेगी।

एनिमल में विलेन बनकर छा गए बॉबी देओल रणबीर कपूर की एनिमल में बॉबी देओल खलनायक की भूमिका निभाकर छा गए हैं। हर तरफ उनकी एक्टिंग की तारीफ हो रही है। वहीं, रश्मिका मंदाना, अनिल कपूर और तृप्ति डिमरी ने भी एनिमल में अहम भूमिका निभाई है. फिल्म का निर्देशन संदीप रेड्डी वांगा ने किया है, जिन्होंने इससे पहले ब्लॉकबस्टर कबीर सिंह फिल्म बनाई थी।

राम गोपाल वर्मा ने रणबीर कपूर की 'एनिमल' की तारीफ में पढ़े कसीदे

सिनेमा घरों में साल 2023 में फिल्मों का जबरदस्त परफॉर्मेंस देखने को मिला। जहां शुरुआत शाहरुख खान, दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम की फिल्म 'पठान' से हुई तो वहीं अंत भी लगता है शाहरुख खान की 'डंकी' से ही होगा, जिसे रिलीज से पहले ही ब्लॉकबस्टर कहा जा रहा है। इसके अलावा बॉलीवुड एक्टर रणबीर कपूर और बॉबी देओल स्टारर फिल्म 'एनिमल' इन दिनों चर्चा में बनी हुई है। फिल्म की कहानी दर्शकों को खूब पसंद आ रही है। बॉक्स ऑफिस पर फिल्म शानदार प्रदर्शन कर रही है। फिल्म 600 करोड़ कल्ब में शामिल हो गई है। फिल्म को लेकर बना बज कम होने का नाम ही नहीं ले रहा। फैंस के बीच फिल्म का क्रेज बढ़ता ही जा रहा है। इसी बीच जाने-माने फिल्म डायरेक्टर राम गोपाल वर्मा ने 'एनिमल' की जमकर तारीफ की है। उन्होंने कहा कि एक्टिंग स्कूल में सिखाया जाना चाहिए कि ऐसी फिल्में कैसे बनाएं।

इंटरनेट सनसनी बना बॉबी देओल का एंट्री सीन

रणवीर कपूर और बॉबी देओल की फिल्म एनिमल बॉक्स ऑफिस पर दमदार कलेक्शन कर रही है। इस फिल्म में बॉबी देओल की एक्टिंग ने सबको चौका कर रख दिया है। बॉबी देओल का एंट्री सॉन्ग जमाल कूदू सोशल मीडिया पर लोगों को अपना दीवाना बना रहा है। फिल्म एनिमल में बॉबी देओल का महत्वपूर्ण भूमिका है। उनका स्क्रीन टाइम बहुत कम है, लेकिन उन्हें लोगों से ढेर सारा प्यार मिल रहा है। फिल्म में बॉबी देओल का एंट्री सॉन्ग भी सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। बॉबी देओल का एंट्री सीन उनकी तीसरी शादी के मौके पर होता है, जहां वे धूमधाम से नृत्य करते हैं। वीडियो में गाने के साथ दिखाया जाता है कि बॉबी अपने स्वैग के साथ गिलास सिर पर रखकर डांस करते हैं। 1993 में, फिल्म तिरंगा रिलीज हुई थी, जिसमें नाना पाटेकर और राजकुमार मेन रोल में थे। इस फिल्म के साथ ही, इसके गाने भी बहुत लोकप्रिय हुए थे और इसमें से एक गाना पीले पीले ओ मेरे राजा में नाना पाटेकर ने अपने सिर पर गिलास रखकर एक दमदार डांस किया था। इस गाने का एक छोटा सा क्लिप सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। बॉक्स ऑफिस में फिल्म एनिमल की धूम देखी जा रही है। पहले दिन फिल्म ने 63.8 करोड़ रुपये का ओपनिंग कलेक्शन किया और 9 दिनों में इसका कुल कलेक्शन 398.53 करोड़ रुपये तक पहुंचा। सैकनिल्क के अनुसार, फिल्म ने 9वें दिन में 37 करोड़ रुपये की कमाई की है। इसके परिणामस्वरूप, फिल्म की कुल कमाई अब 398.53 करोड़ रुपये हो गई है। अगर कलेक्शन और बढ़ोतरी होती है, तो आज ही फिल्म 400 करोड़ क्लब में शामिल हो जाएगी।

रणबीर के बाद कार्तिक की हीरोइन बनेंगी तृप्ति!

सारा अली खान के प्रशंसकों के लिए एक बुरी खबर है। बताया जा रहा है कि जिस फिल्म 'भूल भुलैया 3' में उनका नाम फाइनल होने की इन दिनों चर्चा है, उसके लिए उन्हें अभी तक साइन नहीं किया गया है। फिल्म की निर्माता कंपनी टी सीरीज इस फिल्म की हीरोइन के लिए तृप्ति डिमरी के नाम पर भी विचार कर रही है, जिन्होंने फिल्म 'एनिमल' में इसकी हीरोइन रश्मिका मंदाना से भी ज्यादा लाइमलाइट लूट ली है। सैफ अली खान और अमृता सिंह की बेटी सारा अली खान इधर लगातार सुर्खियों में हैं। गोवा में हुए अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह उनकी एक और ओटीटी फिल्म 'ऐ वतन, मेरे वतन' की झलक दिखाई गई। हालांकि इसकी रिलीज डेट अभी घोषित नहीं हुई है। उधर, 'एनिमल' के ब्लॉकबस्टर होते ही इसमें तृप्ति डिमरी वाले किरदार के लिए उनका नाम खारिज किए जाने की खबरें भी सुर्खियां बनी हुई हैं। कहा जा रहा है कि सारा को फिल्म 'भूल भुलैया 3' में कार्तिक आर्यन लेकर आना चाह रहे हैं। और, ये कोशिश इसलिए हो रही है ताकि इस फिल्म में तब्बू के काम करने से इंकार की खबरें किसी तरह ठंडी हो जाएं। सारा अली खान ने फिल्म 'लव आजकल' के दौरान कार्तिक से अपनी मोहब्बत का खुलेआम इजहार किया था।

प्रेम नाम है मेरा...प्रेम चोपड़ा बॉबी फिल्म में नहीं काम करना चाहते थे प्रेम चोपड़ा

'प्रेम नाम है मेरा, प्रेम चोपड़ा', 'मैं वो बला हूं, जो शीशे से पत्थर को तोड़ता हूं' प्रेम चोपड़ा के ये डायलॉग आज भी लोगों की जुबान पर रहते हैं। प्रेम चोपड़ा की गिनती बॉलीवुड के खूंखार विलेन्स में होती है। आज भी अपने विलेन वाले किरदारों के लिए पहचाने जाते हैं। सत्तर और अस्सी के दशक में प्रेम चोपड़ा की खलनायकी ने फिल्मों में अलग ही रंग दिखाया। लगभग 6 दशक के करियर में उन्होंने 340 से अधिक फिल्मों में काम किया। हाल ही में अभिनेता रणबीर कपूर और अनिल कपूर स्टारर फिल्म एनिमल में नजर आए। वहीं हाल ही में एक्टर ने अपने एक इंटरव्यू में बताया है कि वह ब्लॉकबस्टर फिल्म बॉबी में काम नहीं करना चाहते थे। क्योंकि उस फिल्म में निर्देशक ने उन्हें गेस्ट अपीरियंस के लिए ऑफर दिया था।

क्योंकि एक्टर का मानना था कि अगर वह इस फिल्म में कैमियो करेंगे तो फिर उन्हें इसी तरह के ऑफर आएंगे। वहीं राज कपूर भी अपनी जिद पर थे कि वह प्रेम चोपड़ा से ही कैमियो करवाएंगे। हालांकि फिल्म में प्रेम चोपड़ा के सिर्फ एक डायलॉग ने पूरी महफल लूट ली थी।

'बॉबी' में गेस्ट अपीरियंस के लिए तैयार नहीं थे प्रेम चोपड़ा

दरअसल प्रेम चोपड़ा हाल ही में टाइमआउट विद अंकित पॉडकास्ट में पहुंचे थे। जहां उन्होंने बताया कि जब राज कपूर ने उन्हें बॉबी में एक रोल ऑफर किया तो वह शुरू में बहुत एक्साइटेड थे। उन्होंने कहा कि कौन राज कपूर के साथ काम नहीं करना चाहेगा? लेकिन, कहानी में ट्विस्ट तब आया जब राज कपूर ने प्रेम चोपड़ा से कहा कि उनका रोल छोटा होगा। अभिनेता ने कपूर के सामने अपनी झिझक जाहिर की। उस समय, मैं दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, जीतेंद्र और धर्मेंद्र के साथ समान भूमिकाएं कर रहा था। मैंने उनसे कहा कि 'राज जी, अगर मैं आपकी फिल्म में स्पेशल अपीयरेंस करूंगा, तो दूसरे निर्माता जो मुझे नियमित रूप से काम दे रहे हैं, वे कह सकते हैं कि आपने राज कपूर की फिल्म में स्पेशल अपीयरेंस किया है, अब वैसा ही करो', लेकिन कपूर ने ना में कोई जवाब नहीं दिया और उनसे कहा कि तुझे करना है तो करना ही है। मेरे पास कोई ऑप्शन नहीं था। फिल्म की शूटिंग शुरू होने से पहले मैंने स्क्रिप्ट के लिए पूछा, लेकिन उन्हें हमेशा एक ही जवाब मिलता था, बताएंगे बताएंगे। बाद में, जब मैं पुणे में फिल्म के सेट पर पहुंचा, तो मुझे बताया गया कि फिल्म में मेरा एक ही डायलॉग है। प्रेम नाम है मेराज़प्रेम चोपड़ा। मैं इस लाइन को लेकर असमंजस में था। और मैंने अभिनेता प्रेम नाथ से अपनी आशंका व्यक्त की।

एक डायलॉग से किया कमाल

वहीं प्रेम चोपड़ा ने इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में कहा था कि शूटिंग के दौरान, मैं प्रेम नाथ से मिला और उन्हें बताया कि मैं भूमिका से नाखुश हूं। उनकी सलाह थी कि ऐसा करो और राज कपूर पर विश्वास करो। उन्हें यकीन था कि फिल्म बड़ी हिट होगी। उनके प्रोत्साहन से, मैंने इसे अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से किया और संवाद सफल हो गया।

बॉबी के रिलीज़ होने के बाद, लोग फिल्म की मुख्य जोड़ी ऋषि कपूर और डिंपल कपाड़िया को देखकर सिनेमाघरों से बाहर आ गए। लेकिन हर किसी की जुबान पर यही लाइन थी, प्रेम नाम है मेराज़प्रेम चोपड़ा। राज कपूर ने मजाक में चोपड़ा से कहा, आपने केवल एक डायलॉग के साथ पूरी फिल्म को हाईजैक कर लिया।

राज कपूर को लेकर कही यह बात

पॉडकास्ट पर चोपड़ा ने राज कपूर की तारीफ करते हुए कहा कि उन्हें प्रतिभाशाली कहा और उनकी शराब पीने की आदत का भी जिक्र किया। एक्टर ने कहा कि जैसे ही सूरज ढलता था वह शराब पीना शुरू कर देते थे, लेकिन जब वह नशे में होते थे तब भी वह उस फिल्म के बारे में सोचते रहते थे जिसकी वह शूटिंग कर रहे होते थे। जिन लोगों से उन्हें दिक्कत होती थी, वह शराब पीने के बाद उन्हें फोन करते थे। मेरा नाम जोकर के फ्लॉप होने के बाद कपूर का घर और स्टूडियो गिरवी रख दिया गया था।

रोनित रॉय ने कोरोना महामारी के वक्त इस वजह से बेच दी थी अपनी गाड़ियां

टीवी से लेकर फिल्मों और वेब सीरीज का सफर तय कर चुके एक्टर रोनित रॉय ने एक इंटरव्यू में अपने मुश्किल दिनों को याद किया है। उन्होंने बताया है कि कैसे कोरोना महामारी के दौरान उन्हें अपनी कार बेचनी पड़ी थी। क्योंकि वह अपने कर्मचारियों को सैलरी दे रहे थे। उनकी फैमिली का ख्याल रख रहे थे। एक्टर रोनित रॉय, जिन्होंने फिल्मों के साथ-साथ टीवी की दुनिया में भी खूब नाम कमाया है। उनकी खुद की एक सिक्योरिटी एजेंसी भी है। उन्होंने कोविड के मुश्किलभरे दिनों को याद किया है। एक्टर ने बताया कि उन्होंने उस दौरान मुश्किल समय देखा है। उनका बिजनेस ठप पड़ गया था। कोई काम नहीं था। 130 कर्मचारी थे, जिनकी फैमिली की भी जिम्मेदारी उनके कंधों पर थी। रोनित ने खुलासा किया है कि संकट के समय में, जो लोग बिना किसी सेवा के भी पूरी रकम का भुगतान करते रहे, उनमें मेगास्टार अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार और करण जौहर शामिल थे। रोनित रॉय ने अपनी सिक्योरिटी एजेंसी की शुरुआत साल 2000 में आमिर खान के साथ फिल्मलगान के दौरान की थी। एक्टर के मुताबिक, आज फिल्म इंडस्ट्री में वह सभी को सर्विस मुहैया कराते हैं। लेकिन महामारी के दौरान इस कंपनी पर बुरा असर पड़ा था। वह बुरे दौर से गुजरे थे। एक्टर ने लहरें रेट्रो को दिए इंटरव्यू में बताया, उससे पहले के कुछ महीनों में, मैंने ज्यादा काम नहीं किया था। मेरे पास 130 कर्मचारी थे। और उनकी भी फैमिली थी। हमने तय किया कि सभी को सैलरी दी जाए। लेकिन वेतन केवल इतना ही है जो आप दे सकते हैं, और मुझे एहसास हुआ कि घर पर बहुत सारी बेकार चीजें पड़ी थीं।

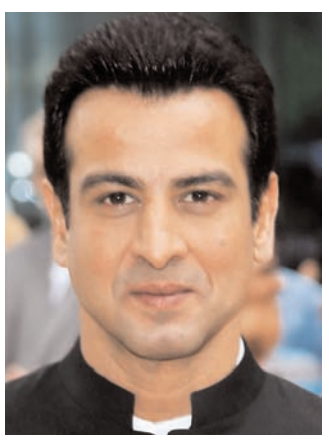

रोनित रॉय की मदद के लिए आए थे ये 3 स्टार

रोनित रॉय ने बताया, कुछ कार थीं, जिनको मैं इस्तेमाल नहीं कर रहा था। मेरे पास एक मिनी कूपर थी, जिसको मैंने कभी ड्राइव नहीं किया इसलिए मैंने उसे जाने दिया। हालांकि कुछ और भी लग्जरी आइटम्स थे, जिन्हें हमने बेचा था और उससे स्टाफ को भुगतान किया था। मैंने किसी को फेवर नहीं किया। ये मेरी जिम्मेदारी थी। रोनित रॉय ने बताया कि अक्षय कुमार, करण जौहर और अमिताभ बच्चन ने भी साथ दिया। उन्होंने बिना सर्विस लिए भी भुगतान किया था। इसलिए थोड़ी बहुत राहत वहां से भी मिल गई थी। 130 में से 30 का ख्याल उन लोगों ने रखा था।

अमिताभ की पोस्ट से हैरान हुए दर्शक व पाठक

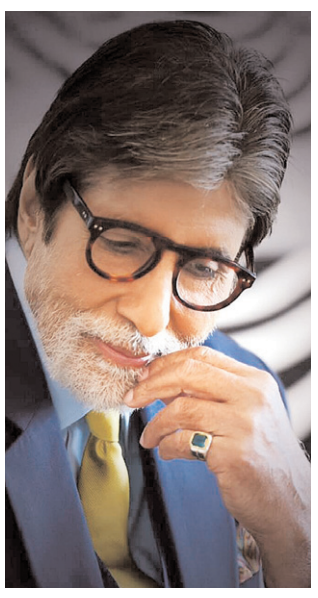

बच्चन परिवार इन दिनों मीडिया की सुर्खियों में है। इसका कारण है अभिषेक बच्चन और उनकी पत्नी ऐश्वर्या राय के मध्य विवाद और तनाव। मीडिया इस परिवार पर तीखी नजर रखता है। इस परिवार में अभी फिल्मों से जुड़े हैं सिवाय बेटी व दामाद के। फैमिली में एक से बढ़कर एक दिग्गज कलाकार हैं। सदी के महानायक अमिताभ बच्चन, उनकी पत्नी जया बच्चन, बेटा अभिषेक बच्चन और बहू ऐश्वर्या रॉय बच्चन ने अपनी एक्टिंग के दम पर नेम-फेम सब कुछ हासिल किया है। फैंस उन पर अथाह प्यार लुटाते हैं। ऐसे में वे उनसे जुड़ी हर गतिविधि पर नजर रखते हैं और कुछ भी हलचल होते ही उन्हें पता चल जाता है। मीडिया भी उन्हें लगातार कवर करता रहता है। इन दिनों बच्चन फैमिली कुछ ज्यादा ही सुर्खियों में है। इसकी वजह कुछ घटनाएं हैं जिनमें ऐश्वर्या के साथ उनकी खटास दिखी। अब अमिताभ ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर कुछ ऐसी पोस्ट डाली है जिससे एक बार फिर अटकलों का बाजार गरम हो गया। अमिताभ ने ट्विटर पर ट्वीट के साथ खुद की एक ब्लैक एंड व्हाइट फोटो भी शेयर की है, जिसमें वे ख्यालों में खोए दिख रहे हैं। ये फोटो 'कौन बनेगा करोड़पति' के सेट की है। फोटो के कैप्शन को लेकर चर्चा शुरू हो गई है, जिसमें इशारों-इशारों में काफी गंभीर बात कही गई है। अमिताभ ने लिखा-सब कहा जा चुका है, सब किया जा चुका है. तो जो करना था किया, जो किया तो किया। कुछ यूजर्स का मानना है कि अमिताभ की ये पोस्ट ऐश्वर्या को लेकर उनकी नाराजगी की ओर संकेत कर रही है। हालांकि नाराजगी की अफवाहों पर बच्चन परिवार के किसी भी सदस्य ने अब तक कोई रिएक्शन नहीं दी है। हाल ही अमिताभ के नाति/दोहिते अगस्त्य की डेब्यू मूवी 'द आर्चीज' के प्रीमियर में पूरी बच्चन फैमिली साथ नजर आई थी। सामने आए वीडियो में साफ पता चल रहा था कि ऐश्वर्या की ननद श्वेता और सास जया उन्हें लगातार इग्नोर कर रही थीं। इवेंट के बाद यह भी कहा जा रहा है कि अमिताभ ने ऐश्वर्या को इंस्टाग्राम पर अनफॉलो कर दिया। अमिताभ कुल 74 लोगों को फॉलो करते हैं।

फाइटर के दमदार टीज़र ने इंटरनेट पर मचाई धूम!

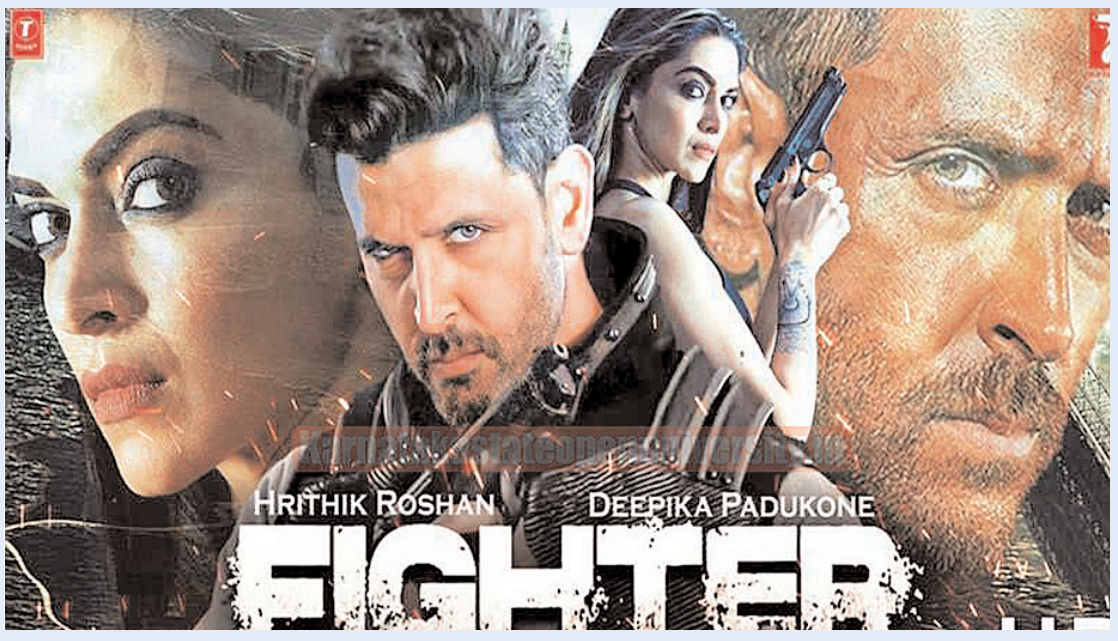

फिल्ममेकर सिद्धार्थ आनंद द्वारा निर्देशित फिल्म फाइटर का जबरदस्त एक्शन और थ्रिल से भरपूर टीजर कल रिलीज के साथ ही तूफान ले आया है। फाइटर की इस झलक ने रितिक रोशन और दीपिका पादुकोण की शानदार ऑनस्क्रीन केमेस्ट्री पेश करते हुए हर किसी को एक्साइट कर दिया है। फिल्म के टीज़र को हर तरफ से ज़बरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है। जी हां, नेटिज़न्स और पूरे देश से टीज़र को खूब प्यार मिला है और हर कोई अब फिल्म की रिलीज़ का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। यूट्यूब पर शाहरुख से लेकर बीजेपी के ऑफिशियल पोर्टल तक ने टीजर को रीशेयर कर इसपर अपना प्यार बरसाया है। फिल्म फाइटर के टीज़र को सभी प्लेटफार्मों पर 74 मिलियन से अधिक बार देखा जा चुका है। कह सकते है फाइटर ने वास्तव में अपना पहला टार्गेट पूरा हासिल कर लिया है। यह यूट्यूब पर म1 पर ट्रेंड कर रहा है। टीज़र ने वाकई फिल्म की रिलीज को लेकर उत्साह कई गुना बढ़ा दिया है। सिद्धार्थ आनंद के निर्देशन में और वायाकॉम18 स्टूडियोज और मार्फ्लिक्स पिक्चर्स के सहयोग से प्रस्तुत फाइटर एक सिनेमाई अनुभव है जो एक्शन स्टोरीटेलिंग में क्रांति लाने के लिए तैयार है। यह फिल्म दिल दहला देने वाले एक्शन सीन्स को देशभक्ति के उत्साह के साथ सहजता से पेश करती है, जो एक ऐसे गहन अनुभव का वादा करती है जो दुनिया भर के दर्शकों को पसंद आएगा। तो फाइटर की उड़ान के लिए अपने कैलेंडर पर 25 जनवरी, 2024, भारत का 75वां गणतंत्र दिवस मार्क करें और फिल्म को एंजॉय करना न भूलें।